आय-कर का अतिरिक्त आयुक्त

क.

गुजरात, अहमदाबाद

वी.

सुराट आर्ट सिल्क क्लॉथ मैन्युफैक्चरर्स एसोसिएशन,

सूरट

19 नवंबर, 1979

↓

[पी. एन. भगवती, एन. एल. अंतवालिया, 'वी. डी. तुलजापुरकर

आर. एस. पाठक और ए. पी. सेन, जे. जे.]

आय-कर अधिनियम 1961-धारा 2 (15), 11 और 13 (1) (बी. बी.)-"सामान्य सार्वजनिक उपयोगिता के किसी अन्य उद्देश्य की उन्नति" का दायरा जिसमें -

एस.

लाभ के लिए किसी भी गतिविधि को जारी रखना।

निर्धारिती जो एक निगमित कंपनी थी, ने विभिन्न कार्यों को अंजाम दिया

कला रेशम धागे, कला रेशम कपड़े और रेशम कपड़े में वाणिज्य और व्यापार को बढ़ावा देने के लिए गतिविधियाँ।इसके अन्य उद्देश्य इसके सदस्यों द्वारा आवश्यक कच्चे माल के आयात के लिए लाइसेंस प्राप्त करना, इसके सदस्यों द्वारा फैक्टर किए गए कपड़े के मैनू के निर्यात के लिए लाइसेंस प्राप्त करना और अन्य सभी वैध काम करना थे जो उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए आनुषंगिक या अनुकूल हों।इसकी आय और संपत्ति का उपयोग केवल इसके उद्देश्यों को बढ़ावा देने के लिए किया जाना था और आय या संपत्ति के किसी भी हिस्से का भुगतान या हस्तांतरण प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से इसके सदस्यों को लाभांश, बोनस या लाभ के रूप में नहीं किया जाना था।इसके समापन या विघटन की स्थिति में, देनदारियों पर परिसंपत्तियों का अधिशेष, यदि कोई हो, सदस्यों के बीच वितरित नहीं किया जा सकता था, लेकिन निर्धारिती के समान उद्देश्यों वाली किसी अन्य कंपनी को दिया या स्थानांतरित किया जा सकता था, जिसे निर्धारिती के सदस्यों या उच्च न्यायालय द्वारा निर्धारित किया जाना था, जिसकी मामले में अधिकारिता है।

..

ना.

ई.

निर्धारिती से वार्षिक अभिदान के माध्यम से प्राप्त आय

सदस्य (राजस्व ने स्वीकार किया कि इस राशि को कर से छूट दी गई थी) और विदेशी धागे के आयात के लिए लाइसेंस के मूल्य के कुछ प्रतिशत के आधार पर कमीशन और स्वदेशी धागे की खरीद के लिए कोटा।द.

च

निर्धारिती ने प्राप्त राशि से एक भवन का निर्माण किया और किरायेदारों से प्राप्त किराया उसकी आय का एक अतिरिक्त स्रोत था।

आयकर अधिनियम की धारा 11 (1) के तहत छूट के लिए निर्धारिती के दावे को आयकर अधिकारी ने इस आधार पर खारिज कर दिया था कि इसके उद्देश्य अधिनियम की धारा 2 (15) के अर्थ के भीतर धर्मार्थ नहीं थे।दूसरी ओर अपीलीय सहायक आयुक्त ने अभिनिर्धारित किया कि निर्धारिती का जी

आय धारा 11 (1) के तहत छूट की हकदार थी क्योंकि निर्धारिती द्वारा की गई गतिविधियाँ प्राथमिक उद्देश्यों की पूर्ति में थीं जो

▶

लाभ के लिए किसी भी गतिविधि को जारी रखना शामिल नहीं था।अपीलीय सहायक आयुक्त के इस विचार की पुष्टि अपीलीय न्यायाधिकरण ने की थी

आई.

राजस्व द्वारा अपील।

1961 के अधिनियम की धारा 2 (15) में धर्मार्थ उद्देश्य की परिभाषा में "लाभ के लिए किसी भी गतिविधि को जारी रखना शामिल नहीं" शब्दों की व्याख्या पर विभिन्न उच्च न्यायालयों के बीच परस्पर विरोधी निर्णयों को ध्यान में रखते हुए अपीलीय न्यायाधिकरण ने अधिनियम की धारा 257 के तहत इस न्यायालय को संदर्भित किया।

}

[1980] 2 एस सी आर।

सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट

78

ए प्रश्न कि क्या निर्धारिती अधिनियम की धारा 11 (1) 3 के तहत छूट का हकदार था।राजस्व की ओर से यह तर्क दिया गया था कि यदि सामान्य सार्वजनिक उपयोगिता के उद्देश्य को प्राप्त करने या पूरा करने के साधनों में लाभ के लिए कोई गतिविधि करना शामिल है, तो न्यास का उद्देश्य, हालांकि "सामान्य सार्वजनिक उपयोगिता के किसी अन्य उद्देश्य" के विवरण के भीतर आता है, एक धर्मार्थ उद्देश्य नहीं होगाःऔर व्यवसाय से होने वाली आय कर से मुक्त नहीं होगी।

अपील को खारिज करते हुए,

हेल्ड (बहुसंख्यक भगवती, उंतवालिया और तुलजापुरकर, जे. जे.)

1. यह तर्क कि निर्धारिती के उद्देश्य "सामान्य सार्वजनिक उपयोगिता के किसी अन्य उद्देश्य की उन्नति" की श्रेणी में नहीं आते हैं और धारा 2 (15) के अर्थ के भीतर धर्मार्थ नहीं थे कि इसके सदस्य केवल निर्दिष्ट व्यक्ति थे जो जनता के एक वर्ग का गठन नहीं करते थे, इस संदर्भ में उठाए जाने की अनुमति नहीं दी जा सकती है।एस के तहत एक संदर्भ में।257 आयकर अधिनियम, 1961 की धारा के अनुसार, न्यायाधिकरण इस न्यायालय को एक ऐसा प्रश्न भेजने के लिए सक्षम नहीं है जिसके संबंध में विभिन्न उच्च न्यायालयों के बीच निर्णयों का कोई टकराव नहीं है और न ही यह न्यायालय उच्च न्यायालयों के निर्णयों में टकराव के कारण न्यायाधिकरण द्वारा उसे निर्दिष्ट कानून के विशेष प्रश्न डी से आगे जा सकता है।[92 ए-बी]

2. (क) यह अच्छी तरह से तय किया गया है कि जहां मुख्य या प्राथमिक उद्देश्य वितरण योग्य हैं, वहां प्रत्येक उद्देश्य धर्मार्थ होना चाहिए ताकि संस्था के विश्वास को एक वैध दान के रूप में बरकरार रखा जा सके।लेकिन अगर किसी न्यास का प्राथमिक या प्रमुख उद्देश्य धर्मार्थ है तो दूसरा उद्देश्य जो अपने आप में धर्मार्थ नहीं हो सकता है, लेकिन जो केवल प्राथमिक या आनुषंगिक के लिए सहायक या आनुषंगिक है।

ई.

प्रमुख उद्देश्य इसे वैध दान होने से नहीं रोकेगा।[92 डी-ई] (बी) जो परीक्षण लागू किया जाना है वह यह है कि क्या वह उद्देश्य जिसे गैर-धर्मार्थ कहा जाता है, वह न्यास या संस्था का मुख्य या प्राथमिक उद्देश्य है या यह उस प्रमुख या प्राथमिक उद्देश्य के लिए सहायक या आनुषंगिक है जो धर्मार्थ है।[92 एफटी

मोहम्मद.इब्राहिम बनाम।आय-कर आयुक्त 57 भारतीय अपील 260; ईस्ट इंडिया इंडस्ट्रीज (मद्रास) लिमिटेड v.आय-कर आयुक्त, 65 आईटीआर 611 = [1967] 3 एससीआर 356; आय-कर आयुक्त, मद्रास बनाम।आंध्र चैंबर ऑफ कॉमर्स, 65 आईटीआर 722 = [1965] 1 एससीआर 365।अंतर्देशीय राजस्व आयुक्त बनाम।यॉर्कशायर एग्रीकल्चरल सोसाइटी [1928] 1 के. बी. 611; 13 कर कैस।58 ; सिविल इंजीनियरों का संस्थान बनाम।अंतर्देशीय राजस्व आयुक्त [1931] 16 कर कैस। 158 (सी. ए.); संदर्भित किया गया।

जी.

तत्काल मामले में निर्धारिती की आय और संपत्ति को एस के अर्थ के भीतर सामान्य सार्वजनिक उपयोगिता के उद्देश्य को आगे बढ़ाने के उद्देश्य से कानूनी दायित्व के तहत रखा जाता है।2 (15) अधिनियम से।निर्धारिती का प्रमुख या प्राथमिक उद्देश्य कला रेशम धागे आदि में वाणिज्य और व्यापार को बढ़ावा देना है, जो धर्मार्थ है और अन्य उद्देश्य निर्धारिती को प्रदान की गई शक्तियों की प्रकृति में हैं ताकि प्रमुख या प्रमुख को पूरा किया जा सके।

एच.

प्राथमिक उद्देश्य।इनसे निर्धारिती के सदस्यों को कोई लाभ नहीं होगा, लेकिन यह लाभ निर्धारिती के मुख्य या प्राथमिक उद्देश्य को पूरा करने में आकस्मिक होगा।यदि इसलिए निर्धारिती का प्रमुख या प्राथमिक उद्देश्य 802-5 है।

दत।

आय आयोग-टैक्स वी. सूरट आर्ट सिल्क 79

सहायक वस्तुएँ अपने धर्मार्थ चरित्र के खिलाफ विद्रोह नहीं करेंगी और निर्धारिती का उद्देश्य किसी भी तरह से कम धर्मार्थ नहीं होगा।[93 ई-जी]

3. यह तय किया गया कानून है कि "सामान्य सार्वजनिक उपयोगिता के किसी अन्य उद्देश्य की प्रगति" शब्द निजी लाभ के उद्देश्यों को बाहर कर देंगे; लेकिन वर्तमान मामले में यह भी संतुष्ट करने की आवश्यकता है क्योंकि निजी + लाभ का उद्देश्य एस के तहत निर्धारिती की मान्यता से समाप्त हो जाता है।25 कम्पनियों बी

अधिनियम, 1956 और इसके संगठन ज्ञापन के खंड 5 और 10 में निर्धारित उद्देश्य।[94 सी-डी]

4. जहां किसी न्यास या संस्थान का उद्देश्य गरीबों को राहत, शिक्षा या चिकित्सा राहत देना है, वहां "धर्मार्थ उद्देश्य" की परिभाषा की आवश्यकता पूरी तरह से पूरी हो जाएगी, भले ही न्यास या संस्थान के प्राथमिक उद्देश्य को वास्तविक रूप से पूरा करने के दौरान लाभ के लिए कोई गतिविधि की जाए।लेकिन यदि न्यास या संस्था का उद्देश्य ऐसा है कि इसे "गरीबों की राहत, शिक्षा और चिकित्सा राहत" के प्रमुखों द्वारा कवर नहीं किया जा सकता है, लेकिन एक धर्मार्थ उद्देश्य होने का उसका दावा केवल अंतिम शीर्ष "सामान्य सार्वजनिक उपयोगिता के किसी अन्य उद्देश्य के अग्रिम" पर निर्भर करता है, तो इसकी प्रयोज्यता के लिए, दो शर्तों की पूर्ति की आवश्यकता होती है, अर्थात्, (i) न्यास या संस्था का उद्देश्य सामान्य सार्वजनिक उपयोगिता के उद्देश्य की उन्नति होनी चाहिए; और (ii) उद्देश्य में लाभ के लिए किसी भी गतिविधि को जारी रखना शामिल नहीं होना चाहिए।[94 जी-एच]

ग

डी.

एम/एस।धरमदीप्ती बनाम।आय-कर आयुक्त, [1978] 3 एस. सी. आर. 1038।संदर्भित किया गया।

5. "लाभ के लिए किसी भी गतिविधि को जारी रखना शामिल नहीं" शब्द केवल धर्मार्थ उद्देश्य के अंतिम प्रमुख को योग्य या नियंत्रित करते हैं, न कि पहले के ई।

तीन सिर।[94 जी]6. शब्दों का अर्थ "किसी भी गतिविधि को जारी रखना शामिल नहीं है"

लाभ के लिए "एस में जोड़ा गया।2 (15) 1961 के अधिनियम में कहा गया है कि जब किसी न्यास या संस्थान का उद्देश्य सामान्य सार्वजनिक उपयोगिता के किसी उद्देश्य को आगे बढ़ाना है तो यह सामान्य सार्वजनिक उपयोगिता का उद्देश्य है न कि इसकी उपलब्धि जिसमें लाभ के लिए किसी भी गतिविधि को जारी रखना शामिल नहीं होना चाहिए।[92 एच]

च

7. यदि राजस्व का यह तर्क कि यदि सामान्य सार्वजनिक उपयोगिता के उद्देश्य को प्राप्त करने के साधनों में लाभ के लिए कोई गतिविधि करना शामिल है, तो न्यास का उद्देश्य हालांकि "सामान्य सार्वजनिक उपयोगिता के किसी अन्य उद्देश्य" के विवरण के भीतर आता है, एक धर्मार्थ उद्देश्य नहीं होगा और व्यवसाय से होने वाली आय को कर से छूट नहीं होगी, यह एक धर्मार्थ न्यास के लिए संभव नहीं होगा, जिसका उद्देश्य सामान्य सार्वजनिक उपयोगिता के उद्देश्य को लाभ के लिए बढ़ावा देना है।[97 एफ-एच]

परिणाम यह होगा कि भले ही ट्रस्ट या संस्था द्वारा सामान्य सार्वजनिक उपयोगिता के किसी उद्देश्य को पूरा करने या पूरा करने के उद्देश्य से कोई व्यवसाय किया जाता है और ऐसे व्यवसाय से होने वाली आय केवल उस उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए लागू होती है, ट्रस्ट का उद्देश्य धर्मार्थ नहीं होगा और न केवल ऐसे व्यवसाय से होने वाली आय बल्कि अन्य उद्देश्यों से प्राप्त आय भी नहीं होगी।

.8

एच.

स्रोत छूट खो देंगे।इस तरह के दूरगामी परिणाम को विधायिका द्वारा लाने का इरादा नहीं था जब उसने एस में "लाभ के लिए किसी भी गतिविधि को जारी रखने से संबंधित नहीं" शब्द पेश किए थे।2 (15) .

[1980] 2 एस सी आर।

[98 बी-सी] सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट

80

ए 9."लाभ के लिए किसी भी गतिविधि को आगे नहीं बढ़ाना" शब्दों से जो बाधित होता है, वह है लाभ के लिए किसी गतिविधि को सामान्य सार्वजनिक उपयोगिता के उद्देश्य से जोड़ना, न कि उसे उद्देश्य की उपलब्धि या निष्पादन से जोड़ना।यह आवश्यक नहीं है कि उद्देश्य की प्राप्ति हो।या उद्देश्य को पूरा करने के साधन में लाभ के लिए कोई गतिविधि शामिल नहीं होनी चाहिए।यह नए जोड़े गए शब्दों का जनादेश नहीं है।इन शब्दों की आवश्यकता यह है कि उद्देश्य में लाभ के लिए किसी भी गतिविधि को जारी रखना शामिल नहीं होना चाहिए।ख जोर सामान्य सार्वजनिक उपयोगिता के उद्देश्य पर है न कि इसकी सुविधा या प्राप्ति पर।[98 ई-जी]

आय आयुक्त-कर v.कोचीन चैंबर ऑफ कॉमर्स एंड इंडस ट्राई, 87 आई. टी. आर. 83 और आंध्र प्रदेश राज्य सड़क परिवहन निगम बनाम।आय-कर आयुक्त, 100 आई. टी. आर. 392 स्वीकृत।

सी 10.यदि विधायिका का इरादा इस प्रकार के न्यासों को लाभ के लिए किसी भी गतिविधि को करने से प्रतिबंधित करना था, तो उसने स्पष्ट शब्दों में ऐसा प्रावधान किया होगा कि ऐसा कोई न्यास या संस्था लाभ के लिए कोई गतिविधि नहीं करेगी।[99 ई-एफ]

11. 1 अप्रैल, 1977 से अधिनियम में धारा 13 (1) (बी. बी.) लागू की गई।

यह प्रावधान है कि गरीबों की राहत, शिक्षा या चिकित्सा राहत के लिए एक धर्मार्थ न्यास के मामले में, जो किसी भी व्यवसाय को चलाता है, ऐसे व्यवसाय से प्राप्त आय को कर से छूट नहीं दी जाएगी, जब तक कि व्यवसाय न्यास या संस्थान के प्राथमिक उद्देश्य के वास्तविक निष्पादन के दौरान नहीं किया जाता है।जहाँ, इसलिए, एक धर्मार्थ न्यास पहले तीन में से किसी एक के अंतर्गत आता है।धारा 2 (15) में निर्धारित धर्मार्थ उद्देश्य की श्रेणियां ऐसा व्यवसाय करती हैं जो धर्मार्थ उद्देश्य के लिए न्यास में आयोजित किया जाता है, ऐसे व्यवसाय से आय को धारा 13 (1) (बीबी) के कारण छूट नहीं दी जाएगी और इसलिए धारा 11 (4) का धर्मार्थ उद्देश्य के पहले तीन प्रमुखों में से किसी के भीतर आने वाले धर्मार्थ न्यास के मामले में कोई आवेदन नहीं होगा। इसी तरह, राजस्व द्वारा प्रस्तावित निर्माण पर धर्मार्थ उद्देश्य के अंतिम शीर्ष के तहत आने वाले धर्मार्थ न्यास के मामले में इसकी कोई प्रयोज्यता नहीं होगी।क्योंकि ऐसे मामले में व्यवसाय से होने वाली आय को छूट नहीं दी जाएगी क्योंकि इसका उद्देश्य धर्मार्थ

होना बंद हो जाएगा।राजस्व द्वारा प्रस्तावित निर्माण का प्रभाव रेंडरिंग एस का होगा।11 (4) धारा 13 (1) (bb) के अधिनियमन के बाद पूरी तरह से निरर्थक।एक निर्माण जो एक प्रावधान प्रदान करता है (अधिनियम

ई.

लाड

अनावश्यक और इसे मौन में बदल देना स्वीकार नहीं किया जा सकता है।[100 सी-एच)12. यदि किसी वैधानिक प्रावधान की भाषा अस्पष्ट है और दो निर्माणों में सक्षम है तो उस निर्माण को अपनाया जाना चाहिए जो अधिनियम के अन्य प्रावधानों को अर्थ और प्रभाव देगा, न कि जो कुछ भी नहीं देगा।[100 जी)

जी.

13. यदि कोई व्यवसाय अपनी आय को लागू करने के लिए विश्वास या कानूनी दायित्व के तहत आयोजित किया जाता है

सामान्य सार्वजनिक उपयोगिता के किसी उद्देश्य को बढ़ावा देने के लिए या इसे लाभ अर्जित करने के उद्देश्य से किया जाता है जिसका उपयोग विशेष रूप से इस तरह के कार्य करने के लिए किया जाता है।

धर्मार्थ उद्देश्य के लिए, धारा 2 (15) के अंतिम समापन शब्दों का कोई उपयोग नहीं होगा और वे न्यास या संस्था को उसके धर्मार्थ चरित्र से वंचित नहीं करेंगे।इन अंतिम समापन शब्दों की आवश्यकता यह नहीं है कि जिस न्यास या संस्था का उद्देश्य सामान्य सार्वजनिक उपयोगिता एच के उद्देश्य को आगे बढ़ाना है, उसे लाभ के लिए कोई गतिविधि नहीं करनी चाहिए, बल्कि यह कि न्यास या संस्था के उद्देश्य में लाभ के लिए किसी भी गतिविधि को जारी रखना शामिल नहीं होना चाहिए।जब तक इस उद्देश्य में आय आयोग के लिए किसी भी गतिविधि को जारी रखना शामिल नहीं है-कर V. सूरट आर्ट सिल्क 81

लाभ, परिभाषा की आवश्यकता को पूरा किया जाएगा और यह मायने नहीं रखता कि कैसे

क.

इस तरह के उद्देश्य को प्राप्त करने या लागू करने के लिए धन पाया जाता है, चाहे वह लाभ के लिए किसी गतिविधि को करने से हो या नहीं।[104 डी-जी]

आय आयुक्त-कर v.धर्मोदय कंपनी, 109 आई. टी. आर. 527 ने इसका अनुसरण किया।

इंडियन चैंबर ऑफ कॉमर्स बनामआय-कर आयुक्त (1975) 101

आई. टी. आर. 796 ने गलत निर्णय लिया।ट्रिब्यून के न्यासी, (1939) 7 आई. टी. आर. 415; के आयुक्त

आय-कर v.कृष्ण वारियर; 53 आई. टी. आर. 176, जे. के. ट्रस्ट बनाम।आय-कर आयुक्त 32 आई. टी. आर. 535 और एकमात्र न्यासी लोकशिक्षा न्यास बनाम।आय-कर आयुक्त (1975) 101 आई. टी. आर. 234 (एस. सी.) संदर्भित।

ग

14. इसलिए यह देखना होगा कि क्या न्यास या संस्था के उद्देश्य में वास्तव में लाभ के लिए किसी गतिविधि को जारी रखना शामिल है या दूसरे शब्दों में

क्या लाभ के लिए कोई गतिविधि वास्तव में "उद्देश्य की प्रगति के मामले के रूप में" उद्देश्य के एक अभिन्न अंग के रूप में की जाती है।लाभ के लिए एक गतिविधि होनी चाहिए और यह न्यास या संस्था के उद्देश्य को पूरा करने में शामिल होनी चाहिए, जिसे उद्देश्य को आगे बढ़ाने के लिए या न्यास या संस्था के उद्देश्य को पूरा करने के क्रम में किया जाना चाहिए।यह तब है जब अपवर्जन खंड का निषेध आकर्षित किया जाएगा।[105 जी-एच]

डी.

15. प्रत्येक न्यास या संस्थान का एक उद्देश्य होना चाहिए जिसके लिए इसे स्थापित किया गया है।

एक्स

और प्रत्येक उद्देश्य को पूरा करने के लिए आगे बढ़ना शामिल होना चाहिए

एक का

गतिविधि।बहिष्करण खंड को आकर्षित करने के लिए गतिविधि लाभ के लिए होनी चाहिए।[106 डी]

16. "लाभ के लिए गतिविधि" वाक्यांश में "के लिए" उपसर्ग के अर्थ के कई रंग हैं लेकिन जब एक क्रिया के सक्रिय प्रतिभागी के साथ उपयोग किया जाता है तो इसका अर्थ "उद्देश्य के लिए" होता है और उस अंत को संदर्भित करता है जिसके संदर्भ में कुछ किया जाता है।[106 ई]

जी।

17. जहाँ कोई गतिविधि लाभ के उद्देश्य से नहीं होती है, बल्कि मुख्य रूप से धर्मार्थ उद्देश्य की पूर्ति के लिए की जाती है, वहाँ इसे लाभ के लिए एक गतिविधि के रूप में वर्णित करना सही नहीं होगा।लेकिन जहां कोई गतिविधि लाभ को कम करने के प्रमुख उद्देश्य के साथ की जाती है, तो यह लाभ के लिए एक गतिविधि होगी, हालांकि इसे न्यास या संस्था के धर्मार्थ उद्देश्य को आगे बढ़ाने के लिए किया जा सकता है।जहाँ किसी गतिविधि को प्रगति के रूप में किया जाता है

3

धर्मार्थ उद्देश्य के लिए, सादा अंग्रेजी व्याकरण के रूप में यह कहना गलत नहीं होगा कि धर्मार्थ उद्देश्य में ऐसी गतिविधि को आगे बढ़ाना शामिल है, लेकिन ऐसी गतिविधि का प्रमुख उद्देश्य जी को कम करना होना चाहिए।

धर्मार्थ उद्देश्य और लाभ अर्जित करने के लिए नहीं।[106 एफ-एच]

धर्मदिप्ती बनाम।आयकर आयुक्त, केरल, [1978] 3 एस. सी. आर. 1038

संदर्भित किया गया।

18. लागू की जाने वाली परीक्षा यह है कि क्या सामान्य सार्वजनिक उपयोगिता के उद्देश्य को पूरा करने में शामिल गतिविधि का प्रमुख उद्देश्य धर्मार्थ उद्देश्य को कम करना है या लाभ अर्जित करना है।जहाँ की प्रमुख वस्तु

एक्स

गतिविधि धर्मार्थ उद्देश्य को पूरा करने के लिए है न कि लाभ अर्जित करने के लिए, यह एक धर्मार्थ उद्देश्य के अपने चरित्र को केवल इसलिए नहीं खोएगा क्योंकि कुछ लाभ उत्पन्न होता है सर्वोच्च न्यायालय रिपोर्ट

[1980] 2 एस सी आर।

82

गतिविधि से ए।अपवर्जन खंड में यह आवश्यकता नहीं है कि गतिविधि को इस तरह से चलाया जाना चाहिए कि इससे कोई लाभ न हो।प्रतिबंधात्मक शर्त कि उद्देश्य में लाभ के लिए किसी भी गतिविधि को जारी रखना शामिल नहीं होना चाहिए, संतुष्ट होगा यदि लाभ कमाना वास्तविक उद्देश्य नहीं है।[107 जी-एच]19. (क) लोक शिक्षा न्यास और इंडियन चैंबर ऑफ बी कॉमर्स में यह टिप्पणी सही है कि धर्मार्थ उद्देश्य को पूरा करने में शामिल गतिविधि लाभ के उद्देश्य से प्रेरित नहीं होनी चाहिए, बल्कि इसे उन्नति या धर्मार्थ उद्देश्य को पूरा करने के उद्देश्य से किया जाना चाहिए।लेकिन आगे यह अवलोकन कि जब भी कोई ऐसी गतिविधि की जाती है जिससे लाभ होता है, तो इसके विपरीत कुछ संकेतों के अभाव में यह निष्कर्ष निकालना आवश्यक है कि गतिविधि लाभ के लिए है और धर्मार्थ उद्देश्य में लाभ के लिए किसी गतिविधि को जारी रखना शामिल है, सही नहीं है।[109 एच; 110 ए-बी] एस (बी) यह आवश्यक नहीं है कि न्यास या संस्था के गठन में यह प्रावधान होना चाहिए कि गतिविधि "कोई लाभ नहीं, कोई नुकसान नहीं" के आधार पर की जाएगी या लाभ प्रतिबंधित होगा।भले ही ऐसा कोई स्पष्ट प्रावधान न हो, धर्मार्थ उद्देश्य की प्रकृति, धर्मार्थ उद्देश्य को आगे बढ़ाने के लिए गतिविधि जिस तरह से की जा रही है, और आसपास की परिस्थितियाँ स्पष्ट रूप से इंगित कर सकती हैं कि गतिविधि एक घरेलू लाभ के उद्देश्य से प्रेरित नहीं है।जिस पर विचार करने की आवश्यकता है वह यह है कि क्या

डी.

मामले के सभी तथ्यों और परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए, गतिविधि का प्रमुख उद्देश्य लाभ कमाना या एक धर्मार्थ उद्देश्य को पूरा करना है।अगर ऐसा है

पहले उद्देश्य एक धर्मार्थ उद्देश्य नहीं होगा लेकिन अगर यह दूसरा है तो उद्देश्य का धर्मार्थ चरित्र नहीं खोएगा।[110 सी-डी]

तत्काल मामले में, विदेशी धागे के आयात के लिए लाइसेंस प्राप्त करने और स्वदेशी धागे की खरीद के लिए कोटा प्राप्त करने की गतिविधि लाभ के लिए नहीं थी।ई गतिविधि का प्रमुख उद्देश्य उन वस्तुओं में वाणिज्य और व्यापार को बढ़ावा देना था जो स्पष्ट रूप से सामान्य सार्वजनिक उपयोगिता का उद्देश्य था और लाभ केवल एक उप-उत्पाद था जिसके परिणामस्वरूप संयोग से धर्मार्थ उद्देश्य को पूरा करने की प्रक्रिया होती थी।निर्धारिती के लाभ का उपयोग केवल इस धर्मार्थ उद्देश्य को पूरा करने के लिए किया जा सकता है।इस गतिविधि का प्रमुख और वास्तविक उद्देश्य धर्मार्थ उद्देश्य की प्रगति होना है-केवल यह तथ्य कि इस गतिविधि से लाभ हुआ है, एफ निर्धारिती के धर्मार्थ चरित्र को नहीं बदलता है।

एक्स

प्रति पाठक जे. (सहमत)

आय-कर अधिनियम के तहत योजना में।1961 धर्मार्थ उद्देश्यों के लिए न्यास के तहत रखी गई संपत्ति से प्राप्त आय के आयकर से छूट के लिए दो सुरक्षा उपाय प्रदान किए गए हैं।एक एस द्वारा "धर्मार्थ उद्देश्य" की सीमित परिभाषा से उत्पन्न होता है।2 (15) , आय-कर अधिनियम, 1961. और दूसरा प्रो है।

जी.

धर्मार्थ न्यास या संस्था से प्राप्त संचित आय के उपयोग पर लगाए गए नियंत्रणों द्वारा समर्थित।पहला न्यास या संस्था के उद्देश्य से संबंधित है, दूसरा परिणामी आय के अनुप्रयोग से संबंधित है।एस के तहत एक "धर्मार्थ उद्देश्य" क्या है इसका अर्थ लगाने में।2 (15) अधिनियम के अनुसार, संचित आय के अनुप्रयोग से संबंधित विचारों को सामान्य रूप से ध्यान में नहीं रखा जाना चाहिए।[114 एफ-जी]

क.

एस में "धर्मार्थ उद्देश्य" के पहले तीन प्रमुख।2 (15) अधिनियम के हैं

विशिष्ट शब्दों में परिभाषित किया गया है, अर्थात्, गरीबों की राहत, शिक्षा और चिकित्सा राहत।चौथे सिर को आम तौर पर अवशिष्ट सिर के रूप में वर्णित किया जाता है।

आय आयोग-कर v.सूरट आर्ट सिल्क 83

चौथे शीर्ष के संदर्भ में "धर्मार्थ उद्देश्य" की परिभाषा से पता चलता है कि

क.

उद्देश्य "सामान्य सार्वजनिक उपयोगिता के किसी भी अन्य उद्देश्य की उन्नति" है।....." .धर्मार्थ उद्देश्य "सामान्य सार्वजनिक उपयोगिता का उद्देश्य" नहीं है, यह उद्देश्य की उन्नति है।परिभाषा एक गतिविधि के संदर्भ में "धर्मार्थ उद्देश्य" को परिभाषित करती है।एक वस्तु अपने आप में एक क्रियाशीलता का संकेत नहीं दे सकती है।यह एक लक्ष्य का प्रतिनिधित्व करता है जिसके लिए, या जिसके संबंध में, एक गतिविधि को आगे बढ़ाया जाता है।गतिविधि का तत्व "एडवांस मेंट" शब्द में सन्निहित है।यदि "धर्मार्थ उद्देश्य" को किसी गतिविधि के संदर्भ में परिभाषित किया गया है, तो प्रतिबंध वीः"लाभ के लिए किसी भी गतिविधि को आगे बढ़ाना शामिल नहीं" खंड को अनिवार्य रूप से विचार किए गए उद्देश्य की "प्रगति" से संबंधित होना चाहिए।[115 बी-सी. जे. "लाभ के लिए गतिविधि" शब्दों को गतिविधि की प्रकृति के वर्णनात्मक रूप में लिया जाना चाहिए।यह एक प्रकार की गतिविधि है जिसका उद्देश्य लाभ अर्जित करना है।इसके विपरीत, यदि लाभ किसी गतिविधि के परिणामस्वरूप हुआ है, तो उसके बिना और कुछ नहीं है।

ग

इसे "लाभ के लिए गतिविधि" के रूप में वर्गीकृत करें।[116 बी-सी] धारा 2 (15) की आवश्यकता को पूरा किया जाता है जहां या तो लाभ कमाने के उद्देश्य की कुल अनुपस्थिति होती है या यह सामान्य सार्वजनिक उपयोगिता के उद्देश्य की उन्नति के उद्देश्य की तुलना में इतना महत्वहीन होता है कि

उत्तरार्द्ध की नेटिंग भूमिका पूर्व को खाते के अयोग्य बनाती है।यदि अनुकूल बनाने का उद्देश्य एक प्रमुख भूमिका निभाता है या सामान्य सार्वजनिक उपयोगिता के उद्देश्य की उन्नति के उद्देश्य से एक समान घटक का गठन करता है,

डी.

तब धारा 2 (15) की परिभाषा संतुष्ट नहीं होती है।[116 - जी-एच]) यदि उद्देश्य वास्तव में धर्मार्थ है, तो अपनाया गया तरीका ऐसा होना चाहिए जो धर्मार्थ उद्देश्य को पूरा करने के लिए निर्देशित हो।इस तरह के व्यवसाय को चलाना उस उद्देश्य से विचलित नहीं होता है जो इसे व्याप्त करता है, व्यावसायिक गतिविधि का अंतिम परिणाम धर्मार्थ उद्देश्य का प्रभाव है।उ. न्यास के धर्मार्थ उद्देश्य को पूरा करने के उद्देश्य से नहीं बल्कि गैर-धर्मार्थ उद्देश्य से संबंधित गतिविधि न्यास के दायरे से बाहर है।यदि यह एक ऐसा व्यवसाय है जो न्यास या संस्था के उद्देश्य को पूरा करने के लिए किया गया है, तो उससे होने वाली आय धारा 11 के तहत छूट का हकदार होगी।अनुभाग

ई.

11 (4) और धारा 13 (1) (बी. बी.) कोष से आय प्राप्त करके न्यास या संस्था के उद्देश्य को पूरा करने के लिए वित्त खोजने के तरीके का प्रतिनिधित्व करती है।

न्यास संपत्ति और न्यास या संस्था के उद्देश्य को वास्तविक रूप से पूरा करने के दौरान की गई गतिविधि से भी।[117 बी-ई}

च

केवल "धर्मार्थ उद्देश्य" की परिभाषा और उस उद्देश्य को पूरा करने या पूरा करने के लिए प्रदत्त शक्तियों के बीच एक अंतर बनाए रखा जाना चाहिए।जबकि उद्देश्य और शक्तियों का परस्पर संबंध होना चाहिए, उन्हें एक दूसरे के साथ पहचाना नहीं जा सकता है।[118 बी]

जी.

तत्काल मामले में निर्धारिती का उद्देश्य धारा 2 (15) की परिभाषा के अंतर्गत आता है।निर्धारिती का उद्देश्य वाणिज्य और व्यापार को बढ़ावा देना था, जिसे सामान्य सार्वजनिक उपयोगिता का उद्देश्य माना गया है और

यह दिखाने के लिए कुछ भी नहीं है कि संघ के ज्ञापन के प्रासंगिक उप-खंड में लाभ के लिए किसी भी गतिविधि को जारी रखना शामिल है।शेष उपखंड उन शक्तियों की गणना करते हैं जिनके लिए कंपनी का गठन किया गया था।[118 जी-एच] ट्रिब्यून के न्यासी, (1939) 7 आई. टी. आर. 415, आयकर आयुक्त बनाम।आंध्र चैंबर ऑफ कॉमर्स (1965) 55 आई. टी. आर., 722 का उल्लेख किया गया है।

[1980] 2 एस सी आर।

सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट

84

एक बिक्री न्यासी, लोक शिक्षा न्यास बनाम।इनकॉनिक आयुक्त-कर, मैसूर (1975) 101 एल. टी. आर. 234; इंडियन चैंबर ऑफ कॉमर्स बनामआय-कर आयुक्त, पश्चिम बंगाल द्वितीय (1975) 101 आई. टी. आर. 796, अनुमोदित नहीं।प्रति सेन, जे. (असहमत)

1

एकमात्र न्यासी लोक शिक्षा न्यास बनाम में दो निर्णय।सी. आई. टी. (101 आई. टी. आर. 234) और भारतीय वाणिज्य मंडल बनाम।सी. आई. टी. (101 आई. टी. आर. 796) कानून को सही ढंग से निर्धारित करता है और अभी भी अच्छा कानून है। [119 डीजे

1. अधिनियम की धारा 2 (15) में आने वाले "लाभ के लिए किसी भी गतिविधि को जारी रखना शामिल नहीं" शब्द केवल धर्मार्थ उद्देश्य के चौथे शीर्ष के योग्य हैं, अर्थात् "सामान्य उपयोगिता का कोई अन्य उद्देश्य", न कि पहले तीन शीर्ष।[119 ई]

2. यह 1922 के अधिनियम की धारा 4 (3) (i) में आने वाली "सामान्य सार्वजनिक सी उपयोगिता का कोई अन्य उद्देश्य" अभिव्यक्ति की अस्पष्टता है जो संसद को प्रतिबंधात्मक शब्द डालने के लिए प्रेरित करती है जिसमें "लाभ के लिए किसी भी गतिविधि को जारी रखना शामिल नहीं है।अदालत के लिए अनुभाग की साधारण भाषा को कम करने की अनुमति नहीं है।यह निर्माण के सभी नियमों के विपरीत होगा कि नए जोड़े गए शब्दों के प्रभाव को नजरअंदाज किया जाए और परिभाषा का अर्थ इस तरह लगाया जाए जैसे कि नए जोड़े गए शब्द या तो नहीं थे या उनका उद्देश्य विषम और अनावश्यक होना था।इस तरह का निर्माण कानून के उद्देश्य को ही विफल कर देगा।भाषा की सापेक्ष सरलता छद्म रूप में तथाकथित दान से होने वाले कर लाभों का मुकाबला करने के लिए आवश्यक विधायी इरादे को सामने लाती है।[119 एच; 120 ए-सी]3. धारा 2 (15) में "धर्मार्थ उद्देश्य" शब्द की परिभाषा द्वारा शुरू किया गया प्रतिबंध यह है कि सामान्य सार्वजनिक उपयोगिता के उद्देश्यों की उन्नति में लाभ के लिए किसी भी गतिविधि को जारी रखना शामिल नहीं होना चाहिए।अगर इसमें

ऐसी किसी भी गतिविधि के लिए दान को परिभाषा [120 डी-ईजे 4] से बाहर रखा जाएगा।यदि ऐसा व्यावसायिक उपक्रम किसी धर्मार्थ उद्देश्य के लिए किसी न्यास के तहत आयोजित किया जाता है तो किसी व्यावसायिक उपक्रम से प्राप्त आय के संबंध में छूट अर्जित करने के लिए कोई वैधानिक प्रतिबंध नहीं है।धारा 11 (1) के तहत छूट के लिए पहली आवश्यक शर्त यह है कि जिस संपत्ति से आय प्राप्त होती है, वह न्यास या अन्य कानूनी दायित्व के तहत होनी चाहिए।धारा 11 (4) इस सिद्धांत को वैधानिक मान्यता देती है कि व्यवसाय संपत्ति है और यदि कोई व्यवसाय पूरी तरह से धर्मार्थ उद्देश्य के लिए एफ ट्रस्ट में आयोजित किया जाता है, तो आय को धारा 11 (1) के तहत छूट दी जाएगी।[121 बी-डी]

री में।द ट्रस्टी ऑफ द ट्रिब्यून (1939) 7 आईटीआर 415:ऑल इंडिया स्पायरर्स।एसोसिएशन वी।सी. आई. टी. (1944) 12 आई. टी. आर. 482; सी. आई. 7.वी.पी. कृष्णा वेवर (1964) 53 आई. टी. आर. 176 सी. आई. टी. बनाम।आंध्र चैंबर ऑफ कॉमर्स (1965) 56 1 टीआर 722; जेके ट्रस्ट बनाम।सी. आई. टी. (1957) 32 आई. टी. आर. 535 निर्दिष्ट है।

जी 5.कर से बचने को रोकने के उपाय के रूप में चौथे शीर्ष के व्यापक दायरे में कटौती करने के लिए परिभाषा में प्रतिबंधात्मक शब्द "लाभ के लिए किसी भी गतिविधि को जारी रखने से संबंधित नहीं" जानबूझकर पेश किए गए थे।धार्मिक या धर्मार्थ न्यासों द्वारा लाभ के लिए किसी गतिविधि में संलग्न होने से कर चोरी के लिए हेरफेर की गुंजाइश मिलती है।[121 एफ-जी]

6. यह मानते हुए भी कि किसी न्यास का प्रमुख उद्देश्य सामान्य सार्वजनिक उपयोगिता के किसी अन्य उद्देश्य का संवर्धन या उन्नति है, यदि इसमें लाभ के लिए कोई गतिविधि अर्थात कोई व्यवसाय या वाणिज्यिक गतिविधि शामिल है, तो यह धारा 2 (15) के अर्थ के साथ एक धर्मार्थ उद्देश्य नहीं रह जाता है।उस स्थिति में ऐसे व्यवसाय से प्राप्त लाभ धारा 11 (1) के तहत छूट के लिए उत्तरदायी नहीं हैं।

आय आयुक्त-कर v.सूरट आर्ट सिल्क 85

धारा 2 (15) के साथ पढ़ें।दान का पोषण करने के लिए लाभ की अवधारणा का भी कोई लाभ नहीं है।ऐसा इसलिए है क्योंकि 'दान को पोषण देने के लिए लाभ' की अवधारणा केवल ए. अधिनियम की धारा 2 (15) में परिभाषित 'धर्मार्थ उद्देश्य' के पहले तीन शीर्षों के तहत उत्पन्न हो सकती है, अर्थात 'गरीबों की राहत' 'शिक्षा' और 'चिकित्सा राहत' लेकिन जहां तक चौथे शीर्ष का संबंध है, वे सामान्य नहीं हैं।यदि सामान्य सार्वजनिक उपयोगिता के किसी उद्देश्य की पूर्ति लाभ के लिए किसी भी कार्य पर निर्भर है, तो यह एक धर्मार्थ उद्देश्य नहीं रह जाता है।धारा 2 (15) और धारा 11 को एक साथ पढ़ने से पता चलता है कि जिस पर ध्यान नहीं दिया जाता है वह एक गतिविधि है

सार्वजनिक उपयोगिता के किसी उद्देश्य की प्रगति के लिए स्थापित दान द्वारा लाभ बी. अपने उद्देश्यों को पूरा करने के क्रम में। [126 II; 127 ए-बी]7. यह स्पष्ट रूप से असंगत होगा कि यदि प्रमुख या प्राथमिक उद्देश्य 'दान' था, तो सामान्य पब लाइसेंस उपयोगिता के ऐसे उद्देश्य के लिए व्यापार या वाणिज्यिक गतिविधि में संलग्न होकर अपनी आय बढ़ाने की अनुमति होगी।

[131 एफ]

8. यदि न्यास का उद्देश्य सामान्य सार्वजनिक 'ग' उपयोगिता के किसी उद्देश्य को आगे बढ़ाना है और यह लाभ के लिए कोई गतिविधि करता है, तो इसे धारा 2 (15) में परिभाषित धर्मार्थ उद्देश्य के दायरे से बाहर रखा गया है।इस भेद को धारा 13 (1) (बी. बी.) में निहित प्रावधान द्वारा स्पष्ट रूप से सामने लाया गया है, जिसमें यह प्रावधान किया गया है कि गरीबों की राहत के लिए

किसी धर्मार्थ न्यास या संस्थान के मामले में, जो कोई व्यवसाय करता है, शिक्षा या मध्यस्थ राहत, ऐसे व्यवसाय से प्राप्त कोई भी आय, जब तक कि व्यवसाय न्यास या संस्थान के प्राथमिक उद्देश्य के वास्तविक निष्पादन के दौरान नहीं किया जाता है, को डी.

पिछले वर्ष की कुल आय।[132 जी-एच]9. यदि सामान्य सार्वजनिक उपयोगिता के किसी उद्देश्य की प्रगति में शामिल है

लाभ के लिए किसी गतिविधि को आगे बढ़ाते हुए, यह एक धर्मार्थ उद्देश्य नहीं रह जाता है और इसलिए, आय को धारा 11 (1) (ए) के तहत छूट नहीं है।दान के पहले तीन प्रमुखों, 'गरीबों की राहत' 'शिक्षा' और चिकित्सा राहत 'में से किसी के अंतर्गत आने वाले न्यास के मामले में यह लाभ के लिए किसी भी गतिविधि में संलग्न हो सकता है और लाभ कर योग्य नहीं होगा यदि उनका उपयोग न्यास के प्राथमिक उद्देश्य के लिए किया जाता है।दूसरे शब्दों में, उनके द्वारा किया जाने वाला व्यवसाय गरीबों की राहत, शिक्षा और चिकित्सा राहत जैसे प्राथमिक उद्देश्य के लिए आनुषंगिक या सहायक है।इसलिए 'दान को पोषण देने के लिए लाभ' की अवधारणा केवल दान के पहले तीन प्रमुखों पर लागू होती है न कि चौथे पर।समान विचार उन संस्थानों पर लागू करना अतार्किक होगा जो सामान्य सार्वजनिक उपयोगिता के किसी भी उद्देश्य के धर्मार्थ उद्देश्यों के लिए स्थापित किए गए हैं।सामान्य सार्वजनिक उपयोगिता के उद्देश्य से जुड़ी कोई भी लाभ कमाने वाली गतिविधि कर योग्य होगी।इसलिए न्यास के प्रमुख या प्राथमिक उद्देश्य के सिद्धांत को दान के चौथे प्रमुख में पेश नहीं किया जा सकता है, अर्थात् 'सामान्य सार्वजनिक उपयोगिता के किसी अन्य उद्देश्य की उन्नति' ताकि किसी भी व्यावसायिक गतिविधि को केवल सहायक या मुख्य उद्देश्य के लिए आनुषंगिक बनाया जा सके।[134 ए-ई]

10. एस में 'धर्मार्थ उद्देश्य' की परिभाषा में प्रतिबंधात्मक शब्द 'लाभ के लिए किसी भी गतिविधि को जारी रखना शामिल नहीं' हैं। 2 (15) उनका उचित वजन दिया जाना चाहिए।अन्यथा, इसका प्रभाव चौथे अनिश्चित वर्ग को छूट के लाभों को स्वीकार करने का होगा, अर्थात्, एस के सादे शब्दों के विपरीत लाभ के लिए गतिविधि में लगे सामान्य सार्वजनिक उपयोगिता के उद्देश्य।2 (15) .

[134 जी]

सिविल अपीलीय क्षेत्राधिकार:1973 का कर संदर्भ सं. 1 ए।आयकर अधिनियम की धारा 257 के तहत कर संदर्भ,

1

1961 आयकर अपीलीय न्यायाधिकरण, अहमदाबाद द्वारा बनाया गया

एच.

आई. टी. ए. संख्या 1697 से उत्पन्न आई. डी. 3 के आर. ए. संख्या 66 (ए. एच. डी.) में 1967-68 मूल्यांकन वर्ष <आई. डी. 1 पर निर्णय लिया गया।

[1980] 2 एस सी आर।

सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट

86

और

✓

कर संदर्भ सं।10-14 1975 का

आयकर अधिनियम, 1961 की धारा 257 के तहत आयकर अपीलीय न्यायाधिकरण, अहमदाबाद द्वारा आर. ए. सं.140-144 / ए. एच. डी./73-74 आई. टी. ए. संख्या से उत्पन्न होता है।2098-2102 /

मूल्यांकन वर्षों 1963-64 से 1967-68 के लिए बीएएचडी/7172।

::

वी. एस. देसाई (टी. आर. नंबर 1 ए/73 में), बी. बी. आहूजा और मिस ए।

अपीलार्थी के लिए सुभाशिनी।

सनत पी. मेहता, रविंदर नारायण, ए. एन. हास्कर और श्री नूरैन

उत्तरदाता के लिए।

डॉ. देवी पाल, पी. वी. कपूर, एस. आर. अग्रवाल, प्रवीण कुमार और

हस्तक्षेपकर्ता (भारतीय चीनी मिल) के लिए आर. के. चौधरी।

डॉ. देवी पाल और डी. एन. गुप्ता मध्यस्थ (बंगाल चाम) के लिए

बेर)।

इंटर के लिए आर. एन. बाजोरिया, एस. आर. अग्रवाल और प्रवीण कुमार

डी.

वेनर (इंडियन चैंबर, कलकत्ता)।

एफ. एस. नरीमन, एन. नेत्तर, ए. के. सांघी और ओ. पी. वैश्य

मध्यस्थ (इंडियन चैंबर, नई दिल्ली)।

पी. एन. भगवती, एन. एल. उन्तवालिया और वी. डी. का निर्णय।

ई तुलजापुरकर, जे. जे.भगवती द्वारा प्रस्तुत, जे. आर. एस. पाठक, जे. ने एक अलग राय दी और ए. पी. सेन, जे. ने एक असहमतिपूर्ण राय दी।भगवती, जे. ये कर संदर्भ द्वारा दिए गए हैं

आय की धारा 257 के तहत न्यायाधिकरण सीधे इस न्यायालय को

कर अधिनियम, 1961 (इसके बाद अधिनियम के रूप में संदर्भित), क्योंकि धारा 2 के खंड (15) में "धर्मार्थ उद्देश्य" की परिभाषा के अंत में आने वाले "लाभ के लिए किसी भी गतिविधि को जारी रखना शामिल नहीं" शब्दों की व्याख्या के बारे में विभिन्न उच्च न्यायालयों के बीच राय का टकराव है।मूल रूप से ये संदर्भ तीन न्यायाधीशों की पीठ के समक्ष सुनवाई के लिए आए थे, लेकिन इसमें शामिल प्रश्न के बड़े महत्व और जी के गंभीर नतीजों को ध्यान में रखते हुए, जो देश में बड़ी संख्या में सार्वजनिक न्यासों पर एक प्रतिकूल निर्णय हो सकता है, पीठ ने सोचा कि मामलों को एक बड़ी पीठ के पास भेजना वांछनीय है और इस तरह ये मामले एक बड़ी पीठ के पास भेजे जाते हैं।

1

संदर्भ अब हमारे सामने आ गए हैं।

हालाँकि संदर्भों की संख्या छह है।वे संबंधित हैं

एच एक ही निर्धारिती है और एक ही सवाल उठाता है, केवल मूल्यांकन वर्ष अलग होते हैं।मूल्यांकनकर्ता सूरत आर्ट सिल्क क्लॉथ मैन्युफैक है।

ट्युरर्स एसोसिएशन, भारतीय आय आयोग के तहत निगमित एक कंपनी-टैक्स वी. सुराट आर्ट सिल्क 87

(भगवती, जे.)

कंपनी अधिनियम, 1913।एसोसिएशन का मूल ज्ञापन सेट ए

जिन उद्देश्यों के लिए निर्धारिती को शामिल किया गया था, लेकिन हम हैं

इससे संबंधित नहीं है क्योंकि इसमें महत्वपूर्ण संशोधन किए गए थे

14 जुलाई, 1961 से उस समय तक प्रभावी समझौता ज्ञापन, जब

निर्धारिती को कंपनी अधिनियम की धारा 25 के तहत अनुमति दी गई थी,

1956 के क्रम से अपने नाम से "सीमित" शब्द को हटाना

केंद्र सरकार और यह संशोधित ज्ञापन है जो सरकार बी

संबंधित मूल्यांकन वर्षों के दौरान निर्धारिती को नियुक्त किया गया।संशोधन

:

जहाँ तक सामग्री की बात है, एड वस्तुएँ इस प्रकार थीं:

(क) कला रेशम धागे में वाणिज्य और व्यापार को बढ़ावा देना,

कच्चा रेशम, सूती धागा, कला रेशम कपड़ा, रेशम कपड़ा

और सूती कपड़ा।

ग

(ख) आर्ट सिल्क के सभी और किसी भी व्यवसाय को जारी रखना।

सूत, कच्चा रेशम, सूती धागे के साथ-साथ कला रेशम

कपड़ा, रेशम का कपड़ा और सूती कपड़ा

सदस्यों की ओर से।

(ग) कला रेशम के आयात के लिए आयात लाइसेंस प्राप्त करना।

सूत, कच्चा रेशम, सूती सूत और अन्य कच्चे धागे

सदस्यों द्वारा आवश्यक रियाल के साथ-साथ सहायक उपकरण

कला रेशम, रेशम और कपास के निर्माण के लिए

कपड़े।

!

(घ) I निर्यात लाइसेंस प्राप्त करना और कपड़े की मैन्यू का निर्यात करना।

ई.

सदस्यों द्वारा प्रस्तुत।

(ई) सभी प्रकार के कपड़े खरीदना और बेचना और सौदा करना और

उसकी ओर से और उससे संबंधित अन्य सामान और कपड़े

सदस्यों से।

- (च) एक्स

एक्स

च

(छ) एक्स

एक्स

(ज) एक्स

एक्स

((i) X

एक्स

´ (जे) एक्स

एक्स

(के)

एक्स

(1)

1

(एम)

एक्स

एक्स

(एन) अन्य सभी विधिसम्मत कार्य करना जो आनुषंगिक हों या

उपरोक्त उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए अनुकूल।

उपखंड (1) में उपबंधित ज्ञापन का खंड 5 कि -

एच.

निर्धारिती की आय और संपत्ति जहां भी प्राप्त होगी

1 1 सर्वोच्च न्यायालय रिपोर्ट में उल्लिखित अपने उद्देश्यों के प्रचार के लिए पूरी तरह से लागू किया गया

[1980]2. एस सी आर।

88

ज्ञापन और उपखंड (2) ने निर्देश दिया कि आय या संपत्ति के किसी भी हिस्से का भुगतान या हस्तांतरण, प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से, लाभांश, बोनस या अन्यथा लाभ के रूप में, व्यक्तियों को नहीं किया जाएगा।जो किसी भी समय निर्धारिती या उनमें से किसी एक या अधिक के सदस्य हैं या रहे हैं या उनमें से किसी एक या अधिक के माध्यम से दावा करने वाले किसी व्यक्ति के सदस्य हैं।निर्धारिती के परिसमापन या विघटन के मामले में परिसंपत्तियों का क्या होना चाहिए, यह ज्ञापन के खंड 10 में निर्धारित किया गया था और इसमें यह प्रावधान किया गया था कि सभी ऋणों और देनदारियों के पूर्ण समूह के बाद शेष संपत्ति निर्धारिती के सदस्यों के बीच वितरित नहीं की जाएगी, बल्कि निर्धारिती के समान उद्देश्यों वाली ऐसी अन्य कंपनी को दी या हस्तांतरित की जाएगी, जिसका निर्धारण निर्धारिती के सदस्यों द्वारा खनन के समय या उससे पहले किया जाएगा।

एस.

उच्च न्यायालय द्वारा विघटन या चूक, जिसके पास मामले में अधिकारिता है या हो सकती है।इस प्रकार निर्धारिती की आय और संपत्ति केवल और विशेष रूप से ज्ञापन में निर्धारित उद्देश्यों के प्रचार के लिए लागू होने के लिए उत्तरदायी थी और ऐसी आय या संपत्ति का कोई भी हिस्सा सदस्यों के बीच किसी भी रूप में या किसी भी भेष में वितरित नहीं किया जा सकता था या उनके लाभ के लिए उपयोग नहीं किया जा सकता था।

डी.

या तो निर्धारिती के परिचालन अस्तित्व के दौरान या उसके अस्तित्व के दौरान।समाप्त करना और विघटन करना।

निर्धारिती ने कला रेशम धागे, रेशम धागे, कला रेशम में वाणिज्य और व्यापार को बढ़ावा देने के लिए विभिन्न गतिविधियों को अंजाम दिया।

कपड़ा और रेशम का कपड़ा।निर्धारिती की आय थी।ई मुख्य रूप से दो स्रोतों से प्राप्त होता है।एक रुपये की दर से वार्षिक सदस्यता थी।3 / - निर्धारिती द्वारा अपने सदस्यों से एकत्र किया गया प्रति बिजली करघा और दूसरा कॉम था

विदेशी धागे के आयात के लिए लाइसेंस के मूल्य के एक निश्चित प्रतिशत और सदस्यों के लिए निर्धारिती द्वारा प्राप्त स्वदेशी धागे की खरीद के लिए कोटा के आधार पर गणना की जाती है।वहाँ

च

सदस्यों से एकत्र की गई वार्षिक सदस्यता से प्राप्त आय की पहली श्रेणी के संबंध में पक्षों के बीच कोई विवाद नहीं था।और राजस्व द्वारा इसे कर से मुक्त माना गया था लेकिन वास्तविक विवाद आय की दूसरी श्रेणी की करयोग्यता के इर्द-गिर्द केंद्रित था।विदेशी धागे के आयात के लिए लाइसेंस के संबंध में निर्धारिती द्वारा सदस्यों से एकत्र की गई राशि "वाहिवती खरच" नामक खाते में जमा की गई थी, जबकि स्वदेशी धागे के कोटा के संबंध में एकत्र की गई राशि "भवन निधि" नामक एक अन्य खाते में जमा की गई थी। निर्धारिती ने निर्धारण वर्ष 1965-66 से संबंधित लेखा वर्ष के दौरान "भवन निधि" में जमा की गई राशि में से एक भवन का निर्माण किया और इसे विभिन्न किरायेदारों को दिया गया और उनसे प्राप्त किराए से निर्धारिती की आय में वृद्धि हुई।निर्धारिती ने निर्धारण वर्ष 1962-63 के लिए आयकर के निर्धारण के दौरान दावा किया कि यह 1 था

आय आयुक्त-कर v.सूरट आर्ट सिल्क 89

(भगवती, जे.)

क.

एक धर्मार्थ उद्देश्य के लिए संस्था और इसकी आय, इसलिए थी,

अधिनियम की धारा 11 उप-धारा (1) के तहत कर से छूट।

इस दावे को आयकर अधिकारी ने इस आधार पर खारिज कर दिया कि

निर्धारिती के उद्देश्य अर्थ के भीतर धर्मार्थ नहीं थे

सेक।2 खंड (15)।निर्धारिती ने अपील में मामले को उठाया और अपील में, अपीलीय सहायक आयुक्त बी द्वारा लिया गया विचार यह था कि निर्धारिती का उद्देश्य पूर्व-प्रमुख रूप से विकास था:कला रेशम उद्योग जो सामान्य सार्वजनिक उपयोगिता का एक उद्देश्य था,

लेकिन चूंकि आयकर अधिकारी ने जांच नहीं की थी कि क्या उद्देश्य

लाभ के लिए एक गतिविधि को जारी रखना शामिल था और यह भी नहीं था

विचार किया गया कि क्या धारा 11 की अन्य शर्तें उप-धारा (1)

संतुष्ट हुए, अपीलीय सहायक आयुक्त ने सी को अलग कर दिया

निर्धारण का आदेश दिया और मामले को आयकर अधिकारी को भेज दिया

इन पर विचार करने के बाद एक नया मूल्यांकन करने के निर्देश के साथ

मुद्दे।न्यायाधिकरण के आग्रह पर आगे की अपील पर

राजस्व अपीलीय द्वारा अपनाई गई प्रक्रिया से सहमत नहीं था

सहायक आयुक्त और यह विचार रखते हुए कि अपीलीय

सहायक आयुक्त को डी के आदेश को दरकिनार नहीं करना चाहिए था

मूल्यांकन किया और नया आकलन करने के लिए रिमांड का आदेश दिया

लेकिन इसके बजाय, अगर वह कोई और तथ्य चाहते हैं, तो उन्हें होना चाहिए था

आयकर अधिकारी से रिमांड रिपोर्ट मांगी और फिर

यह तय करके कि निर्धारिती हकदार है या नहीं, अपील का निपटारा करना।धारा 11 उप-धारा (1) के तहत कर से छूट के लिए न्यायाधिकरण ने अपीलीय सहायक आयुक्त को रिमांड जमा करने का निर्देश दिया

इस प्रश्न पर रिपोर्ट करें कि क्या वे उद्देश्य जिनके लिए निर्धारिती है

कंपनी की स्थापना धर्मार्थ उद्देश्यों के लिए की गई है

धारा 2 (15) का अर्थ और क्या यह धारा 11 के तहत निर्धारित अन्य शर्तों को पूरा करता है।अपीलीय सहायक आयुक्त

दोनों पर निर्धारिती के पक्ष में पाई गई उसकी रिमांड रिपोर्ट में

उसे संदर्भित किए गए बिंदु और रिमांड रिपोर्ट पर विचार करने के बाद, एफ

न्यायाधिकरण ने अपीलीय सहायक कॉम द्वारा लिए गए दृष्टिकोण की पुष्टि की

मिशनरी कि प्राथमिक उद्देश्य जिसके लिए निर्धारिती था

ब्लिश्ड का उद्देश्य कला रेशम और रेशम में वाणिज्य और व्यापार को बढ़ावा देना था

संघ के ज्ञापन के खंड (3) के उपखंड (ए) में दिए गए धागे और कपड़े और खंड (3) के उप खंड (बी) से (ई) में दिए गए अन्य विषय केवल सहायक उद्देश्य थे और क्योंकि प्राथमिक उद्देश्य स्पष्ट रूप से निम्नलिखित उद्देश्यों को आगे बढ़ाना थाः

सामान्य सार्वजनिक उपयोगिता, गिरने की आवश्यकता का पहला भाग

सेक में "धर्मार्थ उद्देश्य" के अंतिम प्रमुख के भीतर।2 खंड (15)

संतुष्ट थे।न्यायाधिकरण ने अपीलीय सहायक से भी सहमति व्यक्त की

आयुक्त ने कहा कि इस प्राथमिक उद्देश्य के लिए जिसके लिए निर्धारिती एच का गठन किया गया था, उसमें लाभ के लिए कोई भी गतिविधि शामिल नहीं थी, क्योंकि निर्धारिती द्वारा जो भी गतिविधि पूरी की गई थी

प्राथमिक उद्देश्य सामान्य सार्वजनिक उपयोगिता के उद्देश्य की उन्नति के लिए था न कि लाभ के लिए।न्यायाधिकरण ने बताया कि धारा 11 में उल्लिखित अन्य शर्तों को पूरा करने के संबंध में कोई विवाद नहीं था और यह अभिनिर्धारित किया कि इन परिस्थितियों में, निर्धारिती की आय धारा 11 की उप-धारा (1) के तहत छूट का हकदार है।राजस्व, व्यथित हो रहा है

क.

न्यायाधिकरण के निर्णय द्वारा, एक संदर्भ के लिए एक आवेदन किया गया और चूंकि एक ओर कलकत्ता और मैसूर उच्च न्यायालयों और दूसरी ओर केरल और आंध्र प्रदेश उच्च न्यायालयों के बीच "लाभ के लिए किसी भी गतिविधि को जारी रखने से संबंधित नहीं" शब्दों की सही व्याख्या के संबंध में निर्णयों का टकराव था, इसलिए न्यायाधिकरण ने इस प्रश्न को संदर्भित किया कि "क्या तथ्यों और मामले के दायरे में, निर्धारिती धारा के तहत छूट का हकदार है।11 (1) (क) आय-कर अधिनियम, 1961 की धारा "सीधे इस न्यायालय को।जहां तक निर्धारण वर्षों 1963-64 से 1967-68 का संबंध है, मूल्यांकन कार्यवाहियों ने एक ही पैटर्न का पालन किया और न्यायाधिकरण ने निर्धारण वर्षों 1962-63 के लिए अपने पहले के निर्णय का पालन करते हुए, डी निर्धारिती को धारा 11 उप-धारा (1) के तहत अपनी आय के संबंध में कर से छूट दी और उसके बाद, राजस्व के कहने पर प्रत्येक निर्धारण वर्ष के लिए कानून का एक समान प्रश्न न्यायाधिकरण द्वारा सीधे इस न्यायालय को भेजा गया।

अब इससे पहले कि हम सही अर्थ और समझ पर विचार करें

च

धारा 2 खंड (15) में "धर्मार्थ उद्देश्य मुद्रा" की परिभाषा के अंत में आने वाले "लाभ के लिए किसी भी गतिविधि को जारी रखना शामिल नहीं" शब्दों की संकेतन, कर संदर्भ संख्या में राजस्व की ओर से उठाए गए एक छोटे से विवाद का निपटारा करना सुविधाजनक होगा।10 1975 के 14 तक।राजस्व ने आग्रह किया कि जिन उद्देश्यों के लिए निर्धारिती को शामिल किया गया था, वे "सामान्य सार्वजनिक उपयोगिता के किसी अन्य उद्देश्य की प्रगति" शब्दों द्वारा चिह्नित श्रेणी के भीतर नहीं आते हैं क्योंकि संघ के ज्ञापन के खंड (3) के उपखंड (बी) से (ई) में निर्धारित उद्देश्य केवल निर्धारिती के सदस्यों के लाभ के लिए थे, न कि जनता के एक वर्ग के लाभ के लिए।यह तर्क दिया गया कि किसी उद्देश्य को सामान्य सार्वजनिक उपयोगिता के उद्देश्य के रूप में माने जाने के लिए अर्हता प्राप्त करने के लिए, इसका उद्देश्य जनता के एक वर्ग को लाभान्वित करना होना चाहिए जो निर्दिष्ट व्यक्तियों से अलग है।समुदाय के जिस वर्ग को लाभान्वित करने की मांग की गई है, उसे सार्वजनिक या अवैयक्तिक प्रकृति के समान सामान्य गुण द्वारा पर्याप्त रूप से परिभाषित और पहचाने जाने योग्य होना चाहिए और जहां एच संभावित लाभार्थियों को एक वर्ग में एकजुट करने वाला ऐसा कोई सामान्य गुण नहीं है, तो उद्देश्य "धर्मार्थ उद्देश्य" के रूप में माने जाने के लिए उत्तरदायी नहीं होगा।तर्क यह था कि चूंकि निर्धारिती के सदस्य आय आयोग-टैक्स वी. सुराट आर्ट सिल्क 91 का एक खंड नहीं थे।

च

जी.

(भगवती, जे.)

सार्वजनिक, लेकिन केवल निर्दिष्ट व्यक्ति थे, खंड (3) के उपखंड (बी) से (ई) में ए को निर्धारित करने वाले उद्देश्य जो केवल निर्धारिती के सदस्यों को लाभान्वित करने के लिए थे, उन्हें उद्देश्य नहीं माना जा सकता था।

सामान्य सार्वजनिक उपयोगिता के लिए और इसलिए निर्धारिती को "धर्मार्थ उद्देश्य" के लिए एक संस्था नहीं कहा जा सकता है।

धारा 2 खंड (15)।

हमें नहीं लगता कि वर्तमान संदर्भों में इस संबंध में आग्रह करना राजस्व के लिए खुला है।ये संदर्भ धारा 257 के तहत दोनों के बीच निर्णयों के टकराव के कारण दिए गए हैं।

की सही व्याख्या के संबंध में विभिन्न उच्च न्यायालय

धारा 2 खंड (15) में "लाभ के लिए किसी भी गतिविधि को जारी रखना शामिल नहीं" शब्द, यह केवल वह विशेष प्रश्न है जो कर सकता है

ग

इन संदर्भों में इस न्यायालय द्वारा निर्णय लिया जाए।धारा 257 में यह प्रावधान है कि यदि धारा 256 के तहत किए गए किसी आवेदन पर न्यायाधिकरण की राय है कि, के निर्णयों में टकराव के कारण

उच्च न्यायालय कानून के किसी विशेष प्रश्न के संबंध में, यह अपेक्षित है कि एक संदर्भ सीधे सर्वोच्च न्यायालय को दिया जाना चाहिए, न्यायाधिकरण मामले का एक बयान तैयार कर सकता है और इसे अपने राष्ट्रपति के माध्यम से सीधे सर्वोच्च न्यायालय को भेज सकता है।यह केवल

कानून का विशेष प्रश्न जिस पर निर्णयों का टकराव होता है।उच्च न्यायालयों में जिन्हें न्यायाधिकरण द्वारा सीधे संदर्भित किया जा सकता है

यह न्यायालय।यहाँ वर्तमान मामले में निर्णयों का टकराव

विभिन्न उच्च न्यायालयों के बीच यह था कि धारा 2 खंड (15) में "लाभ के लिए किसी भी ई गतिविधि को जारी रखना शामिल नहीं" शब्दों का वास्तविक दायरा और अर्थ क्या है और क्या इन शब्दों की उपस्थिति के कारण, जिस उद्देश्य के लिए निर्धारिती का गठन किया गया था, हालांकि "सामान्य सार्वजनिक उपयोगिता के उद्देश्य की प्रगति" शब्दों के भीतर आना धारा 2 खंड (15) के अर्थ के भीतर एक धर्मार्थ उद्देश्य नहीं होगा और इस प्रश्न पर निर्णयों के टकराव के कारण एक सीधा संदर्भ था

न्यायाधिकरण द्वारा इस न्यायालय में प्रस्तुत किया गया।यह न्यायालय यात्रा नहीं कर सकता है

कानून के विशेष प्रश्न से परे जो उच्च न्यायालयों के निर्णयों में टकराव के कारण न्यायाधिकरण द्वारा उसे भेजा गया है।यह सीधे संदर्भ में कानून के उस प्रश्न से नहीं निपट सकता है जिस पर उच्च न्यायालयों के बीच निर्णयों का कोई टकराव नहीं है क्योंकि ऐसा प्रश्न धारा 257 के तहत संदर्भित करने के लिए न्यायाधिकरण के अधिकार क्षेत्र से बाहर होगा।यह संभव है कि ए

ऐसी स्थिति उत्पन्न हो सकती है जहाँ कानून के दो प्रश्न हो सकते हैं।

न्यायाधिकरण के आदेश से उत्पन्न होने वाला, जिसके संबंध में विभिन्न उच्च न्यायालयों के बीच निर्णयों का टकराव है और

दूसरा जिसके संबंध में निर्णयों का ऐसा कोई टकराव नहीं है।एच और ऐसी स्थिति में इस बात पर विचार करना आवश्यक हो सकता है कि क्या दोनों प्रश्नों वाला एक ही संदर्भ सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट के लिए किया जाना चाहिए।

[1980] 2 एस सी आर।

92

ए उच्च न्यायालय या दो संदर्भ दिए जा सकते हैं, एक उच्च न्यायालय को और दूसरा इस न्यायालय को।हम इस दिलचस्प प्रश्न पर कोई राय व्यक्त नहीं करना चाहते हैं, लेकिन एक बात स्पष्ट है कि कानून का वह प्रश्न जिसके संबंध में विभिन्न उच्च न्यायालयों के बीच निर्णयों का कोई टकराव नहीं है, धारा 257 के तहत इस न्यायालय को नहीं भेजा जा सकता है।यह तर्क कि वस्तुओं का

बी निर्धारिती "सामान्य सार्वजनिक उपयोगिता के किसी अन्य उद्देश्य की उन्नति" की श्रेणी में नहीं आता था और इसलिए, धारा 2 खंड (15) के अर्थ के भीतर धर्मार्थ नहीं था, इन संदर्भों में उठाए जाने की अनुमति नहीं दी जा सकती है।

लेकिन भले ही इस तरह के विवाद की अनुमति थी, हमें नहीं लगता कि इसमें कोई सार है।कानून अच्छी तरह से तय है कि यदि किसी न्यास या संस्था के कई उद्देश्य हैं, जिनमें से कुछ धर्मार्थ और कुछ गैर-धर्मार्थ हैं और प्रबंधकों के न्यासी अपने विवेक से उन उद्देश्यों में से किसी पर भी आय या संपत्ति लागू करने के लिए हैं, तो न्यास या संस्था धर्मार्थ के रूप में माने जाने के लिए उत्तरदायी नहीं होगी और इसकी आय का कोई भी हिस्सा -

डी. कर से मुक्त।दूसरे शब्दों में, जहां मुख्य या प्राथमिक उद्देश्य वितरणात्मक हैं, प्रत्येक और प्रत्येक उद्देश्य धर्मार्थ होना चाहिए ताकि ट्रस्ट या संस्था को एक वैध दान के रूप में बरकरार रखा जा सके।इब्राहिम बनाम।आयकर आयुक्त (1) और ईस्ट इंडिया इंडस्ट्रीज (मद्रास) लिमिटेड बनाम आयकर आयुक्त (1)।लेकिन यदि किसी न्यास या संस्थान का प्राथमिक या प्रमुख उद्देश्य धर्मार्थ है, तो एक अन्य उद्देश्य जो अपने आप में धर्मार्थ नहीं हो सकता है, लेकिन जो केवल प्राथमिक या प्रमुख उद्देश्य के लिए सहायक या आनुषंगिक है, न्यास या संस्थान को एक वैध दान होने से नहीं रोकेगा।

आय-कर, मद्रास बनाम।आंध्र चैंबर ऑफ कॉमर्स (3) इसलिए जिस परीक्षण को लागू किया जाना है, वह यह है कि क्या वह उद्देश्य है जो

च

गैर-धर्मार्थ ट्रस्ट या संस्था का एक मुख्य या प्राथमिक उद्देश्य है या यह प्रमुख या प्राथमिक उद्देश्य के लिए सहायक या आनुषंगिक है जो धर्मार्थ है।यह इस परीक्षण के आवेदन पर था कि आयकर आयुक्त v.आंध्र चैंबर ऑफ कॉमर्स (ऊपर), आंध्र चैंबर ऑफ कॉमर्स को कर से छूट का हकदार एक वैध दान माना गया था।न्यायालय ने अभिनिर्धारित किया कि आंध्र चैंबर ऑफ कॉमर्स का प्रमुख या प्राथमिक उद्देश्य व्यापार, वाणिज्य और उद्योग को बढ़ावा देना और परियोजना बनाना और व्यापार, वाणिज्य और धूल-मिट्टी के विकास को बढ़ावा देना और भारत या उसके किसी भी हिस्से के सामान्य वाणिज्यिक हितों पर नजर रखना और उनकी रक्षा करना था और यह स्पष्ट रूप से सामान्य एच (1) 57 भारतीय अपील 260 का एक उद्देश्य था।

(2) 65 आई. टी. आर. 611

(3) 65 आई. टी. आर. 722

आय आयोग-टैक्स वी. सूरट आर्ट सिल्क

93

(भगवती, जे.)

सार्वजनिक उपयोगिता और हालांकि उद्देश्यों में से एक में कदम उठाना शामिल था।व्यापार, वाणिज्य या निर्माण को प्रभावित करने वाले कानून का आग्रह या विरोध करने के लिए, जो अपने आप में गैर-धर्मार्थ के रूप में निंदा के लिए उत्तरदायी हो सकता है, यह केवल प्रमुख या प्राथमिक उद्देश्य के लिए आकस्मिक था और आंध्र चैंबर ऑफ कॉमर्स को एक वैध दान होने से नहीं रोकता था। न्यायालय ने कहा कि यदि "प्राथमिक

उद्देश्य सामान्य सार्वजनिक उपयोगिता के उद्देश्यों की उन्नति होगी, यह धर्मार्थ बना रहेगा भले ही राजनीतिक क्षेत्र में आकस्मिक प्रवेश हो।

उस उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए डोमेन जैसे कि उस उद्देश्य से संबंधित कानून को बढ़ावा देना या विरोध करना, पर विचार किया गया था।न्यायालय ने यह भी कहा कि आंध्र चैंबर ऑफ कॉमर्स केवल इसलिए धर्मार्थ नहीं रह गया क्योंकि चैंबर के सदस्यों को अपने मुख्य धर्मार्थ उद्देश्य को पूरा करने में संयोग से लाभ हुआ था।ग न्यायालय ने अंतर्देशीय राजस्व आयुक्त बनाम के निर्णयों पर बहुत दृढ़ता से भरोसा किया।यॉर्कशायर एग्रीकल्चरल सोसाइटी (1) और इंस्टीट्यूशन ऑफ सिविल इंजीनियर्स बनाम।अंतर्देशीय राजस्व आयुक्त (1) इस निष्कर्ष पर पहुँचने के लिए कि केवल इसलिए कि समाज या संस्था के सदस्यों को कुछ लाभ संयोग से उत्पन्न हुए

डी.

अपने मुख्य धर्मार्थ उद्देश्य को पूरा करते हुए, यह स्वयं संघ या संस्था को दान करने से नहीं रोकेगा।यह.

प्रत्येक मामले में तथ्य का प्रश्न होगा "क्या समाज या व्यक्तियों के निकाय के सदस्यों के लिए इतना व्यक्तिगत लाभ, बौद्धिक या व्यावसायिक है कि वे उपेक्षित होने में असमर्थ हैं"।

यह वह मानदंड है जिसे वर्तमान मामले में लागू किया जाना है।

और यदि हम ऐसा करते हैं, तो यह स्पष्ट है कि निर्धारिती का प्रमुख या प्राथमिक उद्देश्य ज्ञापन के खंड (3) के उपखंड (ए) में उल्लिखित कला रेशम धागे, कच्चे रेशम धागे, सूती धागे, कला रेशम कपड़े, रेशम कपड़े और सूती कपड़े में वाणिज्य और व्यापार को बढ़ावा देना था और खंड (3) एफ के उपखंड (बी) से (ई) में निर्दिष्ट उद्देश्य केवल इस प्रमुख या

प्राथमिक उद्देश्य।खंड (3) के उपखंड (बी) से (ई) में निर्धारित उद्देश्य, वास्तव में, अधिवास या प्राथमिक उद्देश्य की पूर्ति सुनिश्चित करने के उद्देश्य से निर्धारिती को प्रदत्त शक्तियों की प्रकृति में थे।राजस्व, यह स्वीकार किया जा सकता है कि यह तर्क देना सही है कि खंड (3) के उपखंड (बी) जी से (ई) में इन उद्देश्यों या शक्तियों से निर्धारिती के सदस्यों को लाभ होगा, लेकिन यह लाभ मुख्य या

निर्धारिती के निगमन का आधार बनाने का प्राथमिक उद्देश्य।यदि, इसलिए, निर्धारिती का प्रमुख या प्राथमिक उद्देश्य धर्मार्थ था, तो सहायक उद्देश्य उपखंडों में निर्धारित किए गए हैं।

एच.

(1) [1928] 1 के. बी. 611; 13 कर कैस।58

(2) [1931] 6 टैक्स कैस।158 (सी. ए.)

[1980] 2 एस सी आर।

सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट

94

खंड (3) का ए (बी) से (ई) इसके धर्मार्थ चरित्र के खिलाफ नहीं होगा और निर्धारिती का उद्देश्य कम धर्मार्थ नहीं होगा।अब आयकर आयुक्त बनाम मामले में इस न्यायालय के निर्णय को ध्यान में रखते हुए।आंध्र चैंबर ऑफ कॉमर्स (ऊपर), इसमें कोई संदेह नहीं हो सकता है कि कला रेशम धागे, कच्चे रेशम धागे, सूती धागे, कला रेशम कपड़े, रेशम कपड़े और सूती कपड़े में वाणिज्य और व्यापार को बढ़ावा देने के लिए प्रमुख या प्राथमिक उद्देश्य सामान्य सार्वजनिक उपयोगिता के उद्देश्य की उन्नति की श्रेणी में आता है।यह सच है कि अखिल भारतीय स्पिनर संघ बनाम में प्रिवी काउंसिल की न्यायिक समिति के निर्णय के अनुसार। आय-कर के आयुक्त, (1) "सामान्य सार्वजनिक उपयोगिता के किसी अन्य उद्देश्य की उन्नति" शब्द निजी लाभ के उद्देश्यों को बाहर कर देंगे, लेकिन

एस.

निर्धारिती के मामले में भी इस आवश्यकता को पूरा किया गया था, क्योंकि निजी लाभ का उद्देश्य कंपनी अधिनियम, 1956 की धारा 25 और इसके ज्ञापन के खंड 5 और 10 के तहत निर्धारिती की मान्यता द्वारा निर्धारित किया गया था।इसलिए, यह अभिनिर्धारित किया जाना चाहिए कि निर्धारिती की आय और संपत्ति धारा 2 खंड (15) के अर्थ के भीतर सामान्य सार्वजनिक उपयोगिता के उद्देश्य को आगे बढ़ाने के उद्देश्य से डी कानूनी दायित्व के तहत अभिनिर्धारित की गई थी।

लेकिन सवाल अभी भी बना हुआ है कि क्या निर्धारिती का यह प्राथमिक उद्देश्य, अर्थात्, कला रेशम धागे, कच्चे रेशम, सूती धागे, कला रेशम कपड़े, रेशम कपड़े में वाणिज्य और व्यापार को बढ़ावा देना है।

ई.

कपास के कपड़े को "लाभ के लिए किसी भी गतिविधि को जारी रखने में शामिल नहीं" कहा जा सकता है।यह प्रश्न धारा 2 खंड (15) की शर्तों पर उत्पन्न होता है जो "धर्मार्थ उद्देश्य" की एक समावेशी परिभाषा देता है।यह प्रावधान करता है कि "धर्मार्थ उद्देश्य" में "गरीबों की राहत, शिक्षा, चिकित्सा राहत और सामान्य सार्वजनिक उपयोगिता के किसी भी अन्य उद्देश्य की प्रगति शामिल है जिसमें लाभ के लिए किसी भी एफ गतिविधि को जारी रखना शामिल नहीं है"।मेसर्स में इस न्यायालय के फैसले के परिणामस्वरूप अब यह अच्छी तरह से तय हो गया है।धरमदीप्ती बनाम।आय-कर आयुक्त (2) कि "लाभ के लिए किसी भी गतिविधि को जारी रखना शामिल नहीं" शब्द केवल धर्मार्थ उद्देश्य के अंतिम प्रमुख को योग्य या नियंत्रित करते हैं, न कि पहले के तीन प्रमुखों को।इसलिए जहां किसी न्यास या जी संस्थान का उद्देश्य गरीबों को राहत, शिक्षा या चिकित्सा राहत देना है, वहां "धर्मार्थ उद्देश्य" की परिभाषा की आवश्यकता पूरी तरह से पूरी होगी, भले ही लाभ के लिए कोई गतिविधि न्यास या संस्थान के प्राथमिक उद्देश्य को वास्तविक रूप से पूरा करने के दौरान की जाती हो।लेकिन अगर न्यास या संस्था का उद्देश्य ऐसा है कि इसे "गरीबों की राहत" के प्रमुखों द्वारा कवर नहीं किया जा सकता है,

एच.

(1) 12 आई. टी. आर. 482.

(2) सी. ए. सं. 82/75 24 जुलाई, 978 को तय किया गया।

आय आयोग-टैक्स वी. सूरट आर्ट सिल्क 95

(भगवती, जे.)

शिक्षा और चिकित्सा राहत ", लेकिन एक धर्मार्थ उद्देश्य होने का इसका दावा केवल अंतिम शीर्ष" सामान्य सार्वजनिक उपयोगिता के किसी अन्य उद्देश्य की उन्नति "पर निर्भर करता है, तो सीधे सवाल उठेगा कि क्या न्यास या संस्था के उद्देश्य में लाभ के लिए किसी भी गतिविधि को जारी रखना शामिल है।इस प्रकार "धर्मार्थ उद्देश्य" के अंतिम प्रमुख के लिए इसकी प्रयोज्यता के लिए दो शर्तों की पूर्ति की आवश्यकता होती है (i) न्यास या संस्था का उद्देश्य सामान्य सार्वजनिक उपयोगिता के उद्देश्य की प्रगति होना चाहिए; और (ii) वह उद्देश्य नहीं होना चाहिए।

लाभ के लिए किसी भी गतिविधि को जारी रखना शामिल है।पहली शर्त कोई कठिनाई प्रस्तुत नहीं करती है और, जैसा कि हम पहले ही ऊपर बता चुके हैं, यह वर्तमान मामले में पूरा होता है, क्योंकि निर्धारिती का प्राथमिक उद्देश्य, अर्थात्, कला में वाणिज्य और व्यापार को बढ़ावा देना है।

ग

रेशम धागा, कच्चा रेशम सूती धागा, कला रेशम कपड़ा, रेशम कपड़ा और सूती कपड़ा स्पष्ट रूप से सामान्य सार्वजनिक उपयोगिता के उद्देश्य की उन्नति है।लेकिन वास्तविक कठिनाई तब उत्पन्न होती है जब हम दूसरी शर्त की प्रयोज्यता पर विचार करते हैं।"लाभ के लिए किसी भी गतिविधि को जारी रखने में शामिल नहीं" शब्दों का क्या अर्थ है और क्या है?

जहाँ तक सामान्य सार्वजनिक उपयोगिता के किसी उद्देश्य की डी उन्नति के उद्देश्य का संबंध है, वे किस सीमा का संकेत देते हैं?

इस स्तर पर इस देश के आयकर कानून में "धर्मार्थ उद्देश्य" की परिभाषा के कानूनी इतिहास को संक्षेप में संदर्भित करना सुविधाजनक होगा, क्योंकि इससे हमें "लाभ के लिए किसी भी गतिविधि के ई को शामिल नहीं करने" शब्दों के सही अर्थ और महत्व को समझने में मदद मिलेगी।यह ध्यान दिया जा सकता है कि ये प्रतिबंधात्मक शब्द भारतीय आयकर अधिनियम, 1922 की धारा 4 की उप-धारा (3) में दी गई "धर्मार्थ उद्देश्य" की परिभाषा में नहीं पाए गए थे और इन्हें पहली बार तब जोड़ा गया था जब वर्तमान अधिनियम

अधिनियमित किया गया।वे कौन से कारण थे जिन्होंने विधायिका को "धर्मार्थ उद्देश्य" की परिभाषा में इन सीमित शब्दों को जोड़ने के लिए प्रेरित किया, यह एक ऐसा मामला है जिसके लिए हम वर्तमान में विज्ञापन करेंगे, लेकिन ऐसा करने से पहले, हम 1922 के अधिनियम की धारा 4 की उप-धारा (3) में "धर्मार्थ उद्देश्य" की परिभाषा पर उपयोगी रूप से एक नज़र डाल सकते हैं।वहाँ, "धर्मार्थ उद्देश्य" को "गरीबों की राहत, शिक्षा, चिकित्सा राहत और किसी अन्य उद्देश्य की प्रगति" के रूप में परिभाषित किया गया था।

1

जी.

सामान्य सार्वजनिक उपयोगिता "बिना योगात्मक शब्दों के" लाभ के लिए किसी भी गतिविधि को जारी रखना शामिल नहीं है।अब "धर्मार्थ उद्देश्य" की इस परिभाषा की तुलना अंग्रेजी कानून के तहत "दान" की अवधारणा से करना दिलचस्प है।दान का अंग्रेजी कानून एलिजाबेथ के क़ानून के इर्द-गिर्द विकसित हुआ है, जिसकी प्रस्तावना में उन उद्देश्यों की सूची को शामिल किया गया है जिन्हें चर-एच टेबल के रूप में सुरक्षा के योग्य माना जाता है।प्रारंभिक अवस्था से इन उद्देश्यों को केवल उदाहरण के रूप में माना जाता रहा है और सदियों से इन्हें सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्टों के लिए मार्गदर्शक माना जाता रहा है।

[1980] 2 एस सी आर।

96

अलग-अलग परिस्थितियों में अदालतों के लिए पद

और तेजी से बदलती सभ्यता और अर्थव्यवस्था।जब भी कोई सवाल उठता है कि क्या कोई विशेष उद्देश्य धर्मार्थ है, तो परीक्षा हमेशा यह रही है कि क्या यह एलिजाबेथ क़ानून की प्रस्तावना की भावना और इरादे के भीतर है या नहीं।कानून को सादृश्य पर सादृश्य द्वारा विकसित किया गया है और यह मामले के बड़े बी मामले में पाया जाता है-कानून जिसे अदालतों द्वारा वर्षों से बनाया गया है।परिणाम यह है कि अंग्रेजी कानून में दान की अवधारणा उतनी ही अस्पष्ट और अनिर्धारित है जितना कि यह व्यापक और लोचदार है और हर बार प्रस्तावना से एलिजाबेथ के क़ानून या तय किए गए मामलों से समानता की खोज करनी पड़ती है।एक प्रारंभिक प्रयास

सी इस समस्या को सर सैमुअल रोमिली द्वारा मुख्य शीर्षों के तहत एक वर्गीकरण द्वारा सरल बनाया गया था जब उन्होंने मॉरिस वी में तर्कों के दौरान उनके द्वारा प्रस्तुत निम्नलिखित सारांश में चार शीर्षों के तहत धर्मार्थ उद्देश्यों को शामिल करने का प्रयास किया था।डरहम के बिशप (1) "गरीबों की शरण, सीखने की उन्नति, धर्म की उन्नति और सामान्य सार्वजनिक उपयोगिता के उद्देश्यों की उन्नति"।इस डी वर्गीकरण को लॉर्ड मैकनाघटेन ने विशेष आयुक्त बनाम में धर्मार्थ उद्देश्यों की अपनी उत्कृष्ट सूची में अपनाया था।पेम्सेल (1) जहाँ विद्वान लॉ लॉर्ड ने बताया कि दान में अपने कानूनी अर्थों में चार प्रमुख विभाग शामिल हैं:गरीबी से राहत के लिए न्यास, शिक्षा की उन्नति के लिए न्यास, धर्म की उन्नति के लिए न्यास और अन्य उद्देश्यों के लिए न्यास जो समुदाय के लिए लाभदायक हैं जो किसी भी पूर्ववर्ती शीर्ष के अंतर्गत नहीं आते हैं।यह ध्यान दिया जाएगा कि 1922 के अधिनियम और अनुसरण अधिनियम दोनों में "धर्मार्थ शुद्ध मुद्रा" की परिभाषा में पहला शीर्ष सर सैमुअल रोमिली के सारांश से लिया गया है; दूसरा "उन्नति" शब्द को हटाने के बाद लॉर्ड मैकनाघ्टन के वर्गीकरण से; तीसरा एक नया शीर्ष है जो राशि में भी नहीं पाया जाता है।

एफ मैरी ऑफ सर सैमुअल रोमिली या लॉर्ड मैकनाघटेन के वर्गीकरण में जबकि चौथा सर सैमुअल रोमिली के सारांश में अंतिम शीर्ष से लिया गया है।भारतीय कानून में "धर्मार्थ शुद्ध मुद्रा" की परिभाषा इस प्रकार अंग्रेजी मामलों से प्राप्त दान की परिभाषा से बहुत आगे जाती है, क्योंकि इसमें विशेष रूप से जी में चिकित्सा राहत शामिल है और इसमें सामान्य सार्वजनिक उपयोगिता के सभी उद्देश्य शामिल हैं।अंग्रेजी कानून में यह पर्याप्त नहीं है कि एक उद्देश्य लॉर्ड मैकनाघ्टन के वर्गीकरण में निर्धारित दान के चार प्रभागों में से एक के भीतर आता है।यदि इसे धर्मार्थ माना जाना है तो यह एलिजाबेथ के क़ानून की प्रस्तावना की भावना और इरादे के भीतर भी होना चाहिए।जहाँ तक भारतीय कानून की बात है, ऐसी कोई सीमा नहीं है।

एच चिंतित है भले ही कोई उद्देश्य आत्मा और इरादे के भीतर न हो

(1) 1805 10 वेस।जूनियर 522.(2) 3 कर मामले 53.

आय आयुक्त-कर v.सुराट आर्ट सिल्क 97

(भगवती, जे.)

एलिजाबेथ के क़ानून की प्रस्तावना के अनुसार, यह धर्मार्थ होगा यदि यह क़ानून में दी गई "धर्मार्थ उद्देश्य" की परिभाषा के भीतर आता है।इसलिए, सामान्य सार्वजनिक उपयोगिता का प्रत्येक उद्देश्य भारतीय कानून के तहत धर्मार्थ होगा, जो केवल वर्तमान अधिनियम में जोड़े गए प्रतिबंधात्मक शब्दों "लाभ के लिए किसी भी गतिविधि को जारी रखने से संबंधित नहीं" द्वारा लगाई गई शर्त के अधीन होगा।यह भारतीय और अंग्रेजी दान के कानून के बीच इस बुनियादी अंतर के कारण है कि लॉर्ड राइट ने अखिल भारतीय स्पिनर्स एसोसिएशन बनाम में सावधानी का एक शब्द कहा।आय-कर आयुक्त (ऊपर) इस विषय पर अंग्रेजी निर्णयों के अंधे पालन के खिलाफ।परिभाषा

क.

भारतीय कानून में "धर्मार्थ उद्देश्य" का अर्थ लगाया जाना चाहिए

वहाँ इस्तेमाल की गई भाषा के अनुसार और सी भारतीय जीवन की पृष्ठभूमि के खिलाफ।अंग्रेजी निर्णय को मदद के लिए भेजा जा सकता है या

लेकिन उन्हें भारतीय अधिनियम में परिभाषा की व्याख्या पर कोई बाध्यकारी अधिकार नहीं माना जा सकता है।

इन प्रारंभिक टिप्पणियों के साथ, हम अब मुड़ सकते हैं।महत्वपूर्ण शब्दों की जांच करने के लिए "प्रो फिट के लिए किसी भी गतिविधि को जारी रखना शामिल नहीं है"।शब्दार्थ का एक प्रश्न जो हमारे सामने रखा गया था और वह एक ऐसा प्रश्न है जिसे हमें इन शब्दों के वास्तविक अर्थ और प्रभाव पर पहुंचने से पहले हल करना चाहिए-क्या ये शब्द "उन्नति" या "सामान्य सार्वजनिक उपयोगिता के उद्देश्य" के योग्य हैं।"उन्नति" या "सामान्य सार्वजनिक उपयोगिता का उद्देश्य" की परिभाषा की आवश्यकता को पूरा करने के लिए लाभ के लिए किसी भी गतिविधि को जारी रखना क्या शामिल नहीं होना चाहिए?राजस्व ने तर्क दिया कि यह था

डी.

पूर्व और आग्रह किया कि सामान्य सार्वजनिक उपयोगिता का उद्देश्य जो भी हो, इसकी प्रगति या उपलब्धि में लाभ के लिए कोई भी गतिविधि शामिल नहीं होनी चाहिए, या दूसरे शब्दों में, लाभ के लिए कोई भी गतिविधि सामान्य सार्वजनिक उपयोगिता के उद्देश्य को प्राप्त करने या प्राप्त करने के उद्देश्य से नहीं की जानी चाहिए।तर्क यह था कि यदि सामान्य सार्वजनिक उपयोगिता के उद्देश्य को प्राप्त करने या पूरा करने के साधनों में लाभ के लिए किसी भी गतिविधि को जारी रखना शामिल है, तो

आई.

न्यास या संस्था, हालांकि "सामान्य सार्वजनिक उपयोगिता का कोई अन्य उद्देश्य" के विवरण के भीतर आना एक धर्मार्थ उद्देश्य नहीं होगा।

जी.

और व्यवसाय से होने वाली आय कर से मुक्त नहीं होगी।अब, यदि यह तर्क सही है, तो किसी धर्मार्थ न्यास या संस्था के लिए, जिसका उद्देश्य सामान्य सार्वजनिक उपयोगिता के उद्देश्य को बढ़ावा देना है, लाभ के लिए किसी भी गतिविधि को जारी रखना संभव नहीं होगा।सिर्फ इतना ही नहीं

क्या इसे व्यवसाय करने से रोका जाएगा

न्यास एच. आई. या संस्था के प्राथमिक उद्देश्य के वास्तविक निष्पादन की प्रक्रिया, लेकिन यह किसी भी व्यवसाय को जारी रखने में भी असमर्थ होगा, भले ही व्यवसाय न्यास या कानूनी दायित्व के तहत आयोजित किया गया हो

[1980] 2 एस सी आर।

ई-सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट

98

अपनी आय को पूरी तरह से धर्मार्थ उद्देश्य के लिए लागू करें या ट्रस्ट या संस्था द्वारा लाभ अर्जित करने के उद्देश्य से अपने धन के निवेश के माध्यम से चलाया जाता है, जो इसके संविधान की शर्तों के तहत, केवल धर्मार्थ उद्देश्य को पूरा करने के लिए लागू होता है।परिणाम यह होगा कि भले ही किसी न्यास या संस्था द्वारा सामान्य सार्वजनिक उपयोगिता के किसी उद्देश्य को पूरा करने या पूरा करने के उद्देश्य से कोई व्यवसाय किया जाता है और ऐसे व्यवसाय से आय केवल उस उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए लागू होती है, न्यास या संस्था का उद्देश्य धर्मार्थ नहीं रहेगा और न केवल ऐसे व्यवसाय से आय बल्कि अन्य स्रोतों से प्राप्त आय भी छूट खो देगी।यह वास्तव में एक दूरगामी परिणाम होगा लेकिन हमें नहीं लगता कि ऐसा परिणाम था

एस.

विधायिका द्वारा धारा 2 खंड (15) में "लाभ के लिए किसी भी गतिविधि को जारी रखने से संबंधित नहीं" शब्दों को पेश करने के उद्देश्य से।हमारे ऐसा कहने के कारण इस प्रकार हैं:

यह उपयोग की जाने वाली भाषा के एक सादे प्राकृतिक निर्माण पर स्पष्ट है।

डी.

विधानमंडल द्वारा कहा गया है कि दस महत्वपूर्ण शब्द "लाभ के लिए किसी भी गतिविधि को जारी रखना शामिल नहीं है" "सामान्य सार्वजनिक उपयोगिता के उद्देश्य" के साथ जाते हैं न कि "उन्नति" के साथ।यह सामान्य सार्वजनिक उपयोगिता का उद्देश्य है जिसमें लाभ के लिए किसी भी गतिविधि को जारी रखना शामिल नहीं होना चाहिए न कि इसकी उन्नति या प्राप्ति।इन अंतिम दस शब्दों से जो ई बाधित होता है, वह है लाभ के लिए गतिविधि को सामान्य उपयोगिता के उद्देश्य से जोड़ना, न कि उसे सहायक पूर्ति या उद्देश्य को पूरा करने से जोड़ना।यह आवश्यक नहीं है कि उद्देश्य की प्राप्ति या उद्देश्य को पूरा करने के साधनों में लाभ के लिए कोई गतिविधि शामिल न हो।यह नए जोड़े गए शब्दों का जनादेश नहीं है।इन शब्दों की आवश्यकता यह है कि एफ उद्देश्य में लाभ के लिए किसी भी गतिविधि को जारी रखना शामिल नहीं होना चाहिए।जोर सामान्य सार्वजनिक उपयोगिता के उद्देश्य पर है न कि इसकी उपलब्धि या प्राप्ति पर।आय आयुक्त मामले में केरल और आंध्र प्रदेश उच्च न्यायालयों के निर्णय-कर बनाम।कोचीन चैंबर ऑफ कॉमर्स एंड इंडस्ट्री (1) और आंध्र प्रदेश राज्य सड़क परिवहन निगम बनाम।आय-कर आयुक्त (1) ने हमारी राय में धारा 2 खंड (15) में अंतिम दस शब्दों की सही व्याख्या की है।इन अंतिम दस शब्दों का सही अर्थ यह है कि जब किसी न्यास या संस्था का उद्देश्य सामान्य सार्वजनिक उपयोगिता के उद्देश्य को आगे बढ़ाना है, तो यह सामान्य जनता की

उपयोगिता का उद्देश्य है न कि इसकी उपलब्धि या निष्पादन जिसमें लाभ के लिए किसी भी गतिविधि को जारी रखना शामिल नहीं होना चाहिए।

एचआई

(1) 87 आई. टी. आर. 83

(2) 108 आई. टी. आर. 392

आय आयोग-टैक्स वी. सूरट आर्ट सिल्क

99

(भगवती, जे.)

क.

यह सच है कि एक सुझाए गए निर्माण के परिणाम एक वैधानिक प्रावधान के अर्थ को नहीं बदल सकते हैं जहां ऐसा अर्थ स्पष्ट और असंदिग्ध है, लेकिन वे निश्चित रूप से संदेह या अस्पष्टता के मामले में इसके अर्थ को ठीक करने में मदद कर सकते हैं।आइए हम इस बात की जांच करें कि यह राजस्व की ओर से किए गए निर्माण का परिणाम होगा।यदि राजस्व की ओर से किए गए निर्माण को स्वीकार कर लिया जाता है, तो जैसा कि पहले ही ऊपर बताया गया है, ऐसा कोई न्यास या संस्थान नहीं है जिसका उद्देश्य आम जनता के किसी उद्देश्य को बढ़ावा देना हो।

उपयोगिता, किसी भी व्यवसाय को चलाने में सक्षम होगी, भले ही ऐसा व्यवसाय ट्रस्ट या कानूनी दायित्व के तहत आयोजित किया जाता है कि वह अपनी आय को पूरी तरह से धर्मार्थ उद्देश्य के लिए लागू करे या ट्रस्ट या संस्था द्वारा विशेष रूप से उपयोग किए जाने वाले लाभ अर्जित करने के उद्देश्य से चलाया जाता है।

ग

धर्मार्थ उद्देश्य को पूरा करने के लिए।यदि ऐसा कोई व्यवसाय किया जाता है, तो न्यास या संस्था का उद्देश्य चर टेबल नहीं रहेगा और न केवल ऐसे व्यवसाय से होने वाली आय, बल्कि न्यास या संस्था की किसी भी स्रोत से होने वाली पूरी आय, कर छूट खो देगी।परिणाम यह होगा कि कोई विश्वास नहीं होगा।

या सार्वजनिक डी उपयोगिता के किसी उद्देश्य को बढ़ावा देने के लिए स्थापित संस्था इस डर से व्यवसाय में संलग्न हो पाएगी कि वह कर छूट को पूरी तरह से खो सकती है और सामान्य सार्वजनिक उपयोगिता के उद्देश्यों को बढ़ावा देने के लिए आय का एक प्रमुख स्रोत समाप्त हो जाएगा।यह विश्वास करना मुश्किल है कि विधायिका अपने परिणाम में इतना कठोर परिणाम लाने का इरादा रख सकती थी।यदि विधायिका का इरादा सामान्य सार्वजनिक उपयोगिता के किसी उद्देश्य के समर्थन में स्थापित किसी न्यास या संस्था को लाभ के लिए किसी भी गतिविधि को करने से प्रतिबंधित करना था, तो उसने स्पष्ट शब्दों में प्रावधान किया होगा कि ऐसा न्यास या संस्था भाषा संबंधी समस्याओं को जन्म देने और व्याख्यात्मक मुकदमेबाजी को बढ़ावा देने वाली शामिल और अस्पष्ट भाषा का उपयोग करने के बजाय लाभ के लिए कोई गतिविधि नहीं करेगी।विधायिका ने भाषा का उपयोग किया होगा जिसमें कोई संदेह नहीं है कि क्या इरादा था और परिभाषा खंड में किए गए संशोधन से संदिग्ध निहितार्थ द्वारा एकत्र किए जाने के अपने इरादे को नहीं छोड़ा होगा और वह भी भाषा में जो स्पष्ट नहीं है।

इसके अलावा, निर्माण का एक और परिणाम

राजस्व की ओर से यह होगा कि धारा 11 की उप-धारा (4) को पूरी तरह से अनावश्यक और अर्थहीन बना दिया जाएगा।धारा 11 उप

धारा (4) घोषणा करती है कि धारा 11 के प्रयोजन के लिए "न्यास के अधीन धारित संपत्ति" में एक व्यावसायिक उपक्रम शामिल होगा और इसलिए, एक व्यवसाय को धर्मार्थ उद्देश्य के लिए न्यास के अधीन भी रखा जा सकता है और जहां यह इस प्रकार धारित है, उसकी आय को कर से छूट दी जाएगी, बशर्ते कि, निश्चित रूप से, एच

छूट के लिए अन्य आवश्यक शर्तों को पूरा किया जाता है।यह इंगित किया जा सकता है कि धारा 11 उप-धारा (4) जहां यह प्रदान करती है कि एक सर्वोच्च न्यायालय रिपोर्ट

[1980] 2 एस सी आर।

100

एक व्यवसाय को उचित रूप से न्यास के तहत भी आयोजित किया जा सकता है, जिससे कानून में कोई बदलाव नहीं आता है, क्योंकि उस अनुकूल दृष्टि के अधिनियमन से पहले भी, ट्रिब्यून के मामले में प्रिवी काउंसिल की न्यायिक समिति द्वारा यह अभिनिर्धारित किया गया था कि 1922 के अधिनियम की संबंधित धारा 4 (3) (i) में संपत्ति में व्यवसाय शामिल था और इस सिद्धांत की पुष्टि इस न्यायालय द्वारा जे. के. न्यास बनाम में की गई घोषणाओं द्वारा की गई थी।कॉम बी. आय-कर मिशनर और आय-कर आयुक्त वी. कृष्णा वारियर।( ) धारा 11 की उप-धारा (4) ने केवल इस सिद्धांत को वैधानिक मान्यता दी।अब 1 अप्रैल, 1977 से 1961 के अधिनियम में शुरू की गई धारा 13 (1) (बी. बी.) में प्रावधान है कि गरीबों की राहत के लिए एक धर्मार्थ ट्रस्ट या संस्थान के मामले में, शिक्षा या चिकित्सा राहत जो किसी भी व्यवसाय पर चलती है, आय से संबंधित है।

एस.

वेद को इस तरह के व्यवसाय से तब तक कर से छूट नहीं होगी जब तक कि न्यास या संस्था के प्राथमिक उद्देश्य को वास्तविक रूप से पूरा करने के दौरान व्यवसाय नहीं किया जाता है।इसलिए, जहां धारा 2 खंड (15) में निर्धारित धर्मार्थ उद्देश्य की पहली तीन श्रेणियों में से किसी के भीतर आने वाला कोई धर्मार्थ न्यास या संस्थान है और वह अपने धर्मार्थ उद्देश्य के लिए न्यास के तहत रखे गए व्यवसाय पर डी वहन करता है, तो ऐसे व्यवसाय से आय को धारा के कारण छूट नहीं दी जाएगी।

13 (1) (बीबी)।इसलिए, धारा 11 की उप-धारा (4) का किसी धर्मार्थ न्यास या संस्था के अंतर्गत आने के मामले में कोई अनुप्रयोग नहीं होगा।

'धर्मार्थ उद्देश्य' के पहले तीन प्रमुखों में से कोई भी।इसी तरह, राजस्व की ओर से किए गए निर्माण पर, 'धर्मार्थ उद्देश्य' के अंतिम शीर्ष के तहत आने वाले धर्मार्थ न्यास या संस्थान के मामले में भी इसका कोई ई लागू नहीं होगा क्योंकि राजस्व की व्यवस्था के अनुसार, भले ही कोई व्यवसाय सामान्य सार्वजनिक उपयोगिता के किसी उद्देश्य को बढ़ावा देने के लिए किसी धर्मार्थ न्यास या संस्था द्वारा न्यास के तहत आयोजित किया जाता है, ऐसे व्यवसाय से होने वाली आय को छूट नहीं दी जाएगी क्योंकि उद्देश्य धर्मार्थ होना बंद हो जाएगा।इस प्रकार, राजस्व की ओर से 'एफ' के लिए प्रतिवाद किए गए निर्माण का प्रभाव धारा 11 की उप-धारा (4) को धारा के अधिनियमन के बाद पूरी तरह से निरर्थक बनाने का होगा।13 (1) (बीबी)।हम नहीं सोचते, हम ऐसे निर्माण को स्वीकार कर सकते हैं जो

जेएमए

अधिनियम के प्रावधान को अनावश्यक बनाता है और इसे मौन कर देता है।यदि व्याख्या का एक नियम किसी अन्य की तुलना में अधिक अच्छी तरह से स्थापित है, तो यह है कि यदि किसी वैधानिक प्रावधान की भाषा अस्पष्ट है और दो निर्माणों में सक्षम है, तो उस निर्माण को अपनाया जाना चाहिए जो अधिनियम के अन्य प्रावधानों को अर्थ और प्रभाव देगा, न कि जो कुछ भी नहीं देगा।हम धारा 2 खंड (15) का जो निर्माण कर रहे हैं, वह धारा के अधिनियमन के बावजूद धारा 11 उप-धारा (4) के संचालन का एक निश्चित क्षेत्र छोड़ देता है।

{

एन.

(1) 7 आई. टी. आर. 415.

(2) 32 आई. टी. आर 535

(3) 53 आई. टी. आर 176

f 802-6।पाल

आय आयोग-टैक्स वी. सूरट आर्ट सिल्क 101

(भगवती, जे.)

13 (1) (bb) और इसलिए, हमें किसी भी स्थिति में उस अर्थ को पसंद करना चाहिए

राजस्व की ओर से प्रस्तुत किए गए को।

तथापि, हमें भारतीय वाणिज्य मंडल बनाम में इस न्यायालय के निर्णय का उल्लेख करना चाहिए।आय-कर आयुक्त (1) क्योंकि यह वह निर्णय है जिस पर राजस्व की ओर से सबसे अधिक निर्भरता रखी गई थी।उस मामले बी में निर्णय के लिए जो सवाल उठा वह यह था कि क्या भारतीय वाणिज्य मंडल द्वारा प्राप्त आय

चैंबर द्वारा लगाए गए मध्यस्थता शुल्क से, मूल प्रमाण पत्र जारी करने के लिए एकत्र किए गए शुल्क और तौल और माप के प्रमाण पत्र जारी करने के लिए लाभ के हिस्से को अधिनियम की धारा 2 खंड (15) के साथ पठित धारा 1 के तहत कर से छूट दी गई थी।इंडियन चैंबर ऑफ कॉमर्स (इसके बाद निर्धारिती के रूप में संदर्भित) सी का तर्क था कि इसके उद्देश्य मुख्य रूप से भारतीय व्यापार हितों और अन्य संबद्ध सेवा संचालन का प्रचार और संरक्षण थे और वे "सामान्य सार्वजनिक उपयोगिता के किसी अन्य उद्देश्य की उन्नति" अभिव्यक्ति के व्यापक दायरे में आते थे और इसलिए इसका उद्देश्य धारा 2 खंड (15) के अर्थ के भीतर धर्मार्थ था और इसकी आय को धारा 11 के तहत कर से छूट दी गई थी।दूसरी ओर, राजस्व ने कहा कि हालांकि निर्धारिती के उद्देश्य "सामान्य सार्वजनिक उपयोगिता के किसी अन्य उद्देश्य की प्रगति" अभिव्यक्ति द्वारा कवर किए गए थे, लेकिन निर्धारिती की गतिविधियाँ जो आय अर्जित करती थीं, वे लाभ के लिए की जाती थीं और निर्धारिती के इन उद्देश्यों की प्रगति या उपलब्धि, इसलिए, लाभ के लिए गतिविधियों को जारी रखना शामिल था और इसलिए उद्देश्य को धर्मार्थ नहीं कहा जा सकता था और इन गतिविधियों से होने वाली आय को कर से मुक्त नहीं माना जा सकता था।इन प्रतिद्वंद्वी दलीलों ने धारा 2 खंड (15) की व्याख्या का वही सवाल उठाया, जो वर्तमान मामले में उत्पन्न हुआ है।कृष्ण अय्यर, जे. ने न्यायालय की ओर से बोलते हुए धारा 2 खंड (15) में प्रयुक्त भाषा की अस्पष्टता और जटिलता पर खेद व्यक्त किया-एफ के साथ एक भावना जो हम पूरी तरह से सहमत हैं- और प्रावधान के इतिहास का उल्लेख करने के बाद विद्वान न्यायाधीश ने यह समझाने के लिए आगे बढ़े कि उनके अनुसार खंड में अंतिम समापन शब्दों की सही व्याख्या क्या थी।

2 खंड (15)।विद्वान न्यायाधीश ने कहाः

4

" इस प्रकार, एक संस्था जो धर्मार्थ कार्य करती है

जी.

आय से बाहर के उद्देश्य "के तहत आयोजित संपत्ति से व्युत्पन्न"

पूरी तरह से धर्मार्थ उद्देश्यों के लिए न्यास "अभी भी ऐसी आय या आय के संबंध में छूट के दावे को जब्त कर सकता है जो हो सकता है

लाभ के लिए किसी भी गतिविधि को आगे बढ़ाने से इसे प्राप्त करें।ध्यान देने योग्य

अस्पष्टता और दोहरे अर्थ की संभावना

जब धारा 2 (15) में उपयोग किए गए "उन्नति" से "वस्तु" एच पर जोर दिया जाता है, तो हम अपने दिमाग में स्पष्ट होते हैं कि

(1) 101 एल टी आर 196.

[1980] 2 एस सी आर।

सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट

102

नई परिभाषा कुल आय से बहिष्करण का लाभ है

क.

जिसमें एक धर्मार्थ उद्देश्य को पूरा करने के लिए संस्था लाभ के लिए गतिविधियों में खुद को संलग्न करती है।कलकत्ता के निर्णय लाभ के लिए गतिविधियों को उद्देश्य के एडवन सीमेंट से जोड़ने के लिए सही हैं।यदि आप कराधान से मुक्ति चाहते हैं, तो आपके धर्मार्थ उद्देश्यों को पूरा करने के लिए, लाभ कमाने वाले उद्यमों से मुक्त होना चाहिए।सामान्य सार्वजनिक उपयोगिता के उद्देश्य की प्रगति में लाभ के लिए किसी भी गतिविधि को जारी रखना शामिल नहीं होना चाहिए।यदि ऐसा होता है, तो आप हार जाते हैं।केरल के निर्णय सार्वजनिक उपयोगिता के उद्देश्यों और की गई गतिविधि को जोड़ने पर जोर देने की भ्रांति में आते हैं।उस दृष्टिकोण के अनुसार, जो भी गतिविधि हो, यदि वह आपस में जुड़ी हुई है, तो उसे धर्मार्थ उद्देश्य के उद्देश्य से लपेटा जाता है या उलझाया जाता है, भले ही लाभ का परिणाम हो, इससे कराधान से छूट अभी भी उपलब्ध है।इसके परिणामस्वरूप बेतुके निष्कर्ष निकलेंगे। आइए हम एक चेनबर ऑफ कॉम मर्से के मामले को लेते हैं जो डी व्यापारिक समुदाय के सामान्य हितों को बढ़ावा देने का प्रयास करता है।यदि यह निर्माताओं के लाभ के लिए कुछ विशेष प्रकार की सेवाएं चलाता है और उनसे पारिश्रमिक लेता है, तो यह निस्संदेह एक ऐसी गतिविधि है जिसे यदि निजी एजेंसियों द्वारा चलाया जाता है, तो यह कर योग्य होगी।चैंबर को आय करने के लिए छूट क्यों दी जानी चाहिए

:एल.

अन्य लोगों के हाथों में कौन से तरीके कर के लिए उपयुक्त होते?यह इस निष्कर्ष पर पहुंचता है कि वाणिज्य मंडल एक मुद्रणालय चला सकता है, व्यापार, बाजार अन्वेषण गतिविधि या यहां तक कि निर्यात संवर्धन व्यवसाय का विज्ञापन कर सकता है और अपने ग्राहकों से भारी राशि वसूल कर सकता है, चाहे वे संगठन के सदस्य हों या नहीं और फिर भी इस आधार पर कर से पूरी छूट का दावा करता है कि सामान्य सार्वजनिक उपयोगिता के उद्देश्य जो उसने अपने लिए निर्धारित किए हैं, इन गतिविधियों को लागू करते हैं, भले ही उनसे लाभ या अधिशेष उत्पन्न हो सकते हैं।इसलिए, सार्वजनिक उपयोगिता के उद्देश्य और लाभ के लिए संबंधित गतिविधि को जारी रखने पर जोर नहीं दिया जाता है।दूसरी ओर, यदि इन वस्तुओं की प्रगति में कक्ष गतिविधियों को जारी रखने का सहारा लेता है

}

जी.

लाभ, तब अनिवार्य रूप से धारा 2 (15) सुरक्षा प्रदान नहीं कर सकती है।

धर्मार्थ उद्देश्यों की उन्नति में लाभ कमाने की गतिविधियाँ शामिल नहीं होनी चाहिए।यही नए संशोधन का अधिदेश है।

इस प्रकार यह देखा जाएगा कि न्यायमूर्ति कृष्ण अय्यर ने एच. राजस्व के इस तर्क को स्वीकार कर लिया कि सामान्य सार्वजनिक उपयोगिता के किसी उद्देश्य को पूरा करने या पूरा करने के साधन में लाभ के लिए किसी भी गतिविधि को जारी रखना या विद्वान न्यायाधीश के शब्दों का उपयोग करना शामिल नहीं होना चाहिए।

सूरट आर्ट सिल्क 103

(भगवती, जे.)

1

लाभ कमाने वाले उद्यमों द्वारा "और भले ही कोई व्यवसाय ट्रस्ट या संस्था द्वारा लाभ अर्जित करने के लिए चलाया जाता है, जिसे पूरी तरह से सामान्य सार्वजनिक उपयोगिता के उद्देश्य के लिए लागू किया जाता है, ट्रस्ट या संस्था कर से छूट के दावे को जब्त कर लेगी।उनके द्वारा लिया गया विचार यह था कि छूट का लाभ वहाँ लिया जाएगा जहाँ सामान्य सार्वजनिक उपयोगिता के किसी उद्देश्य को पूरा करने या पूरा करने में, न्यास या संस्था लाभ के लिए गतिविधि में संलग्न होती है या दूसरे शब्दों में, न्यास या संस्थान को सामान्य सार्वजनिक उपयोगिता के उद्देश्य को पूरा करने या प्राप्त करने के उद्देश्य से लाभ के लिए किसी गतिविधि को जारी रखने का सहारा नहीं लेना चाहिए।यह दृष्टिकोण स्पष्ट रूप से हमारी स्वीकृति के लिए राजस्व की ओर से प्रचार किए गए निर्माण का समर्थन करता है, लेकिन, उन विद्वान न्यायाधीशों के प्रति सबसे बड़े सम्मान के साथ जिन्होंने भारतीय चैंबर ऑफ गवर्नेंस का फैसला किया।

वाणिज्य मामला, हम सोचते हैं, पहले से ही चर्चा किए गए कारणों के लिए, कि यह दृष्टिकोण गलत है और हम इसे स्वीकार नहीं कर सकते।

हम पहले ही धारा 2 खंड (15) की भाषा की जांच कर चुके हैं और यह इंगित कर चुके हैं कि कैसे उस परिभाषा खंड में विधानमंडल द्वारा उपयोग किए गए शब्दों का सादा प्राकृतिक अर्थ निम्नलिखित के अनुरूप नहीं है -

राजस्व का विवाद।हमने इस विषय पर काफी कुछ कहा है और।इसके बारे में और कुछ कहने की जरूरत नहीं है।यह इंगित करने के लिए पर्याप्त है कि आयकर आयुक्त बनाम धर्मो दयान कंपनी (1) में एक बाद के निर्णय में, जो केरल उच्च न्यायालय के निर्णय से एक अपील के माध्यम से आया था, इस न्यायालय ने स्वयं, प्रभावी और सार रूप में, इस दृष्टिकोण से अलग हो गया है और उसी निर्माण को अपनाया है जिसने हमारी सराहना की है।इस मामले में जो सवाल उठा वह यह था कि क्या निर्धारिती द्वारा किए गए कुरियों के संचालन के व्यवसाय से होने वाली आय को कर से छूट दी गई थी।राजस्व का तर्क था कि चूंकि निर्धारिती सामान्य सार्वजनिक उपयोगिता के उद्देश्य को बढ़ावा देने के लिए स्थापित एक संस्था थी और इस उद्देश्य को एफ कुरी के संचालन के व्यवसाय की आय से प्राप्त करने की कोशिश की गई थी, इसलिए धारा 2 खंड (15) के अंतिम समापन शब्दों को आकर्षित किया गया था और निर्धारिती की आय को कर से छूट से वंचित कर दिया गया था।हालाँकि, इस तर्क को केरल उच्च न्यायालय द्वारा खारिज कर दिया गया था, जिसने यह विचार रखा था कि कुरियों के संचालन का व्यवसाय गधों के धर्मार्थ उद्देश्य के लिए अपनी आय को लागू करने के लिए ट्रस्ट के तहत आयोजित किया गया था और उस चैरिट जी सक्षम उद्देश्य की प्रगति के मामले के रूप में नहीं किया गया था और इसलिए यह कहना संभव नहीं था कि निर्धारिती के उद्देश्य में लाभ के लिए एक गतिविधि को जारी रखना शामिल था ताकि धारा 2 खंड (15) में अंतिम कुछ शब्दों की शरारत को आकर्षित किया जा सके।कृष्ण अय्यर, जे. ने भारतीय वाणिज्य मंडल मामले में, धर्मोदय मामले में केरल उच्च न्यायालय के फैसले पर चर्चा करते हुए, धारा 2 खंड (15) में अंतिम समापन शब्दों एच पर उनके द्वारा दी गई व्याख्या के अनुरूप, कहा कि निर्णय

}

(1) 109 आई. टी. आर 527

[1980] 2 एस सी आर।

सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट

104

इस मामले में केरल उच्च न्यायालय का ए गलत परीक्षण पर आगे बढ़ा और इसलिए, निहित रूप से गलत निर्णय लिया गया।लेकिन इस अदालत ने केरल उच्च न्यायालय के फैसले की अपील का निपटारा करते हुए न्यायमूर्ति कृष्ण अय्यर द्वारा लिए गए विचार से अलग रुख अपनाया और केरल उच्च न्यायालय के न्यायाधीश को बरकरार रखा।इस न्यायालय ने बताया कि धर्मोदयान मामले के तथ्य न्यायमूर्ति कृष्ण अय्यर के समक्ष नहीं थे और केरल उच्च न्यायालय द्वारा लागू बी परीक्षण को उनके द्वारा इस धारणा पर गलत माना गया था कि मामला धारा 2 खंड (15) के अंतिम खंड के तहत आता है, लेकिन वास्तव में, यह धारणा अमान्य थी, क्योंकि धर्मोदयान मामला परिभाषा खंड के अंतिम भाग के तहत नहीं आता था।केरल उच्च न्यायालय का निष्कर्ष यह था कि कुरियों के संचालन का व्यवसाय एक ऐसा व्यवसाय था जो न्यास के तहत अपनी आय को 'ग' धर्मार्थ उद्देश्य पर लागू करने के लिए आयोजित किया जाता था और इसे न्यास के प्राथमिक उद्देश्य के लिए या ऐसे उद्देश्य को पूरा करने के क्रम में अग्रिम रूप से नहीं चलाया जाता था और इसलिए यह नहीं कहा जा सकता था कि न्यास के प्राथमिक उद्देश्य में धारा 2 खंड (15) के अंतिम समापन शब्दों के अर्थ के भीतर लाभ के लिए एक गतिविधि को जारी रखना शामिल था।इस प्रकार इस न्यायालय ने बिना किसी अनिश्चित शर्तों के अभिनिर्धारित किया कि यदि कोई व्यवसाय डी सामान्य सार्वजनिक उपयोगिता के किसी उद्देश्य को बढ़ावा देने के लिए अपनी आय को लागू करने के लिए न्यास या कानूनी दायित्व के तहत आयोजित किया जाता है या यह लाभ अर्जित करने के उद्देश्य से किया जाता है जिसका उपयोग विशेष रूप से ऐसे धर्मार्थ उद्देश्य को पूरा करने के लिए किया जाता है, तो धारा 2 खंड (15) के अंतिम समापन शब्दों का कोई अनुप्रयोग नहीं होगा और वे न्यास या संस्था को उसके धर्मार्थ चरित्र से वंचित नहीं करेंगे।ये अंतिम निष्कर्ष क्या हैं?

ई.

शब्दों की आवश्यकता यह नहीं है कि ट्रस्ट या संस्था जिसका उद्देश्य सामान्य सार्वजनिक उपयोगिता के उद्देश्य को आगे बढ़ाना है, उसे लाभ के लिए कोई गतिविधि नहीं करनी चाहिए, बल्कि यह कि ट्रस्ट या संस्था के उद्देश्य में लाभ के लिए कोई गतिविधि करना शामिल नहीं होना चाहिए।जब तक उद्देश्य में लाभ के लिए किसी भी गतिविधि को जारी रखना शामिल नहीं है, तब तक परिभाषा की आवश्यकता को पूरा किया जाएगा और इस बात से कोई फर्क नहीं पड़ता कि इस तरह के उद्देश्य को प्राप्त करने या

लागू करने के लिए धन कैसे पाया जाता है, चाहे वह लाभ के लिए किसी गतिविधि को जारी रखना हो या नहीं।हम यह इंगित कर सकते हैं कि एकमात्र न्यासी लोकशिक्षा न्यास बनाम।आयकर (1) के मिशनर, एक निर्णय जो, जैसा कि हम वर्तमान में इंगित करेंगे, एक अन्य बिंदु पर हमारे लिए स्वयं की सराहना नहीं करता है, उसी जी व्याख्या को इस न्यायालय द्वारा स्वीकार कर लिया गया है।

फिर हमें इस बात पर विचार करने के लिए आगे बढ़ना चाहिए कि इस अनुरोध का क्या अर्थ है कि जहां किसी न्यास या संस्था का उद्देश्य सामान्य सार्वजनिक उपयोगिता के उद्देश्य से है, तो ऐसा उद्देश्य लाभ के लिए किसी भी गतिविधि को आगे बढ़ाने के लिए नहीं होना चाहिए।सवाल यह है कि

एच इस उद्देश्य के लिए पूछा जाना आवश्यक है कि किसी न्यास या संस्था के उद्देश्य को किसी गतिविधि को जारी रखना कब शामिल कहा जा सकता है (1) [1975] 101 आई. टी. आर. 234 (एस. सी.)।

27.टीएम

आय आयोग-टैक्स वी. सूरट आर्ट सिल्क 105

(भगवती, जे.)

लाभ के लिए एम।शेरटर ऑक्सफोर्ड डिक्टियो नेरी के अनुसार "शामिल" शब्द "किसी भी चीज़ में लपेटने के लिए, मोड़ने या ढकने के लिए; समाहित करने के लिए या प्रवाहित करने के लिए" है।लाभ के लिए गतिविधि, इसलिए, ट्रस्ट या संस्था के उद्देश्य के साथ अंतर्निहित या निहित या निहित होनी चाहिए या दूसरे शब्दों में यह ऐसे उद्देश्य का एक अभिन्न अंग होना चाहिए।लेकिन फिर से सवाल यह है कि हम इन मौखिक लेबलों से क्या समझते हैं।या सूत्र यह वास्तव में क्या है कि वे जानते हैं?अब निर्माण की इस समस्या को देखने के दो संभावित तरीके हैं।एक अंतर बहाना यह है कि परिभाषा के अनुसार जो आवश्यक है वह यह है कि उद्देश्य ऐसी प्रकृति का होना चाहिए कि इसमें लाभ के लिए किसी भी गतिविधि को इस अर्थ में करना शामिल हो कि इसे लाभ के लिए किसी गतिविधि को करने से प्राप्त नहीं किया जा सकता है।इस दृष्टिकोण से, यदि उद्देश्य

ग

न्यास या संस्था को लाभ के लिए किसी गतिविधि में संलग्न किए बिना प्राप्त किया जा सकता है, यह नहीं कहा जा सकता है कि उद्देश्य में लाभ के लिए किसी गतिविधि को जारी रखना शामिल है।उदाहरण के लिए एक ऐसे मामले को लें जहां खेलों को बढ़ावा देने के लिए किसी ट्रस्ट या संस्थान की स्थापना की जाती है, बिना किसी विशिष्ट तरीके को निर्धारित किए जिसके द्वारा इस उद्देश्य को प्राप्त करने का इरादा है।अब स्पष्ट रूप से खेलों को बढ़ावा मुफ्त प्रवेश या बिना लाभ के नुकसान के आधार पर क्रिकेट मैचों का आयोजन करके प्राप्त किया जा सकता है और समान रूप से इसे लाभ अर्जित करने के प्रमुख उद्देश्य के साथ क्रिकेट मैचों का आयोजन करके प्राप्त किया जा सकता है।क्या ऐसे मामले में यह कहा जा सकता है कि न्यास या संस्था के उद्देश्य में लाभ के लिए किसी गतिविधि को जारी रखना शामिल नहीं है, क्योंकि खेलों का प्रचार लाभ के लिए किसी गतिविधि में शामिल हुए बिना किया जा सकता है।यदि यह व्याख्या सही थी, तो किसी न्यास या संस्थान के लिए यह उल्लेख नहीं करना सबसे आसान होगा कि जिस उद्देश्य के लिए इसे स्थापित किया गया है, उसे कैसे पूरा किया जाएगा और फिर वास्तव में ऐसे उद्देश्य को पूरा करने के क्रम में लाभ के लिए किसी गतिविधि में खुद को संलग्न करें और इस तरह कर के दायित्व से बचें।यह बहुत संकीर्ण व्याख्या होगी जो "लाभ के लिए किसी भी गतिविधि को जारी रखने से संबंधित नहीं" शब्दों को पेश करने के उद्देश्य को विफल कर देगी।हम ऐसी संरचना को स्वीकार नहीं कर सकते हैं जो इन अंतिम समझौतों को समाप्त कर दे।

}

शब्दों को दबाना और उन्हें अर्थहीन और अप्रभावी बनाता है।दूसरी व्याख्या यह देखने के लिए है कि क्या न्यास या संस्था के उद्देश्य में वास्तव में किसी गतिविधि को जारी रखना शामिल है।

लाभ या दूसरे शब्दों में, क्या लाभ के लिए कोई गतिविधि वास्तव में उद्देश्य के एक अभिन्न अंग के रूप में की जाती है या चंद्रचूड़, जे. के शब्दों का उपयोग करने के लिए, जैसा कि वे उस समय धर्मोदय के मामले में थे, "उद्देश्य की प्रगति के मामले के रूप में"। लाभ के लिए एक गतिविधि होनी चाहिए और यह न्यास या संस्था के उद्देश्य को पूरा करने में शामिल होनी चाहिए या इसे अलग तरीके से रखने के लिए, इसे एच में उद्देश्य को आगे बढ़ाने के लिए या न्यास या संस्था के उद्देश्य को पूरा करने के क्रम में किया जाना चाहिए।यह तब है कि का अवरोध

एक अपवर्जन खंड आकर्षित किया जाएगा।यह हमें एक अधिक प्रशंसनीय रचना प्रतीत होती है जो विधायिका द्वारा जोड़े गए अंतिम समापन शब्दों को अर्थ और प्रभाव देती है और हम इसे स्वीकार करना पसंद करते हैं।बेशक, एक योग्यता है जिसका यहां उल्लेख किया जाना चाहिए और यह है कि यदि किसी न्यास या संस्थान के गठन में स्पष्ट रूप से यह प्रावधान किया गया है कि उद्देश्य एक ऐसी गतिविधि बी में शामिल होकर किया जाएगा जिसका मुख्य लाभ उद्देश्य है, उदाहरण के लिए, जहां उद्देश्य विशेष रूप से लाभ कमाने की दृष्टि से वाणिज्यिक आधार पर क्रिकेट मैचों का आयोजन करके खेलों को बढ़ावा देना कहा गया है, तो विवाद की कोई गुंजाइश नहीं होगी, क्योंकि इसके उद्देश्य में लाभ के लिए कोई गतिविधि करना शामिल होगा और यह गैर-धर्मार्थ होगा, भले ही वास्तव में लाभ के लिए कोई गतिविधि न हो।

ग

जारी रखा जाता है या, दिए गए उदाहरण में, वास्तव में कोई क्रिकेट मैच आयोजित नहीं किए जाते हैं।

अगला सवाल जो उठता है वह यह है कि "लाभ के लिए गतिविधि" अभिव्यक्ति का क्या अर्थ है।प्रत्येक न्यास या संस्थान का एक उद्देश्य होना चाहिए जिसके लिए यह स्थापित किया गया है और प्रत्येक उद्देश्य की पूर्ति के लिए एक गतिविधि को आगे बढ़ाना शामिल होना चाहिए।हालाँकि, बहिष्करण खंड को आकर्षित करने के लिए गतिविधि लाभ के लिए होनी चाहिए और इसलिए सवाल यह है कि किसी गतिविधि को लाभ के लिए कब कहा जा सकता है?सवाल का जवाब स्पष्ट रूप से "के लिए" प्रस्ताव के सही अर्थ पर निर्भर करता है।इस प्रस्ताव में अर्थ के कई रंग हैं लेकिन जब एक क्रिया के सक्रिय प्रतिभागी के साथ उपयोग किया जाता है तो इसका अर्थ "उद्देश्य के लिए" होता है और अंत को उस संदर्भ के साथ संदर्भित करता है जिसके लिए कुछ किया जाता है।इसलिए यह पर्याप्त नहीं है कि वास्तव में एक गतिविधि के परिणामस्वरूप लाभ होता है, लेकिन इसे लाभ अर्जित करने के उद्देश्य से जारी रखा जाना चाहिए।लाभ कमाना वह लक्ष्य होना चाहिए जिस पर गतिविधि को निर्देशित किया जाना चाहिए या दूसरे शब्दों में, गतिविधि का पूर्व मुख्य उद्देश्य लाभ कमाना होना चाहिए।जहाँ कोई गतिविधि लाभ के उद्देश्य से नहीं होती है, बल्कि मुख्य रूप से धर्मार्थ उद्देश्य की पूर्ति के लिए की जाती है, वहाँ इसे लाभ के लिए एक गतिविधि के रूप में वर्णित करना सही नहीं होगा।लेकिन जहां, दूसरी ओर, लाभ अर्जित करने के प्रमुख उद्देश्य के साथ कोई गतिविधि की जाती है, तो यह लाभ के लिए एक गतिविधि होगी, हालांकि इसे न्यास या संस्था के धर्मार्थ उद्देश्य की प्रगति में किया जा सकता है।कहाँ एक

धर्मार्थ उद्देश्य की प्रगति के मामले में या धर्मार्थ उद्देश्य को पूरा करने के उद्देश्य से गतिविधि की जाती है, साधारण अंग्रेजी व्याकरण के मामले के रूप में यह कहना गलत नहीं होगा कि धर्मार्थ उद्देश्य में ऐसी गतिविधि को जारी रखना शामिल है, लेकिन ऐसी गतिविधि का प्रमुख उद्देश्य धर्मार्थ उद्देश्य को पूरा करना होना चाहिए न कि लाभ अर्जित करना।धर्मार्थ उद्देश्य को लाभ कमाने के उद्देश्य से डूबा नहीं जाना चाहिएःउत्तरार्द्ध को पूर्व की आड़ में नकाब नहीं पहनना चाहिए।

ट्रस्ट, जैसा कि हम में से एक (पाठक, जे.) ने मेसर्स धर्मोदिप्ति बनाम में बताया है।एक आयकर आयुक्त, केरल (ऊपर) को अनिवार्य रूप से होना चाहिए

प्रकृति में धर्मार्थ "और यह एक ऐसी गतिविधि को आगे बढ़ाने के लिए एक आवरण नहीं होना चाहिए जिसका प्रमुख उद्देश्य लाभ कमाना हो।धारा 2 खंड (15) में अपवर्जन खंड की इस व्याख्या को वित्त द्वारा दिए गए भाषण से काफी समर्थन प्राप्त होता है।मंत्री उस प्रावधान को पेश करते हुए।वित्त मंत्री 4 ने इस बहिष्करण खंड को पेश करने का कारण समझाया

निम्नलिखित शब्द;

" उस खंड में "धर्मार्थ उद्देश्य" की परिभाषा वर्तमान में इतनी व्यापक रूप से लिखी गई है कि इसका लाभ वाणिज्यिक संस्थाओं द्वारा भी उठाया जा सकता है, जो सार्वजनिक उद्देश्य की पूर्ति करते हुए भी प्रदान किए गए लाभों के लिए पूरी तरह से भुगतान प्राप्त करते हैं।

ग

उनके द्वारा, समाचार पत्र उद्योग जो चल रहा है

वाणिज्यिक आधार पर अपनी चिंता व्यक्त करते हुए यह दावा किया जा सकता है कि

समाचार पत्रों को प्रसारित करने से जनता के सामान्य ज्ञान में सुधार हो रहा था।ऐसे मामलों में इस परिभाषा के दुरुपयोग को रोकने के लिए, प्रवर समिति ने महसूस किया कि

डी.

शब्द "जिसके लिए किसी भी गतिविधि को जारी रखना शामिल नहीं है

लाभ को परिभाषा में जोड़ा जाना चाहिए।

यह स्पष्ट है कि बहिष्करण खंड को ट्रिब्यून मामलों में प्रिवी के निर्णय को खत्म करने के लिए जोड़ा गया था, जहां यह माना गया था कि समाचार पत्र के प्रकाशन द्वारा समुदाय को शिक्षित जनमत के एक अंग की आपूर्ति करने का उद्देश्य सामान्य सार्वजनिक उपयोगिता का उद्देश्य था और इसलिए चरित्र में धर्मार्थ था, भले ही समाचार पत्र के प्रकाशन की गतिविधि लाभ अर्जित करने के उद्देश्य से वाणिज्यिक आधार पर की गई थी।समाचार पत्र का प्रकाशन न्यास द्वारा अपने धर्मार्थ उद्देश्य को पूरा करने के उद्देश्य से की जाने वाली एक गतिविधि थी और तथ्यों के आधार पर यह स्पष्ट रूप से एक ऐसी गतिविधि थी जिसका प्रमुख उद्देश्य लाभ कमाना था, लेकिन फिर भी न्यायिक समिति द्वारा यह अभिनिर्धारित किया गया था कि चूंकि परोसी जाने वाली मुद्रा सामान्य सार्वजनिक उपयोगिता का उद्देश्य थी, इसलिए यह एक धर्मार्थ उद्देश्य था।वित्त मंत्री के भाषण से यह स्पष्ट है कि

न.

इस निर्णय को शून्य करने के उद्देश्य से 'धर्मार्थ उद्देश्य' की परिभाषा में अपवर्जन खंड जोड़ा गया था।इसलिए, अब जो परीक्षा लागू की जानी है, वह यह है कि क्या सामान्य सार्वजनिक उपयोगिता के उद्देश्य को पूरा करने में शामिल गतिविधि का पूर्ववर्ती उद्देश्य धर्मार्थ उद्देश्य को कम करना है या अर्जित करना है, जहां गतिविधि का प्रमुख उद्देश्य लाभ है।, यद्यपि सामान्य सार्वजनिक उपयोगिता का एक उद्देश्य, उद्देश्य धर्मार्थ उद्देश्य को समाप्त कर देगा।लेकिन जहाँ का प्रमुख उद्देश्य एक एच होना है

$

धर्मार्थ उद्देश्य के लिए और लाभ अर्जित करने के लिए नहीं, गतिविधि केवल एक धर्मार्थ उद्देश्य के अपने चरित्र को खोने के लिए है क्योंकि यह अदालत की रिपोर्ट का समर्थन नहीं करेगा।

[1980] 2 एस सी आर।

108

गतिविधि से कुछ लाभ होता है।किसी भी खंड के अपवर्जन के लिए यह आवश्यक नहीं है कि गतिविधि को इस तरह से चलाया जाना चाहिए कि इससे कोई लाभ न हो।वास्तव में किसी न्यास या संस्था के प्रभारी प्रति पुत्र के लिए ऐसी गतिविधि को जारी रखना अक्षम होगा जो

3

व्यय आय को संतुलित करता है और कोई परिणामी लाभ नहीं होता है।यह न केवल व्यावहारिक प्राप्ति के लिए कठिन होगा, बल्कि बी प्रबंधन के अनुचित सिद्धांत को भी प्रतिबिंबित करेगा।इसलिए हम बेग से सहमत हैं।जे. जब उन्होंने एकमात्र न्यासी, लोक शिक्षा न्यास मामले (उपरोक्त) में कहा कि "यदि लाभ को न्यास की शर्तों के तहत एक धर्मार्थ उद्देश्य को पूरा करना आवश्यक है, तो केवल यह तथ्य कि न्यास की गतिविधियों से लाभ प्राप्त होता है, न्यास के धर्मार्थ चरित्र को नहीं बदलेगा। अब परीक्षा, अतीत की तुलना में अधिक स्पष्ट रूप से, विशेष रूप से या अनिवार्य रूप से दान पर धन खर्च करने के लिए बनाए गए दायित्व द्वारा परीक्षण की गई शुद्ध मुद्रा की वास्तविकता है।"विद्वान न्यायाधीश ने यह भी कहा कि "इस उद्देश्य को लाभ के लिए किसी भी गतिविधि को जारी रखना शामिल नहीं होना चाहिए, यह शर्त तब पूरी होगी जब लाभ कमाना वास्तविक उद्देश्य नहीं है" (जोर दिया गया)।हम इन प्रेक्षणों का पूरी तरह से समर्थन करते हैं।

इस परीक्षण के अनुप्रयोग को एक सरल उदाहरण लेकर स्पष्ट किया जा सकता है।मान लीजिए कि गांधी शांति फाउंडेशन, जिसे गांधीवादी विचार और दर्शन के प्रचार के लिए स्थापित किया गया है, जो निश्चित रूप से सामान्य सार्वजनिक उपयोगिता का एक उद्देश्य होगा, ई के तहत इस धर्मार्थ उद्देश्य को पूरा करने के उद्देश्य से एक मासिक पत्रिका का प्रकाशन करता है और एक छोटी सी कीमत लेता है जो प्रकाशन की लागत से अधिक है और थोड़ा लाभ छोड़ता है, तो क्या यह गांधी शांति फाउंडेशन को उसके धर्मार्थ चरित्र से वंचित कर देगा?मासिक पत्रिका का मूल्य निर्विवाद रूप से इस तरह से निर्धारित किया जाएगा कि यह गांधी शांति फाउंडेशन के लिए कुछ लाभ छोड़ता है, वास्तव में,

च

कोई भी विवेकपूर्ण और बुद्धिमान प्रबंधन किया जाएगा, लेकिन इसका उद्देश्य के धर्मार्थ चरित्र को प्रदूषित करने का प्रभाव नहीं हो सकता है, क्योंकि मासिक पत्रिका के प्रकाशन की गतिविधि का प्रमुख उद्देश्य गांधीवादी विचार और दर्शन को बढ़ावा देकर धर्मार्थ उद्देश्य को पूरा करना होगा और लाभ या जी दूसरे शब्दों में, लाभ कमाना इस गतिविधि के पीछे प्रेरक शक्ति नहीं होगी।लेकिन यह संभव है कि किसी मामले में लाभ कमाने की मात्रा या सीमा ऐसी प्रकृति की हो कि यथोचित रूप से इस हस्तक्षेप की ओर ले जाए कि गतिविधि का वास्तविक उद्देश्य लाभ है।

धर्मार्थ उद्देश्य को बनाना और उसकी सेवा नहीं करना।यदि, उदाहरण के लिए, हमारे द्वारा दिए गए चित्रण में, यह पाया जाता है कि मासिक द्वितीय पत्रिका का प्रकाशन पूरी तरह से वाणिज्यिक आधार पर किया जाता है और मासिक पत्रिका का मूल्य निर्धारण उसी आधार पर किया जाता है जिस आधार पर एक वाणिज्यिक संगठन द्वारा लाभ का एक बड़ा अंतर छोड़ते हुए किया जाता है।

आय आयोग-टैक्स वी. सूरट आर्ट सिल्क 109

(भगवती, जे.)

इस निष्कर्ष का विरोध करना मुश्किल हो सकता है कि पत्रिका के प्रकाशन की गतिविधि लाभ के लिए की जाती है और इसका उद्देश्य गैर-धर्मार्थ है।हम इंडियन चैंबर ऑफ कॉमर्स मामले में न्यायमूर्ति कृष्ण अय्यर द्वारा दिए गए एक और उदाहरण को उदाहरण के रूप में ले सकते हैं, जहां एक रक्त बैंक भुगतान पर रक्त एकत्र करता है और वाणिज्यिक आधार पर अधिक कीमत पर रक्त की आपूर्ति करता है।निस्संदेह, ऐसे मामले में, रक्त बैंक सामान्य सार्वजनिक उपयोगिता के उद्देश्य की पूर्ति करेगा, लेकिन बी चूंकि यह लाभ कमाने के उद्देश्य से की जाने वाली गतिविधि के रूप में रक्त की बिक्री द्वारा धर्मार्थ उद्देश्य को आगे बढ़ाता है, इसलिए इसके उद्देश्य को धर्मार्थ कहना मुश्किल होगा।आम तौर पर यह निर्धारित करने में कोई कठिनाई नहीं होनी चाहिए कि किसी गतिविधि का प्रमुख उद्देश्य धर्मार्थ उद्देश्य का प्रचार करना है या लाभ कमाना है।लेकिन व्यवहार में सी मामले उत्पन्न होने के लिए बाध्य हैं जो सीमा रेखा पर हो सकते हैं और ऐसे मामलों में समस्या का समाधान चाहे उद्देश्य धर्मार्थ हो या नहीं, इसमें बहुत परिष्करण शामिल हो सकता है और वास्तविक कठिनाई पेश हो सकती है।

:

हालाँकि, एक टिप्पणी है जो इस बिंदु पर होने के दौरान की जानी चाहिए और जो कुछ टिप्पणियों से उत्पन्न होती है।

डी.

इस न्यायालय द्वारा सोल ट्रस्टी लोक शिक्षा ट्रस्ट मामले (उपरोक्त) के साथ-साथ इंडियन चैंबर ऑफ कॉमर्स मामले में किया गया। यह खन्ना, जे. ने सोल ट्रस्टी लोक शिक्षा ट्रस्ट मामलों में कहा था; (6)

..... यदि किसी न्यास की गतिविधि में व्यवसाय करना शामिल है और इसके निर्माण पर कोई प्रतिबंध नहीं है

3

लाभ, न्यायालय में मान लेने में अच्छी तरह से उचित होगा

ई.

इसके विपरीत कुछ संकेत की अनुपस्थिति कि ट्रस्ट के उद्देश्य में पेशेवर के लिए एक गतिविधि को जारी रखना शामिल है

फिट "।

और इसी प्रभाव के लिए, कृष्ण अय्यर, जे. ने इंडियन चैंबर ऑफ कॉमर्स मामले में कहा जब उन्होंने कहाः

" एक व्यावसायिक संगठन के लिए एक उपक्रम ऑर्डिना है।

जब तक स्पष्ट रूप से या आवश्यक रूप से लाभ के लिए ग्रहण नहीं किया जाता है

प्रभाव या आसपास की परिस्थितियों के विकास से

}

लाभ की कमाई जोर-शोर से नकारात्मक हो जाती है।

एक व्यावहारिक स्थिति, लिखित या अलिखित एक अध्यक्ष द्वारा साबित

जी.

आसपास की कुछ मजबूत परिस्थितियों से लाभ या लंबे वर्षों की अपरिवर्तनीय प्रथाओं या भावना का उल्लेख इंगित करता है।

लाभ-विरोधी अभिप्रेरणा की इस तरह की शर्त के लिए रद्द हो जाएगा

धर्मार्थ उद्देश्य।**

अब हम पूरी तरह से उन विद्वान न्यायाधीशों से सहमत हैं जिन्होंने इन दो मामलों का फैसला किया कि धर्मार्थ उद्देश्य को पूरा करने में शामिल गतिविधि होनी चाहिए

$

लाभ के उद्देश्य से प्रेरित नहीं होना चाहिए, बल्कि इसे उन्नति या धर्मार्थ उद्देश्य को पूरा करने के उद्देश्य से किया जाना चाहिए।

[1980] 2 एस सी आर।

सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट

110

लेकिन हमें उनके सिद्धांत को स्वीकार करना मुश्किल लगता है कि जब भी कोई ऐसी गतिविधि की जाती है जिससे लाभ होता है, तो इसके विपरीत कुछ संकेतों के अभाव में यह निष्कर्ष निकालना आवश्यक है कि गतिविधि लाभ के लिए है और धर्मार्थ उद्देश्य में लाभ के लिए किसी गतिविधि को जारी रखना शामिल है।हम नहीं सोचते कि न्यायालय का ऐसा कोई निष्कर्ष निकालना केवल इसलिए उचित होगा क्योंकि गतिविधि बी के परिणामस्वरूप लाभ होता है।हमारी राय में यह बिल्कुल भी आवश्यक नहीं है कि न्यास या संस्था के गठन में एक प्रावधान होना चाहिए कि गतिविधि बिना किसी लाभ-हानि के आधार पर की जाएगी या लाभ निर्धारित किया जाएगा।भले ही ऐसा कोई स्पष्ट प्रावधान न हो, धर्मार्थ उद्देश्य की प्रकृति, धर्मार्थ उद्देश्य को आगे बढ़ाने के लिए गतिविधि जिस तरह से की जा रही है और आसपास की परिस्थितियाँ स्पष्ट रूप से इंगित कर सकती हैं कि गतिविधि एक प्रमुख लाभ उद्देश्य से प्रेरित नहीं है।इस बात पर विचार करने की आवश्यकता है कि क्या मामले के सभी तथ्यों और परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए, गतिविधि का प्रमुख उद्देश्य लाभ कमाना या धर्मार्थ उद्देश्य को पूरा करना है।यदि यह पहला है, तो उद्देश्य एक धर्मार्थ उद्देश्य नहीं होगा, लेकिन यदि यह दूसरा है, तो उद्देश्य का धर्मार्थ चरित्र नष्ट नहीं होगा।

यदि हम इस परीक्षण को वर्तमान मामले में लागू करते हैं, तो यह स्पष्ट है कि विदेशी धागे के आयात के लिए लाइसेंस प्राप्त करने की गतिविधि और स्वदेशी धागे के शुद्ध पीछा करने के लिए कोटा, जो निर्धारिती द्वारा किया गया था, लाभ के लिए एक गतिविधि नहीं थी।इस गतिविधि का प्रमुख उद्देश्य कला रेशम धागे, कच्चे रेशम में वाणिज्य और व्यापार को बढ़ावा देना था। सूती धागे, कला रेशम कपड़े, रेशम के कपड़े और सूती कपड़े, जो स्पष्ट रूप से आम जनता की उपयोगिता का एक उद्देश्य था और लाभ केवल एक व्यापार था।

उप-उत्पाद जिसका परिणाम संयोग से धर्मार्थ उद्देश्य को पूरा करने की प्रक्रिया में हुआ।यह ध्यान रखना महत्वपूर्ण है कि निर्धारिती था

च

कंपनी अधिनियम, 1956 की धारा 25 के तहत केंद्र सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त कंपनी और उसके संगठन के ज्ञापन के तहत, निर्धारिती द्वारा की गई किसी भी गतिविधि से उत्पन्न लाभ पूरी तरह से और विशेष रूप से विभिन्न वस्तुओं में व्यापार और वाणिज्य को बढ़ावा देने के लिए लागू किया जा सकता था, जिसका हमने ऊपर उल्लेख किया है और ऐसे लाभ का कोई भी हिस्सा सदस्यों के बीच किसी भी रूप में या किसी भी भेष में वितरित नहीं किया जा सकता था।निर्धारिती के लाभ का उपयोग केवल इस धर्मार्थ उद्देश्य को पूरा करने के उद्देश्य से किया जा सकता है और निर्धारिती की गतिविधि का प्रमुख और वास्तविक उद्देश्य धर्मार्थ उद्देश्य की प्रगति है, केवल यह तथ्य कि गतिविधि से लाभ प्राप्त हुआ है, धर्मार्थ चरित्र को नहीं बदला है।

के

मूल्यांकनकर्ता।हमारा विचार है कि न्यायाधिकरण का यह विचार सही था कि जिस उद्देश्य के लिए निर्धारिती की स्थापना की गई थी, वह धारा 2 खंड (15) और 802-8 के अर्थ के भीतर एक धर्मार्थ उद्देश्य था।

टीएम

आय आयुक्त-कर v.सुराट आर्ट सिल्क 111

(पाठक, जे.)

निर्धारिती की आय को धारा के तहत कर से छूट दी गई थी।11. अतः, इन संदर्भों में से प्रत्येक में हमें निर्दिष्ट ए प्रश्न का उत्तर निर्धारिती के पक्ष में और राजस्व के विरुद्ध दिया जाना चाहिए।

राजस्व निर्धारिती की लागत का भुगतान दो रूपों में करेगा। एक संदर्भ मामले संख्या 1 ए/73 में और दूसरा संदर्भ कैस्क संख्या में।10-14 1975 से।

पाठक, जे. मेरे विद्वान भाई द्वारा तैयार किए गए निर्णय के लिए

भगवती, मैं एक अलग निर्णय जोड़ने का प्रस्ताव करता हूं, जो प्रश्न के पर्याप्त महत्व से प्रेरित है जो उत्पन्न होता है और कुछ अलग दृष्टिकोण के कारण जिसमें बिंदु मुझे दिखाई देता है।इन संदर्भों में विवाद एस द्वारा "धर्मार्थ उद्देश्य" अभिव्यक्ति की परिभाषा में "लाभ के लिए किसी भी गतिविधि को जारी रखना शामिल नहीं" शब्दों की सही व्याख्या पर केंद्रित है।2 (15) आयकर अधिनियम, 1961।

पूर्ववर्ती अधिनियम, भारतीय आयकर अधिनियम, 1922

विदेद, एस द्वारा।4 (3) ((i) न्यास के अधीन रखी गई संपत्ति से प्राप्त किसी भी आय के डी निर्धारिती की कुल आय से अपवर्जन के लिए या

पूरी तरह से धर्मार्थ उद्देश्यों के लिए अन्य कानूनी दायित्व।"धर्मार्थ उद्देश्य" शब्दों को "गरीबों की राहत, शिक्षा, चिकित्सा राहत और सामान्य सार्वजनिक उपयोगिता के किसी भी अन्य उद्देश्य की उन्नति" के रूप में परिभाषित किया गया था।

ई.

ऐसा प्रतीत होता है कि जिन शर्तों में लाभ प्रदान किया गया था, वे कर दाताओं के एक निश्चित वर्ग द्वारा इसके दुरुपयोग के खिलाफ प्रावधान करने के लिए पर्याप्त नहीं थे।अदालतों द्वारा प्रावधान की सामग्री को दिए गए न्यायिक निर्माण का लाभ उठाया गया था।बहुत पहले 1939 में, प्रिवी काउंसिल ने द ट्रस्टी ऑफ द ट्रिब्यून (1) में कहा था कि जनता को शिक्षित जनमत के एक अंग की आपूर्ति करने के लिए एक ट्रस्ट का उद्देश्य आम जनता के उपयोग का एक उद्देश्य है और यह एक धर्मार्थ उद्देश्य है।यह पाया गया कि समाचार पत्र और प्रेस वसीयतकर्ता या किसी अन्य व्यक्ति के निजी लाभ के लिए स्थापित नहीं किए गए थे।इस परिस्थिति में कि न्यास के उद्देश्य में एक वाणिज्यिक गतिविधि की परिकल्पना की गई थी, समाचार पत्र अपने पाठकों और विज्ञापनों से सामान्य वाणिज्यिक दरों पर शुल्क लेता था, इस निष्कर्ष से विचलित नहीं हुआ कि यह सामान्य सार्वजनिक उपयोगिता का उद्देश्य था।आयकर अधिनियम, 1961 को लागू करते समय, संसद ने "धर्मार्थ उद्देश्य" की परिभाषा में एक नया आयाम जोड़ा।एक प्रतिबंधात्मक खंड डाला गया है, और एस।2 (15) अधिनियम में "धर्मार्थ उद्देश्य" को परिभाषित किया गया है जिसमें "गरीबों की राहत, शिक्षा, चिकित्सा राहत, और आम जनता के उपयोग के किसी अन्य उद्देश्य को आगे बढ़ाना शामिल है (1) (1939) 7 एल. टी. आर. 115 सर्वोच्च न्यायालय रिपोर्ट।

पी.

[1980] 2 एस सी आर।

112

लाभ के लिए किसी भी गतिविधि को जारी रखना।वित्त मंत्री ने संसद में समझायाः

" प्रवर समिति का दूसरा उद्देश्य, छूट को केवल उन न्यासों और संस्थानों तक सीमित करना जिनका उद्देश्य एक वास्तविक धर्मार्थ उद्देश्य है, खंड 2 (15) में परिभाषा में संशोधन करके प्राप्त किया गया है।उस खंड में 'धर्मार्थ उद्देश्य' की परिभाषा वर्तमान में इतनी व्यापक रूप से लिखी गई है कि इसका लाभ वाणिज्यिक संस्थाओं द्वारा भी उठाया जा सकता है, जो सार्वजनिक उद्देश्य की पूर्ति करते हुए, उनके द्वारा प्रदान किए गए लाभों के लिए पूरी तरह से भुगतान प्राप्त करते हैं, अर्थात् समाचार पत्र उद्योग, जो अपनी चिंता को वाणिज्यिक आधार पर चलाते हुए यह दावा कर सकता है कि समाचार पत्रों को प्रसारित करके यह जनता के सामान्य ज्ञान में सुधार कर रहा था।ऐसे मामलों में इस परिभाषा के दुरुपयोग को रोकने के लिए, प्रवर समिति ने महसूस किया कि 'लाभ के लिए किसी भी गतिविधि को जारी रखने से संबंधित नहीं' शब्दों को परिभाषा में जोड़ा जाना चाहिए।

ग

डी.

नई योजना, "धर्मार्थ उद्देश्य" को फिर से परिभाषित करने के अलावा, एक अन्य बिंदु पर कर लाभ के अनुदान की सुरक्षा के लिए निर्देशित दूसरी सुरक्षा को जोड़ती है।प्रावधानों का एक नया समूह धर्मार्थ न्यास या संस्थान से प्राप्त संचित आय के उपयोग को नियंत्रित करता था।

एफ.

अधिनियम की धारा 11 ने अपने भौतिक प्रावधानों में, जैसा कि मूल रूप से बनाया गया था, घोषणा कीः

" (1) धारा 60 से 63 के प्रावधानों के अधीन, निम्नलिखित आय को आय की प्राप्ति में व्यक्ति की पिछले वर्ष की कुल आय में शामिल नहीं किया जाएगा।

(क) न्यास के अधीन रखी गई संपत्ति से प्राप्त आय

पूरी तरह से धर्मार्थ के लिए।

उद्देश्य, जिस हद तक

जिसे ऐसी आय भारत में ऐसे उद्देश्यों के लिए लागू की जाती है; और, जहां ऐसी कोई आय आवेदन के लिए जमा की जाती है

भारत में ऐसे प्रयोजन, जिसके लिए इस तरह से संचित आय संपत्ति से आय के पच्चीस प्रतिशत या दस हजार रुपये, जो भी अधिक हो, से अधिक न हो;

((ख) न्यास के अधीन आंशिक रूप से केवल ऐसे प्रयोजनों के लिए रखी गई संपत्ति से प्राप्त आय, न्यास इस अधिनियम के लागू होने से पहले बनाया गया था, इस हद तक कि

एचआई

एल.

ऐसी आय भारत में ऐसे उद्देश्यों के लिए लागू की जाती है; और जहां ऐसी कोई आय अंततः भारत में ऐसे उद्देश्यों के लिए लागू करने के लिए अलग रखी जाती है, उस सीमा तक जिस तक आय का आयुक्त इस प्रकार निर्धारित किया जाता है-कर v.

सुराट आर्ट सिल्क

113

(पाठक, जे.)

इसके अलावा आंशिक रूप से न्यास के तहत रखी गई संपत्ति से आय का पच्चीस प्रतिशत से अधिक नहीं है।

((ग)

(2) जहां आय की प्राप्ति करने वाले व्यक्तियों ने निम्नलिखित शर्तों का पालन किया है, वहां उप-धारा (1) के खंड (ए) या खंड (बी) में निर्दिष्ट प्रतिबंध इस प्रकार है -

सम्मान संचय या अलग करना इसके लिए लागू नहीं होगा

वह अवधि जिसके दौरान उक्त शर्तों का पालन किया जाता है

के साथ

(

(क) ऐसे व्यक्तियों ने निर्धारित तरीके से आयकर अधिकारी को लिखित सूचना देकर निर्दिष्ट किया है -

एस.

जिस उद्देश्य के लिए आय जमा की जा रही है या

अलग रखा गया है और वह अवधि जिसके लिए आय को एकत्रित या अलग किया जाना है, जो किसी भी मामले में दस से अधिक नहीं होगी।

वर्षों से;

(ख) इस प्रकार संचित या अलग रखे गए धन का निवेश किया जाता है।

डी.

सार्वजनिक ऋण अधिनियम, 1944 (1944 का XVIII) की धारा 2 के खंड (2) में परिभाषित किसी भी सरकारी प्रतिभूति में, या किसी अन्य प्रतिभूति में जिसे इस संबंध में केंद्र सरकार द्वारा अनुमोदित किया जा सकता है।

(3) उप-धारा (1) या उप-धारा (2) में निर्दिष्ट कोई भी आय, जो उपरोक्त धर्मार्थ उद्देश्यों के अलावा अन्य उद्देश्यों के लिए लागू की जाती है या जमा होना बंद हो जाती है या उसमें आवेदन के लिए अलग रखी जाती है या उस उद्देश्य के लिए उपयोग नहीं की जाती है जिसके लिए वह इस संबंध में अनुज्ञात अवधि की समाप्ति के तुरंत बाद के वर्ष में इस प्रकार जमा की जाती है, उस व्यक्ति की आय मानी जाएगी।

ई.

च

पूर्ववर्ष जिसमें इसे इस प्रकार लागू किया जाता है, या इस प्रकार संचित होना बंद हो जाता है या इस प्रकार अलग रखा जाता है या, जैसा भी मामला हो, उपरोक्त अवधि की समाप्ति के तुरंत बाद के पूर्ववर्ष का।

एस द्वारा और प्रतिबंध लगाए गए थे।12 ए और एस।13. धारा 13 धर्मार्थ उद्देश्यों के लिए न्यास या अधिनियम की शुरुआत के बाद बनाए गए या स्थापित किए गए धर्मार्थ संस्थान के मामले में छूट पर रोक लगाती है, यदि न्यास या संस्थान किसी विशेष धार्मिक समुदाय या जाति के लाभ के लिए बनाया या स्थापित किया गया था।कुछ संशोधनों के अधीन छूट पर भी रोक लगा दी गई थी, यदि आय के किसी भी हिस्से, या ऐसे न्यास या संस्थान की किसी भी संपत्ति का उपयोग न्यास के लेखक या संस्थान के संस्थापक या किसी ऐसे व्यक्ति के लाभ के लिए किया गया था जिसने पर्याप्त योगदान दिया था।

जी.

ऐसे न्यास या संस्था या ऐसे लेखक, संस्थापक या योगदानकर्ता के किसी रिश्तेदार की।

न्यास या संस्था की आय के उपयोग के संबंध में प्रतिबंधात्मक प्रावधानों के दायरे को अधिनियम में लगातार संशोधनों द्वारा और कड़ा कर दिया गया था।इसे एक पार्टी में आराम दिया गया था।

बी. क्यूलर, कि छूट अर्जित करने के लिए संचित या अलग रखे गए धन को वैकल्पिक रूप से किसी डाकघर बचत बैंक खाते में या किसी बैंकिंग कंपनी में जमा किया जा सकता है, जिस पर बैंकिंग विनियमन अधिनियम, 1949 लागू होता है, या किसी बैंकिंग सहकारी समिति में, या किसी वित्तीय निगम में जमा किया जा सकता है, जो भारत में औद्योगिक विकास के लिए दीर्घकालिक वित्त प्रदान करता है और एस के उद्देश्यों के लिए केंद्र सरकार द्वारा अनुमोदित है।36 (1) (viii)।

एक उल्लेखनीय संशोधन, जिसे सी. एल. के रूप में जोड़ा गया।(bb) s में।13 (1) , बशर्ते कि गरीबों की राहत, शिक्षा या चिकित्सा राहत के लिए किसी धर्मार्थ न्यास या संस्थान द्वारा किए गए किसी भी व्यवसाय से प्राप्त आय का बहिष्कार तब तक स्वीकार्य नहीं था जब तक कि "व्यवसाय को प्राथमिक उद्देश्य के वास्तविक निष्पादन के दौरान नहीं चलाया जाता है।

डी.

न्यास या संस्था की स्थिति "।यह संशोधन, 1 अप्रैल, 1977 से प्रभावी हुआ, जो "धर्मार्थ उद्देश्य" की परिभाषा में निर्धारित पहले तीन शीर्षों के अनुरूप था और एस के संचालन को प्रभावित करता था।11 परिभाषा के उस भाग के संदर्भ में।सिमुल धीरे से, सी. एल.((घ) एस में भी डाला गया था।13 (1) जो, सी. एल. के अधीन कार्य कर रहा है।(bb), ने जोर देकर कहा कि आय पर छूट अर्जित करने के लिए

ई.

धर्मार्थ न्यास या संस्था की निधियों को अनुभागों में निर्दिष्ट प्रपत्रों या विधियों में निवेश या जमा किया जाना चाहिए।13 (5) .

कानून में सन्निहित इस योजना ने दो सिद्धांत लाभ बिंदुओं के संदर्भ में कर लाभ को दुरुपयोग से संरक्षित किया, (ए) "धर्मार्थ उद्देश्य" की सावधानीपूर्वक शब्दबद्ध परिभाषा, जिसका उद्देश्य था कि ट्रस्ट एफ बनाया गया और संस्थान उन उद्देश्यों के लिए स्थापित किए गए जो "धर्मार्थ" नहीं हैं।

उस परिभाषा के भीतर लाभ का हकदार नहीं होना चाहिए, और (बी) ऐसे प्रावधान जो न्यास के तहत आयोजित या संस्था के स्वामित्व वाली संपत्ति से बहने वाली संचित आय के अनुप्रयोग को सावधानीपूर्वक नियंत्रित करते हैं।पहला न्यास या संस्थान के उद्देश्य से संबंधित है, दूसरा उस तरीके से जिसके परिणामस्वरूप आय होती है।

जी.

नौकरी करते हैं।हम इन संदर्भों में पहले वाले के बारे में चिंतित हैं और इसलिए यह आवश्यक है कि धारा 2 (15) के निर्माण को बाद वाले के लिए प्रासंगिक विचारों पर विराम देने से बचा जाए।एस में "धर्मार्थ उद्देश्य" की परिभाषा का अर्थ लगाते हुए।2 (15) , यह याद रखना अनिवार्य है कि हम जिस पर विचार कर रहे हैं वह एक परिभाषा है।

यह।यह एक परिभाषा है और इससे ज्यादा कुछ नहीं।परिचालन प्रावधान अधिनियम में कहीं और अधिनियमित किया गया है।उस प्रकाश में देखने पर, इसका अर्थ है:परिभाषा स्पष्ट संकल्प में सक्षम है।

धारा 2 (15) में कहा गया है कि "धर्मार्थ उद्देश्य" में गरीबों की राहत, शिक्षा, चिकित्सा राहत और सामान्य सार्वजनिक उपयोगिता के किसी भी अन्य उद्देश्य को आगे बढ़ाना शामिल है, जिसमें किसी भी उद्देश्य को पूरा करना शामिल नहीं है।

लाभ के लिए गतिविधि।"धर्मार्थ उद्देश्य" के पहले तीन प्रमुखों को विशिष्ट और स्पष्ट रूप से प्रकट शब्दों में परिभाषित किया गया है। गरीबों को राहत, शिक्षा और चिकित्सा राहत।चौथे सिर को आम तौर पर एक अवशिष्ट सिर के रूप में वर्णित किया जाता है (हालाँकि यह विवरण बी के अनुरूप प्रतीत होता हैःएक "समावेशी" परिभाषा में जगह पाता है)।अब, यह ध्यान रखना महत्वपूर्ण है कि वर्णित उद्देश्य "सामान्य सार्वजनिक उपयोगिता के किसी अन्य उद्देश्य की उन्नति है।उद्देश्य की उन्नति ही उद्देश्य है।धर्मार्थ उद्देश्य के पहले तीन प्रमुखों पर ध्यान देते हुए, परिभाषा एक गतिविधि के संदर्भ में उद्देश्य को परिभाषित करती है।जब सर सैमुअल रोमिली, मॉरिस बनाम में अपने तर्क के दौरान।डरहम के बिशप (1) ने दान के मुख्य प्रमुखों का सारांश दिया, जिसमें "गरीबों की राहत, शिक्षा की उन्नति, धर्म की उन्नति और सामान्य सार्वजनिक उपयोगिता के उद्देश्यों की उन्नति" शामिल थी।किसी वस्तु के संबंध में किए जाने वाले किसी कार्य की भावना पर ध्यान दें।जब लॉर्ड मैकनाघटेन ने विशेष कॉमर्स में धर्मार्थ उद्देश्यों के वर्गीकरण को अपनाया।वी. पेम्सेल (1), उन्होंने "गरीबी से राहत के लिए न्यास, शिक्षा की उन्नति के लिए न्यास, धर्म की उन्नति के लिए न्यास, और समुदाय के लिए लाभकारी अन्य उद्देश्यों के लिए न्यास जो किसी भी पूर्ववर्ती शीर्ष के अंतर्गत नहीं आते हैं" की बात की।भारतीय कानून में, गरीबी से राहत और शिक्षा की प्रगति को "गरीबों की राहत ई" और "शिक्षा" के रूप में सन्निहित किया गया था।चिकित्सा राहत जोड़ी गई।और

चौथे शीर्ष के लिए, जिसके साथ हम चिंतित हैं, भाषा, सर सैमुअल रोमिली के वर्गीकरण की प्रतिध्वनि, "सामान्य सार्वजनिक उपयोगिता के किसी भी अन्य उद्देश्य के अग्रिम उद्देश्य" को संदर्भित करती है।यह तुरंत स्पष्ट हो जाएगा कि "वस्तु" शब्द अपने आप में किसी गतिविधि को संदर्भित नहीं कर सकता है।यह एक लक्ष्य का प्रतिनिधित्व करता है जिसके लिए, या जिसके संबंध में, एक गतिविधि को आगे बढ़ाया जाता है।गतिविधि का तत्व "उन्नति" शब्द में सन्निहित है।यदि "धर्मार्थ उद्देश्य" को शब्दों में परिभाषित किया गया है

किसी गतिविधि का, अर्थात किसी उद्देश्य की प्रगति, प्रतिबंधात्मक खंड "जिसमें लाभ के लिए किसी गतिविधि को आगे बढ़ाना शामिल नहीं है", जो किसी गतिविधि का वर्णनात्मक भी है, अनिवार्य रूप से "किसी उद्देश्य की प्रगति" से संबंधित होना चाहिए।.इसलिए, मेरी राय है कि प्रतिबंधात्मक खंड को "सामान्य सार्वजनिक उपयोगिता के किसी अन्य उद्देश्य की उन्नति" के साथ पढ़ा जाना चाहिए, न कि "सामान्य सार्वजनिक उपयोगिता के उद्देश्य" के साथ।तथापि, यह देखा जा सकता है कि बहुत अधिक भ्रम से बचा जा सकता है यदि चौथे प्रमुख के संदर्भ में न्यास या संस्था के उद्देश्य को "उद्देश्य" और बी (1) (1805) 10 वेस के रूप में संदर्भित किया जाता है।522 , 532 .

(2 3 टी. सी. 53,96 (एच. 1).

[1980] 2 एस सी आर।

सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट

116

न्यास या संस्था के "उद्देश्य" के रूप में नहीं, क्योंकि वहाँ के उद्देश्य को "किसी उद्देश्य की उन्नति" के रूप में परिभाषित किया गया है।

यह स्पष्ट होने के कारण कि धर्मार्थ उद्देश्य उद्देश्य की उन्नति है, और यह कि उन्नति में लाभ के लिए किसी गतिविधि को जारी रखना शामिल नहीं होना चाहिए, मैं अगले चरण पर आगे बढ़ता हूं।शब्द हैं।

" लाभ के लिए गतिविधि, मुझे लगता है, गतिविधि की प्रकृति के वर्णनात्मक के रूप में ली जानी चाहिए।यह एक प्रकार की गतिविधि है जिसका उद्देश्य लाभ अर्जित करना है।यह एक लाभ कमाने वाली गतिविधि है।यह कि यह वास्तव में किसी भी अवधि के दौरान लाभ नहीं दे सकता है, इसकी वास्तविक प्रकृति से इनकार नहीं करता है।इसके विपरीत।यदि लाभ किसी गतिविधि के परिणामस्वरूप हुआ है, तो वह इसे "लाभ के लिए गतिविधि" के रूप में वर्गीकृत नहीं करता है।

एस.

इसलिए, "चरित्र उद्देश्य" के चौथे शीर्ष के अंतर्गत आने के उद्देश्य के लिए, इसे सामान्य सार्वजनिक उपयोगिता के एक उद्देश्य की उन्नति के लिए बाध्य करना चाहिए जिसमें उन्नति की गतिविधि में लाभ कमाने की गतिविधि शामिल नहीं होनी चाहिए।प्रतिबंध डी टाइव खंड में "शामिल" शब्द का कोई महत्व नहीं है।एक गतिविधि किसी वस्तु की उन्नति में शामिल होती है जब वह उन्नति की गतिविधि में लिपटे या ढके होते हैं।एक अन्य मामले में, यह उन्नति की गतिविधि में अंतर्निहित हो सकता है, ताकि परिणामी

गतिविधि की दोहरी प्रकृति हो या यह दोहरे पहलू वाली हो।चूँकि हम "धर्मार्थ उद्देश्य" की परिभाषा से चिंतित हैं, और परिभाषा पूरी तरह से परिभाषित करती है।

ई.

केवल "प्रयोजन" के बारे में बात करना अधिक उचित होगा कि लाभ कमाने के उद्देश्य को सामान्य सार्वजनिक उपयोगिता के किसी उद्देश्य की उन्नति के उद्देश्य से जोड़ा जा रहा है या कवर किया जा रहा है या, अन्य प्रकार के मामले में, लाभ कमाने का उद्देश्य उस उद्देश्य की उन्नति के उद्देश्य से जुड़ा हुआ है जो दोहरी प्रकृति या दोहरे पहलुओं वाले उद्देश्य को जन्म देता है।अब, एस।2 (15) स्पष्ट रूप से कहा गया है कि एक "धर्मार्थ उद्देश्य" का गठन करने के लिए, लाभ कमाने के उद्देश्य को बाहर रखा जाना चाहिए।मेरी राय में, आवश्यकता को पूरा किया जाता है जहां या तो लाभ कमाने के उद्देश्य का पूर्ण अभाव होता है या यह सामान्य सार्वजनिक उपयोग के उद्देश्य की उन्नति के उद्देश्य की तुलना में इतना महत्वहीन होता है कि बाद वाले की प्रमुख भूमिका पहले वाले को लेखा के अयोग्य बना देती है।यदि लाभ कमाने का उद्देश्य एक प्रमुख भूमिका निभाता है या यहां तक कि सामान्य सार्वजनिक उपयोगिता के उद्देश्य की उन्नति के उद्देश्य के साथ एक समान समूह का गठन करता है, तो स्पष्ट रूप से एस में परिभाषा।2 (15) संतुष्ट नहीं है।आवेदन करते समय एस।11 , कर प्राधिकारी के लिए एक उपयुक्त मामले में यह खुला है कि वह न्यास का गठन करने वाले या संस्था की स्थापना करने वाले दस्तावेज द्वारा सतह पर जो घोषित किया गया है, उसके पर्दे को भेद सके और न्यास या संस्था के वास्तविक उद्देश्य का पता लगा सके।वास्तविक उद्देश्य वास्तव में और अनिवार्य रूप से चरित्र होना चाहिए।ई.

1

आय आयोग-टैक्स वी. सूरट आर्ट सिल्क 117

(पाठक, जे.)

अब, उद्देश्य की परिभाषा उद्देश्य को पूरा करने के लिए नियोजित मोड ए या विधि से अलग है।फिर भी उद्देश्य की प्रकृति कुछ हद तक उस तरीके को नियंत्रित करती है जो इसे पूरा करने के लिए खुला है।यदि उद्देश्य वास्तव में धर्मार्थ है, तो अपनाया गया तरीका ऐसा होना चाहिए जो धर्मार्थ उद्देश्य को पूरा करने के लिए निर्देशित हो।इसमें, मेरी राय में, न्यास या संस्था के धर्मार्थ उद्देश्य को पूरा करने के लिए एक व्यवसाय शामिल होगा।बी इस तरह के व्यवसाय को चलाने के उद्देश्य से विचलित नहीं होता है।

4

जो इसे व्याप्त करता है, व्यावसायिक गतिविधि का अंतिम परिणाम धर्मार्थ उद्देश्य का प्रभाव है।एक व्यावसायिक गतिविधि जो न्यास के धर्मार्थ उद्देश्य को पूरा करने की दृष्टि से नहीं की जाती है, बल्कि जो एक गैर-धर्मार्थ उद्देश्य से संबंधित है या एक

ग

अंत अपने आप में न्यास के दायरे से बाहर है, और वास्तव में इस तथ्य को धोखा दे सकता है कि न्यास का वास्तविक उद्देश्य अनिवार्य रूप से धर्मार्थ नहीं है।यदि यह न्यास या संस्था के उद्देश्य को पूरा करने के लिए किया गया व्यवसाय है, अर्थात धर्मार्थ उद्देश्य की प्राप्ति के क्रम में और उसकी दृष्टि से, उससे होने वाली आय -

धारा 11 के तहत छूट का हकदार।इस संबंध में, यह ध्यान रखना उचित है कि डी।11 (4) विशेष रूप से "न्यास के तहत रखी गई संपत्ति" को एक व्यावसायिक उपक्रम के रूप में परिभाषित किया गया है।इसके अलावा, जब यह पाया गया कि न्यायिक निर्णयों ने प्रतिबंधात्मक खंड को एस में रखा था।2 (15) केवल चौथे प्रमुख को नियंत्रित करने के लिए, और परिभाषा में पहले तीन प्रमुखों को भी नहीं, संसद ने सी. एल. को लागू करके अपने मूल इरादे को सुरक्षित करने का प्रयास किया।(bb) s में।13 (1) .ई के दो प्रावधानों ने न्यास या संस्था के उद्देश्य को पूरा करने के लिए न्यास संपत्ति के कोष से आय प्राप्त करके और न्यास या संस्था के उद्देश्य को वास्तविक रूप से पूरा करने के दौरान की गई गतिविधि से भी वित्त खोजने का तरीका भेजा।

इस स्तर पर, यह इंगित करना उचित होगा कि प्रश्न एफ कि क्या एक न्यास बनाया गया है या एक संस्था को एक चारी टेबल उद्देश्य के लिए स्थापित किया गया है, न्यास या संस्था के वास्तविक उद्देश्य के संदर्भ में निर्धारित किया जाता है, न कि इस परिस्थिति से कि प्राप्त आय को आमतौर पर एक वाणिज्यिक गतिविधि पर लागू मानकों द्वारा मापा जा सकता है।आय की मात्रा अपने आप में कोई परीक्षा नहीं है।यह वास्तव में धर्मार्थ जी उद्देश्य के तहत अनुमत गतिविधि का परिणाम हो सकता है, जैसा कि देखा गया है, धर्मार्थ उद्देश्य को पूरा करने में एक लाभदायक गतिविधि को बाहर नहीं रखा गया है।एच. आर. खन्ना और ए. सी. गुप्ता, जे. जे. से जो कुछ भी हुआ है, मैं उससे सम्मान के साथ सहमत नहीं हो पा रहा हूं।एकमात्र न्यासी, लोक शिक्षा न्यास

बनाम।आयकर आयुक्त, मैसूर (1) कि न्यास की शर्तों को लाभ कमाने पर प्रतिबंध लगाना चाहिए अन्यथा न्यास का उद्देश्य एच (!) माना जाना चाहिए।(1975) 101 आई. टी. आर. 234 सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट

[1980] 2 एस सी आर।

118

जिसमें लाभ कमाने की गतिविधि को जारी रखना शामिल है।कॉनरेरी पर, मैं खुद को बेग, जे. के साथ इस हद तक सहमत पाता हूं कि वे कहते हैं, उसी मामले में, कि यह उद्देश्य की वास्तविकता है, कि यह वास्तव में धर्मार्थ है, जो मुद्दे को निर्धारित करता है।मेरे लिए यह आवश्यक प्रतीत होता है कि केवल "धर्मार्थ उद्देश्य" की परिभाषा और उस उद्देश्य को पूरा करने या पूरा करने के लिए निहित शक्तियों के बीच एक अंतर बनाए रखा जाना चाहिए।जबकि उद्देश्य और शक्तियों का परस्पर संबंध होना चाहिए, उन्हें एक दूसरे के साथ पहचाना नहीं जा सकता है।निश्चय ही, उद्देश्य की धर्मार्थ या गैर-धर्मार्थ प्रकृति के प्रमाण के रूप में शक्तियों की प्रकृति और विस्तार का उल्लेख किया जा सकता है।इसी कारण से, मैं सम्मान के साथ यह मानने के लिए मजबूर हूं कि कृष्ण अय्यर, जे.

सी. इंडियन चैंबर ऑफ कॉमर्स बनाम में न्यायालय।आय कर आयुक्त, पश्चिम बंगाल-II (1) उस बात से सहमत नहीं हैं जिसे मैं एस की वास्तविक संरचना मानता हूं।2 (15) .यदि उस निर्णय को उचित ठहराया जा सकता है, तो यह केवल इस आधार पर हो सकता है कि अदालत की राय में न्यास या संस्था का वास्तविक उद्देश्य अनिवार्य रूप से धर्मार्थ नहीं था।मैं इस प्रस्ताव को स्वीकार करने में असमर्थ हूं कि यदि उद्देश्य वास्तव में धर्मार्थ है, तो

डी.

उद्देश्य की प्राप्ति को लाभ के लिए किसी भी गतिविधि को सख्ती से बाहर करना चाहिए।मैं इस स्थिति का समर्थन करने में भी असमर्थ हूं कि न्यास या संस्था को ऐसी गतिविधि करने की अनुमति देने से जो लाभ लाती है, हालांकि वह गतिविधि न्यास या संस्था के उद्देश्य से काम करने के दौरान की जाती है, "व्यवसायियों के पास कर से बचने के लिए एक उच्च ई मार्ग है"।यह स्पष्ट रूप से विद्वान न्यायाधीशों के ध्यान में नहीं लाया गया था कि अधिनियम में एक सावधानीपूर्वक अधिनियमित योजना को शामिल किया गया है जो न्यास आय के उपयोग को बारीकी से नियंत्रित करती है, और यह कि कर छूट उस योजना में निर्धारित वैधानिक शर्तों के पालन पर सशर्त है।

एफ. वर्तमान संदर्भों के तथ्यों पर जो मेरे भाई भगवती द्वारा तैयार किए गए निर्णय में दिए गए हैं, मुझे यह मानने में कोई संकोच नहीं है कि प्रतिवादी कंपनी का उद्देश्य एस की परिभाषा के भीतर आता है।2 (15) आयकर अधिनियम, 1961।संघ के ज्ञापन के खंड 3 के उपखंड (ए) में घोषणा की गई है कि जिस उद्देश्य के लिए कंपनी की स्थापना की गई है, वह है "कला रेशम धागे, कच्चे रेशम, सूती धागे, कला रेशम कपड़े, रेशम कपड़े और कोटन कपड़े में वाणिज्य और व्यापार को बढ़ावा देना"।इस न्यायालय ने आयकर आयुक्त बनाम आंध्र चैंबर ऑफ कॉमर्स () के मामले में वाणिज्य और व्यापार को बढ़ावा देने को सामान्य सार्वजनिक उपयोगिता का उद्देश्य माना है और यह दिखाने के लिए कुछ भी नहीं है कि जिस "उद्देश्य" के लिए कंपनी को निगमित किया गया था, उस उपखंड में निम्नलिखित शामिल हैं -

एच.

(1) [1975] 101 आई. टी. आर. 796

(2) [1965] 55 आई. टी. आर. 722}

आय आयुक्त-कर v.सूरट आर्ट सिल्क 119

(सेन, जे.)

लाभ के लिए किसी भी गतिविधि को जारी रखना।शेष उपखंड ए उन शक्तियों की गणना करता है जिनके लिए इसका गठन किया गया है।

शब्दों पर मेरे द्वारा दी गई व्याख्या को ध्यान में रखते हुए

1

एस में "धर्मार्थ उद्देश्य" के चौथे प्रमुख को परिभाषित करना।2 (15) अधिनियम के प्रत्येक संदर्भ में निर्दिष्ट प्रश्न का उत्तर मैं निर्धारिती के पक्ष में और राजस्व के विरुद्ध सकारात्मक रूप में देता हूँ।बी राजस्व दो समूहों में निर्धारिती की लागत का भुगतान करेगा, एक 1973 के कर संदर्भ मामले संख्या 1 ए में और दूसरा कर संदर्भ मामले संख्या में।10 1975 के 14 तक।

सेन जे. मुझे अपने विद्वान भाई जे. भगवती द्वारा तैयार किए गए निर्णय को पढ़ने का लाभ मिला है। मुझे इस अभिव्यक्ति के निर्माण के बारे में उनके द्वारा व्यक्त किए गए विचारों को साझा करने में असमर्थता पर खेद है।

" धर्मार्थ उद्देश्य "जैसा कि एस में परिभाषित किया गया है।2 (15) आय-कर अधिनियम, 1961 मेरी राय है कि एकमात्र न्यासी में दो निर्णय,

लोक शिक्षा न्यास बनाम।सी. आई. टी. (1) और इंडियन चैंबर ऑफ कॉमर्स बनामसी. आई. टी. (3) सही कानून निर्धारित करता है और फिर भी सही रहता है।

डी.

"धर्मार्थ उद्देश्य" की परिभाषा में, एस में निहित है।2 (15) 1961 के अधिनियम के अनुसार, "लाभ के लिए किसी भी गतिविधि को जारी रखना शामिल नहीं" शब्द, जिन्हें 1922 के अधिनियम में जगह नहीं मिली, केवल धर्मार्थ उद्देश्य के चौथे शीर्ष के योग्य हैं।, " सामान्य सार्वजनिक उपयोगिता का कोई अन्य उद्देश्य ", और पहले तीन शीर्षों में से कोई भी नहीं।एस में "धर्मार्थ उद्देश्य" की परिभाषा।2 (15) यह इन शब्दों में हैः "2 (15) ' धर्मार्थ उद्देश्य 'में गरीबों की राहत, शिक्षा, चिकित्सा राहत और सामान्य सार्वजनिक उपयोगिता के किसी अन्य उद्देश्य को आगे बढ़ाना शामिल है जिसमें लाभ के लिए कोई गतिविधि शामिल नहीं है।

च

इसने कराधान प्रणाली में आमूलचूल बदलाव लाए हैं।कर चोरी को रोकने के लिए 'सामान्य सार्वजनिक उपयोगिता के उद्देश्यों' के विशेष संदर्भ के साथ दान की आय और लाभ का, व्यावसायिक लाभ को दान में परिवर्तित करके।1922 के अधिनियम के अधिनियमन के बाद 39 वर्षों में प्राप्त अनुभव के बाद, यह महसूस किया गया कि लाभ के लिए कई गतिविधियाँ केवल इसलिए जी आय पर कर के अधीन नहीं थीं क्योंकि उन्हें सामान्य सार्वजनिक उपयोगिता का उद्देश्य माना जा सकता था।1922 के अधिनियम के तहत जो गलत था वह नहीं था

आय देने का विचार-दान के संबंध में कर राहत, लेकिन उस उद्देश्य के लिए दान के रूप में क्या रैंक की सीमा की अनुचित चौड़ाई।यह "सामान्य सार्वजनिक उपयोगिता का कोई अन्य उद्देश्य" अभिव्यक्ति की अस्पष्टता है।

एच.

(1) (1975) 101 आई. टी. आर 234

7

(2) (1975) 101 आई. टी. आर 796

[1980] 2 एस सी आर।

सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट

120

ए "जिसने संसद को प्रतिबंधात्मक शब्दों को सम्मिलित करने के लिए प्रेरित किया" लाभ के लिए किसी भी गतिविधि को जारी रखने में शामिल नहीं "।

न्यायालय के लिए इस धारा की सामान्य आयु को कम करने की अनुमति नहीं है।खन्ना जे. के शब्दों में, लोक शिक्षा ट्रस्ट में अपने और गुप्ता जे. बी. के लिए बोलते हुए, यह राष्ट्र के सभी नियमों के विपरीत होगा कि नए जोड़े गए शब्दों 'लाभ के लिए किसी भी गतिविधि को जारी रखने से संबंधित नहीं' के प्रभाव को नजरअंदाज किया जाए और परिभाषा का अर्थ लगाया जाए जैसे कि नए जोड़े गए शब्द या तो थे।

1922 के अधिनियम के तहत स्थिति को अर्हता प्राप्त करने और पुष्टि करने के रूप में, वहाँ नहीं था या अनावश्यक और अनावश्यक होने का इरादा नहीं था।मुझे डर है कि इस तरह का निषेध कानून के उद्देश्य को ही विफल कर देगा।सी खंड स्व-व्याख्यात्मक है।सुस्त युग की सापेक्ष सादगी तथाकथित 'छल-कपट में दान' के परिणामस्वरूप होने वाले कर लाभों का मुकाबला करने के लिए आवश्यक विधायी इरादे को सामने लाती है।1922 के अधिनियम द्वारा दोनों के बीच कोई अंतर नहीं किया गया था।

एक ओर गरीबों को राहत, शिक्षा और चिकित्सा राहत डी और दूसरी ओर सामान्य सार्वजनिक उपयोगिता के किसी भी अन्य उद्देश्य की उन्नति के परिणामस्वरूप दान के लिए जाने-माने दान।लेकिन इस तरह के अंतर को एस में "चारी टेबल उद्देश्य" शब्द की परिभाषा द्वारा पेश किया गया है।2 (15) यद्यपि परिभाषा समावेशी है।प्रतिबंध यह है कि सामान्य सार्वजनिक उपयोगिता के उद्देश्यों की प्रगति में लाभ के लिए किसी भी गतिविधि को जारी रखना शामिल नहीं होना चाहिए।ई यदि इसमें ऐसी कोई गतिविधि शामिल है, तो दान में धर्मार्थ उद्देश्य की अवज्ञा से बाहर हो जाएगा।2 (15) .इस परिवर्तन ने कानून को मौलिक रूप से बदल दिया है और जब भी सामान्य सार्वजनिक उपयोगिता के किसी उद्देश्य की प्रगति में लाभ के लिए कोई गतिविधि शामिल होती है तो वह उद्देश्य एक धर्मार्थ उद्देश्य नहीं रहेगा।इसलिए, ऐसे मामलों में, लाभ के लिए गतिविधि से आय को एस के तहत कर से नहीं लिया जा सकता है।11 में से

च

एक्ट करें।प्रतिबंधात्मक शब्दों के इस जुड़ाव का उद्देश्य "लाभ के लिए किसी भी गतिविधि को जारी रखने में शामिल नहीं" द ट्रस्टी ऑफ द ट्रिब्यून (1), ऑल इंडिया स्पिनर्स एसोसिएशन बनाम में निर्णय को स्पष्ट रूप से दूर करना था।सी. आई. टी. (3) और जे. के. ट्रस्ट बनामसी. आई. टी. (3) ये सभी मामले एस. के तहत उत्पन्न हुए।4 (3) (i) 1922 के अधिनियम का, जिसमें "किसी भी गतिविधि को जारी रखने से संबंधित नहीं" शब्द शामिल नहीं थे।

लाभ ", और वे अब अच्छे कानून नहीं हैं।विश्वास के तहत आयोजित व्यवसाय और के बीच एक अंतर है।

" न्यास द्वारा या उसकी ओर से चलाया जाने वाला व्यवसाय।धारा 11 (1) न्यास के तहत रखी गई संपत्ति से प्राप्त आय को छूट देती है।

(1) (1939) 101 7 एल. टी. आर. 415

(2) (1944) 12 आई टी आर 402।

12) (1957) 32 आई. टी. आर 535

आय आयोग-टैक्स वी. सूरट आर्ट सिल्क

121

(सेन, जे.)

धर्मार्थ या धार्मिक उद्देश्यों के लिए, जिस हद तक ऐसी आय

क.

भारत में ऐसे उद्देश्यों के लिए लागू किया जाता है।धारा 11 (4) में "न्यास के तहत धारित संपत्ति" के भीतर इस तरह से धारित एक व्यावसायिक उपक्रम शामिल है।इसके अलावा, एक धर्मार्थ उद्देश्य के लिए एक न्यास के तहत आयोजित एक व्यावसायिक उपक्रम से आय को एस के तहत छूट दी गई है।11 (1) .इसलिए, किसी व्यावसायिक उपक्रम से प्राप्त आय के संबंध में छूट अर्जित करने के लिए कोई वैधानिक प्रतिबंध या प्रतिबंध नहीं है, यदि ऐसा व्यावसायिक उपक्रम किसी धर्मार्थ उद्देश्य के लिए किसी न्यास के तहत आयोजित किया जाता है।उस 'संपत्ति' में

एस।11 (1) इसमें शामिल है कि व्यवसाय न केवल संबंधित पेशेवरों से संबंधित प्रिवी काउंसिल के निर्णयों द्वारा अच्छी तरह से स्थापित किया गया है।

एस में दृष्टि।4 (3) (i) 1922 के अधिनियम के ट्रिब्यून के न्यासियों (ऊपर) और स्पिनरों के संघ (ऊपर) में, लेकिन इसके दो निर्णयों द्वारा भी

ग

इस न्यायालय ने सी. आई. टी. बनाम.राधास्वामी सतसंग सभा (1) और सी. आई. टी. बनाम।पी. कृष्णा वारियर ()।एस के तहत छूट के लिए पहली आवश्यक शर्त।11 (1) यह है कि वह संपत्ति जिससे आय प्राप्त होती है, ट्रस्ट या अन्य कानूनी दायित्व के तहत रखी जानी चाहिए।धारा 11 (4) राधास्वामी सतसंग सभा में इस न्यायालय द्वारा निर्धारित कानून की वैधानिक मान्यता देती है, अर्थात् व्यवसाय संपत्ति है और यदि

डी एक व्यवसाय पूरी तरह से एक धर्मार्थ उद्देश्य के लिए न्यास में आयोजित किया जाता है, उससे होने वाली आय को एस के तहत छूट दी जाएगी।11 (1) .

जैसा कि पहले ही ऊपर कहा जा चुका है, 1961 का अधिनियम अब 'धर्मार्थ उद्देश्य' को परिभाषित करता है जिसमें 'गरीबों की राहत, शिक्षा, चिकित्सा राहत और ई.

सामान्य सार्वजनिक उपयोगिता के किसी अन्य उद्देश्य की प्रगति जिसमें लाभ के लिए कोई गतिविधि करना शामिल नहीं है।यह स्वीकार किया जाता है कि 'लाभ के लिए किसी भी गतिविधि को जारी रखना शामिल नहीं है' शब्द परिभाषा में बताए गए धर्मार्थ उद्देश्य के केवल चौथे प्रमुख के योग्य हैं।सामान्य सार्वजनिक उपयोगिता का कोई अन्य उद्देश्य '।नतीजतन, यह स्पष्ट है कि धर्मार्थ उद्देश्य के पहले तीन शीर्षों के तहत आने वाले मामलों में, परिभाषा लाभ के लिए किसी भी गतिविधि को चलाने पर कोई प्रतिबंध नहीं लगाती है।प्रतिबंधात्मक शब्द 'जिसमें आगे बढ़ना शामिल नहीं है

लाभ के लिए कोई भी गतिविधि जानबूझकर धर्मार्थ उद्देश्य की परिभाषा में शुरू की गई थी।2 (15) चौथे शीर्ष के व्यापक दायरे में कटौती करना।कर से बचने की जाँच करने के उपाय के रूप में 'सामान्य सार्वजनिक उपयोगिता' का कोई अन्य उद्देश्य। निस्संदेह, धार्मिक या धर्मार्थ न्यासों द्वारा लाभ के लिए जी गतिविधि में संलग्नता कर से बचने के लिए हेरफेर की गुंजाइश प्रदान करती है।हालाँकि, संसद ने सोचा कि गरीबों को राहत, शिक्षा या चिकित्सा राहत के उद्देश्य से बनाए गए न्यास के प्राथमिक उद्देश्य की खोज में उत्पन्न होने वाली लाभ के लिए किसी गतिविधि पर प्रतिबंध लगाना वांछनीय नहीं होगा।

एच.

(1) (1954) 25 आई टी आर 472।

(2) (1964) 53 आई. टी. आर 176

क.

75 के कंपनी मामलों के विभाग द्वारा किया गया एक अध्ययन

ट्रस्ट, जिनमें से 62 धर्मार्थ थे, ने दिखाया कि ट्रस्ट बनाने वाले व्यापारिक घरानों ने ज्यादातर ट्रस्ट फंड को अपने व्यवसायों के लिए विनियोजित किया था।धर्मार्थ और धार्मिक न्यासों के गठन के माध्यम से कर से बचने की समस्या पर विचार करते हुए, लोक लेखा समिति ने हाल ही में एक रिपोर्ट (1) में कहा कि न्यास एक प्रशंसनीय सामाजिक उद्देश्य को पूरा करते हैं, लेकिन उनका उपयोग कर से बचने के लिए एक उपकरण के रूप में भी किया गया है।समिति ने इस तथ्य पर भी ध्यान दिया कि 45 न्यासों में से औद्योगिक घरानों से जुड़े हैं और जिनके पास रु।24.11 औद्योगिक घरानों से जुड़ी संस्थाओं में 32 न्यासों द्वारा किया गया निवेश उनके कोष का 50 प्रतिशत या उससे अधिक था।कुछ मामलों में, यह देखा गया कि इस तरह की संस्थाओं में निवेश न्यासों की निधि का 90 प्रतिशत तक था।दूसरे शब्दों में, बड़े व्यापारिक घरानों ने अपने स्वयं के 'धर्मार्थ न्यास' स्थापित किए क्योंकि वे अपने माध्यम से धन को छानना आर्थिक रूप से फायदेमंद पाते हैं।संयुक्त राज्य अमेरिका में, सार्वजनिक न्यासों के धन के दुरुपयोग को रोकने के लिए कई समर्थक दृष्टिकोण के बावजूद, करदाता अभी भी कर से बचने के लिए दान का उपयोग करने के तरीके और साधन ढूंढते हैं।अपने खुलासा अध्ययन 'द रिच एंड द सुपर रिच' में फर्डिनेंड

ग

डी.

लुंडबर्ग (1) ने कहाः

66. ...फाउंडेशन किसी भी प्रकार के सार्वजनिक पर्यवेक्षण या विनियमन के बिना कुछ भी कर सकते हैं जो आर्थिक रूप से संभव हो।वित्त के क्षेत्र में, इसे नाम दें और वे इसे कर मुक्त कर सकते हैं।

ई.

वह आगे कहता हैः "यह मुख्य रूप से फाउंडेशन की प्रोटियन उपयोगिता के कारण है, विशेष रूप से करों की चोरी में, कि धन के समुदाय में लगभग हर कोई अब केवल कुछ लोगों की मूल अंतर्दृष्टि साझा करने के लिए आया है जैसे कि अग्रणी कार्नेगी

च

और रॉकफेलर "।

धर्मार्थ न्यासों के माध्यम से कर से बचना अन्य देशों में भी प्रचलित एक बीमारी है।लाभ और आय के कराधान पर ब्रिटिश रॉयल कमीशन ने देखा कि 'दान' की परिभाषा की अस्पष्टता, या अधिक सटीक रूप से इसकी अनुपस्थिति

जी.

एक परिभाषा ने उन गतिविधियों द्वारा छूट के बहुत महत्वपूर्ण लाभों का दावा करने में सक्षम बनाया है, जिनका चरम मामलों में, दान के विचार के साथ कोई वास्तविक संबंध नहीं था (3)।कनाडा के लिए कराधान पर रॉयल कमीशन ने भी अपनी रिपोर्ट और (1) लोक लेखा समिति (1969-70)-चौथी लोकसभा-सौ बीस-पहली रिपोर्ट-(पैरा 1·32 और 1.33) पीपी में इस समस्या पर ध्यान दिया।6-17 पर।

एच.

(2) फर्डिनेंड लुंडबर्ग-द रिच एंड द सुपर रिच-पी।253 (3) लाभ और आय के कराधान पर शाही आयोग की अंतिम रिपोर्ट (1955)-पैरा, 1970 आय आयोग-कर V. सूरट आर्ट सिल्क 123

(सेन, जे.)

सिफारिश की गई कि दान को आय का भुगतान करना चाहिए-व्यवसाय पर कर ए आय (1)।

'लाभ के लिए किसी भी गतिविधि को आगे नहीं बढ़ाना', दान के चौथे प्रमुख को अर्हता प्राप्त करने, 'सामान्य सार्वजनिक उपयोगिता के किसी भी अन्य उद्देश्य की उन्नति' जैसे महत्वपूर्ण शब्दों के निर्माण पर विचारों का तीव्र टकराव रहा है।सी. आई. टी. बनाम में केरल उच्च न्यायालय के अनुसार।इंडियन चैंबर ऑफ कॉमर्स, (*) सी. आई. टी. बनाम.कोचीन चैंबर ऑफ कॉमर्स (1) और सी. आई. टी. बनामचारमोदयान एंड कंपनी, (1) यह देखा गया कि सामान्य सार्वजनिक उपयोगिता के किसी उद्देश्य को परिभाषा के दायरे से बाहर ले जाने के लिए, उस उद्देश्य में लाभ के लिए किसी भी गतिविधि को जारी रखना शामिल होना चाहिए। सी. आई. टी. बनाम में कलकत्ता उच्च न्यायालय।इंडियन चैंबर ऑफ कॉमर्स (5) ने केरल उच्च न्यायालय से अलग दृष्टिकोण अपनाया और कहा कि दान के चौथे प्रमुख का 'सामान्य सार्वजनिक उपयोगिता के किसी अन्य उद्देश्य की प्रगति जिसमें लाभ के लिए कोई गतिविधि करना शामिल नहीं है' स्पष्ट रूप से इंगित करता है कि यह सामान्य सार्वजनिक उपयोगिता का उद्देश्य नहीं है जिसमें लाभ के लिए किसी भी गतिविधि को जारी रखना शामिल है, बल्कि उस उद्देश्य की प्रगति है।अन्यथा, कलकत्ता उच्च न्यायालय ने अभिनिर्धारित किया कि यह एक विरोधाभासी स्थिति की ओर ले जाएगा और उस सीमा को नष्ट कर देगा जिसे संसद ने अपने विवेक में लागू करना आवश्यक समझा था।यह.

आगे यह देखा गया कि एस. एस. के बीच संघर्ष से बचने का यही एकमात्र तरीका था।11 और 2 (15), विशेष रूप से एस के प्रावधानों के साथ।11 (1) (ए) और 11 (4)।इस न्यायालय ने लोक शिक्षा ट्रस्ट में विवाद का समाधान किया

ई.

(ऊपर) और भारतीय वाणिज्य मंडल (ऊपर) ने यह अभिनिर्धारित करते हुए कि 'लाभ के लिए किसी भी गतिविधि को जारी रखना शामिल नहीं' शब्द 'उन्नति' शब्द को नियंत्रित करते हैं न कि 'सामान्य सार्वजनिक उपयोगिता का उद्देश्य' और कहा कि यदि उद्देश्य की प्रगति या प्राप्ति में लाभ के लिए कोई गतिविधि शामिल है, तो कर छूट उपलब्ध नहीं होगी।

'दान' और 'धर्मार्थ उद्देश्य' शब्दों को उनके कानूनी या तकनीकी अर्थों में समझा जाना चाहिए जो उनके लोकप्रिय से अलग है।

अर्थ।दान कला का एक शब्द है, जिसका सटीक और तकनीकी अर्थ है और कानूनी अर्थों में दान की एक विस्तृत परिभाषा का कभी प्रयास नहीं किया गया है।जिन मामलों में अदालतों के समक्ष दान का सवाल आया है, वे सेना हैं, और सभी निर्णय, यहां तक कि सर्वोच्च प्राधिकारी के भी, सुलह करना आसान नहीं है।

(1) कनाडा के लिए कराधान पर रॉयल कमीशन की रिपोर्ट-वॉल्यूम।4 ,

पी. 144.

(2) (1971) 80 आईटीआर 645।

एच.

(3) (1973) 87 आई. टी. आर. 83

(4) (1974) 94 आई. टी. आर 113

(5) (1971) 81 आई. टी. आर. 147

[1980] 2 एस सी आर।

सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट

124

क.

इंग्लैंड में, इस विषय पर लोकस क्लासिकस का निर्णय है

आय के विशेष उद्देश्यों के लिए आयुक्त के रूप में लॉर्ड मैकनाघटेन

क.

कर वी।पेम्सेल (1) ने हाउस ऑफ लॉर्ड्स में निर्णय लिया।उस मामले में लॉर्ड मैकनाघटेन ने यह समझाने के बाद कि इसमें कोई संदेह नहीं है कि 'दान' और 'धर्मार्थ' शब्दों के लोकप्रिय अर्थ उनके कानूनी अर्थ के साथ मेल नहीं खाते हैं, लेकिन जब 'धर्मार्थ उपयोग' जैसी अभिव्यक्तियों में उपयोग किया जाता है,

.

' धर्मार्थ न्यास 'या' धर्मार्थ उद्देश्य ', शब्द का एक अच्छी तरह से स्थापित तकनीकी अर्थ है, जिसमें कहा गया हैः

' कानूनी अर्थों में 'चैरिटी' में चार प्रमुख प्रभाग शामिल हैं।

4

सायन गरीबी से राहत के लिए विश्वास करते हैं; शिक्षा के विकास के लिए विश्वास करते हैं; धर्म की उन्नति के लिए विश्वास करते हैं; और समुदाय के लिए लाभकारी अन्य उद्देश्यों के लिए विश्वास नहीं करते हैं।

ग

पूर्ववर्ती शीर्षों में से किसी के अधीन आना।

इस वर्गीकरण का चौथा शीर्ष बहुत कुछ का विषय रहा है।

इंग्लैंड में मामलों में चर्चा।उनमें से कुछ में इसे 'परोपकारी' का पर्याय माना गया है, जबकि अन्य में इसे एक संकीर्ण अर्थ दिया गया है।रे में।मैकडफ (*) में यह अभिनिर्धारित किया गया था कि डी धर्मार्थ उद्देश्य सामान्य उपयोगिता का उद्देश्य हो सकता है, लेकिन सामान्य उपयोगिता के सभी उद्देश्यों को धर्मार्थ नहीं माना जा सकता है।यह देखा गया कि 'सार्वजनिक उपयोगिता' शब्द इतने बड़े हैं कि वे उन उद्देश्यों को सुधारते हैं जो धर्मार्थ नहीं हैं।अपील पर इस दृष्टिकोण की पुष्टि की गई थी, और पेम्सेल के मामले के संबंध में लॉर्ड जस्टिस लिंडले ने कहाः

ई.

" मुझे यकीन है कि लॉर्ड मैकनाघ्टन का यह कहना मतलब नहीं था कि सार्वजनिक सामान्य उपयोगिता का प्रत्येक उद्देश्य अनिवार्य रूप से धर्मार्थ होना चाहिए।कुछ हो सकते हैं और कुछ नहीं भी।

लॉर्ड मैकनाघ्टन के चार गुना वर्गीकरण का चौथा शीर्ष अस्पष्ट है क्योंकि इसकी व्यापकता के कारण, मुझे नहीं लगता कि इस विषय से संबंधित अन्य अंग्रेजी मामलों का उल्लेख करने या उनमें से कुछ में निहित प्रतिष्ठित न्यायाधीशों के आदेश का मिलान करने का प्रयास करने से बहुत उपयोगी उद्देश्य पूरा होगा।

हमारे वर्तमान उद्देश्यों के लिए यह कहना पर्याप्त होगा कि भारतीय विधानमंडल ने 1922 के अधिनियम को लागू करते समय ऐसा प्रतीत होता है कि

जी.

वाक्यांश विज्ञान का उपयोग करके इन कठिनाइयों से छुटकारा पाएं जो लॉर्ड मैकनाघटेन के वर्गीकरण के चौथे प्रमुख की तुलना में बहुत व्यापक और अधिक व्यापक है।यह 1896 में था कि लॉर्ड लिंडले और अन्य लॉ लॉड्र्स ने मैकडफ के मामले में कहा था कि "सामान्य सार्वजनिक उपयोगिता उनके दायरे में बहुत व्यापक थी, कि सार्वजनिक उपयोगिता का प्रत्येक उद्देश्य आवश्यक रूप से एक धर्मार्थ उद्देश्य नहीं था", और फिर भी 22 साल बाद 1918 में,

एच.

(1) (1891) 3 टी. सी. 53 (एच. एल):[1891] एसी 531।(2) (1896) एल. आर. 2 च.451 .

आय आयोग-टैक्स वी. सूरट आर्ट सिल्क 125

(सेन, जे.)

जब एस के लिए स्पष्टीकरण।4 (3) आय-कर अधिनियम, 1922 को कानून की पुस्तक में रखा गया था, भारतीय विधानमंडल ने परिभाषा के पहले तीन शीर्षों की गणना में लॉर्ड मैकनाघ्टन के वाक्यांश को व्यावहारिक रूप से अपनाते हुए, चौथे को बिना किसी प्रतिबंध या योग्यता के सामान्य सार्वजनिक उपयोगिता के अन्य उद्देश्यों की उन्नति के रूप में वर्णित किया।इसलिए, न्यायालयों ने यह महसूस किया कि एस में उपयोग किए गए शब्दों के स्पष्ट अर्थ को पूरा प्रभाव देना उनका कर्तव्य है।4 (3) 1922 का अधिनियम।

क.

एस में।4 (3) विधानमंडल ने जानबूझकर किसी भी तरह से "सामान्य सार्वजनिक उपयोगिता का कोई अन्य उद्देश्य" शब्दों को अर्हता प्राप्त करने से परहेज किया, और संदर्भ में ऐसा कुछ भी नहीं था जो इंगित करता हो कि इसका उद्देश्य उन्हें एक सीमित अर्थ देना था।इसलिए यह उन न्यायालयों या अन्य प्राधिकरणों के लिए खुला नहीं था जिनका यह कर्तव्य था।

ग

खंड की व्याख्या करना, उपयोग किए गए शब्दों के स्पष्ट और व्यापक अर्थ को काटना, केवल इसलिए कि वे पूर्व दबाव "धर्मार्थ उद्देश्य" को एक ऐसा अर्थ देंगे जो लोकप्रिय धारणाओं के अनुरूप नहीं है।

डी.

री में।ट्रिब्यून (ऊपर) प्रिवी काउंसिल के न्यासियों ने माना कि शिक्षित जनमत के एक अंग के साथ राज्य को आपूर्ति करने का उद्देश्य सार्वजनिक उपयोगिता का एक उद्देश्य था, और यह एक धर्मार्थ उद्देश्य था, निजी लाभ के उद्देश्य के अभाव में, भले ही समाचार पत्र अपने पाठकों और विज्ञापनदाताओं से सामान्य वाणिज्यिक दरों पर शुल्क लेता था।इस मामले ने स्थापित किया कि 1922 के अधिनियम के तहत, लाभ पर व्यापार करने वाले धर्मार्थ संस्थानों को छूट दी गई थी

ई.

लाभों का सम्मान, बशर्ते कि संस्थान एक चैरिटेबल ट्रस्ट पर आयोजित किया गया था और लाभ केवल संस्था के चैरि टेबल उद्देश्यों के लिए लागू किया जा सकता था।

इसका और इसी तरह के अन्य निर्णयों का परिणाम यह हुआ कि एक धर्मार्थ संस्था व्यवसाय से अर्जित आय पर कर के भुगतान से बच सकती है बशर्ते यह दिखाया जा सके कि पैसा "सामान्य सार्वजनिक उपयोगिता के उद्देश्य" के लिए खर्च किया गया था।धर्मार्थ न्यासों की आय के आय-कर से छूट कर एवॉय नृत्य के अवसर प्रदान करती है।तथ्य यह है कि कुछ धर्मार्थ न्यास कर चोरी या कर से बचने के लिए बनाए जाते हैं, यह लगभग स्थानिक है, जो एक सर्वविदित बुराई है।

च

जी.

धर्मार्थ संगठन के गठन के माध्यम से कर से बचने का सवाल

और धार्मिक न्यास काफी समय से सरकार का ध्यान आकर्षित कर रहे हैं।आय-कर अधिनियम, 1961 के लागू होने से पहले।4 (3) (i) 1922 के अधिनियम के तहत धर्मार्थ न्यासों की आय में छूट दी गई है।

एच.

एस में "धर्मार्थ उद्देश्य" अभिव्यक्ति की परिभाषा।2 (15) अधिनियम की परिभाषा एस में उस अभिव्यक्ति की परिभाषा से अलग है।

[1980] 2 एस सी आर।

4 सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट

126

(3) ((i) 1922 के अधिनियम का।1961 के अधिनियम में प्रवर समिति के स्तर पर "लाभ के लिए किसी भी गतिविधि को जारी रखने से संबंधित नहीं" शब्द जोड़े गए थे।समिति की राय थी कि "धर्मार्थ उद्देश्य" की परिभाषा में कर से बचने के साधन को समाप्त करने के लिए बदलाव की आवश्यकता है।इसने पहले "सामान्य सार्वजनिक उपयोगिता के किसी अन्य उद्देश्य" के वाक्य के बाद "वाणिज्यिक लाभ के लिए एक उपक्रम को आगे बढ़ाने के अलावा अन्य" शब्दों को शामिल करने पर विचार किया, लेकिन बाद में इसे "लाभ के लिए किसी भी गतिविधि को जारी रखने में शामिल नहीं" में बदल दिया गया और इस प्रकार एस में "धर्मार्थ उद्देश्य" की परिभाषा बदल दी गई।2 (15) वर्तमान अधिनियम लाया गया था।इसका मुख्य उद्देश्य 'दान' से 'व्यवसाय' के तत्व को हटाना था।

क.

एस.

तत्कालीन वित्त मंत्री ने विधेयक पेश करते हुए कहा थाः

" उस खंड #में 'धर्मार्थ उद्देश्य' की परिभाषा, वर्तमान में इतनी व्यापक रूप से लिखी गई है कि इसका लाभ वाणिज्यिक सरोकारों द्वारा भी उठाया जा सकता है, जबकि जाहिर तौर पर

सार्वजनिक उद्देश्य को पूरा करने के लिए, लाभों से पूरी तरह से भुगतान प्राप्त करें।

डी.

उनके द्वारा प्रदान किया गया, अर्थात् समाचार पत्र उद्योग, जो वाणिज्यिक आधार पर अपनी चिंता चलाते हुए यह दावा कर सकता है कि समाचार पत्रों को प्रसारित करके यह जनता के सामान्य ज्ञान में सुधार कर रहा था।ऐसे मामलों में इस परिभाषा के दुरुपयोग को रोकने के लिए, प्रवर समिति ने महसूस किया कि इन शब्दों में किसी भी गतिविधि को जारी रखना शामिल नहीं है।

ई.

'लाभ' को परिभाषा में जोड़ा जाना चाहिए।

"लाभ के लिए किसी भी गतिविधि को आगे नहीं बढ़ाना" शब्दों ने तस्वीर को पूरी तरह से बदल दिया है, और ट्रिब्यून (ऊपर) और स्पिनर्स एसोसिएशन (ऊपर) के न्यासियों में प्रिवी काउंसिल के साथ-साथ राधास्वामी सतसंग में इस अदालत के फैसले ने भी तस्वीर बदल दी है।

च

सभा (ऊपर), जे. के. ट्रस्ट बनाम।सी. आई. टी. (1) और सी. आई. टी. बनामवाणिज्य के आंध्र चाम बेर (2) अब केवल शैक्षणिक रुचि के हैं।संसद ने इन शब्दों को पेश करके न केवल इसके दायरे को कम किया है

चैरिटी के चौथे प्रमुख, 'सामान्य सार्वजनिक उपयोगिता के किसी भी अन्य उद्देश्य की उन्नति', लेकिन करदाताओं के लिए अपने व्यावसायिक लाभ को चैरिटी में बदलने के लिए बहुत कम जगह छोड़ी।

जी.

यह मानते हुए भी कि प्रमुख उद्देश्य 'सामान्य सार्वजनिक उपयोगिता के किसी अन्य उद्देश्य का प्रचार या उन्नति' है, यदि इसमें लाभ के लिए कोई गतिविधि शामिल है, यानी कोई व्यवसाय या वाणिज्यिक कार्य, तो यह 's' के अर्थ के भीतर एक 'धर्मार्थ उद्देश्य' नहीं रह जाता है।2 (15) .उस स्थिति में, ऐसे व्यवसाय से प्राप्त लाभ

क.

(1) (1957) 32 आई. टी. आर 535

(2) (1965) 55 आई. टी. आर. 722

आय आयोग-टैक्स वी. सूरट आर्ट सिल्क 127

(सेन, जे.)

एस के तहत छूट के लिए उत्तरदायी नहीं हैं।11 (1) एस के साथ पढ़ें।2 (15) .'दान का पोषण करने के लिए लाभ' की ए अवधारणा का भी कोई लाभ नहीं है।वह यह है कि

क्योंकि 'दान को पोषण देने के लिए लाभ' की अवधारणा केवल 'धर्मार्थ उद्देश्य' के पहले तीन शीर्षों के तहत उत्पन्न हो सकती है जैसा कि एस में परिभाषित किया गया है।2 (15) अधिनियम, अर्थात, "गरीबों की राहत", "शिक्षा" और "चिकित्सा राहत", के अंतर्गत आते हैं, लेकिन जहां तक चौथा प्रमुख एकीकृत है, वे सामान्य नहीं हैं।, " सामान्य सार्वजनिक बी उपयोगिता के किसी अन्य उद्देश्य की उन्नति।यदि सामान्य सार्वजनिक उपयोगिता के किसी उद्देश्य की पूर्ति

लाभ के लिए किसी भी गतिविधि पर निर्भर, यह एक धर्मार्थ उद्देश्य नहीं रह जाता है।

लोक शिक्षा न्यास (ऊपर) और भारतीय वाणिज्य मंडल (ऊपर) में इस न्यायालय को "लाभ के लिए किसी भी गतिविधि को जारी रखने से संबंधित नहीं" शब्दों के कानूनी महत्व सी कैन्स से निपटने का अवसर मिला है, जिसे "एस में निहित धर्मार्थ उद्देश्य" की परिभाषा में जोड़ा गया है।2 (15) अधिनियम से।वित्त मंत्री के भाषण का उल्लेख करने के बाद यह पाया गया कि संशोधित प्रावधान कानून में बदलाव के लिए निर्देशित किया गया था क्योंकि इसे ट्रिब्यून के न्यासियों में प्रिवी काउंसिल द्वारा घोषित किया गया था

डी.

(ऊपर)।लोक शिक्षा ट्रस्ट के मामले ने सबसे पहले विधायी व्यवस्था को सामने लाया

इरादा।यह धर्मार्थ संस्थानों को दी गई कर छूट के दुरुपयोग का एक विशिष्ट मामला था जिससे कानून में बदलाव आया।यह एक ऐसे व्यक्ति द्वारा गठित न्यास का मामला था जिसने पूर्ण विवेक के साथ खुद को एकमात्र न्यासी नियुक्त किया और न्यास की पूरी गतिविधि वास्तव में एक व्यापक प्रसार समाचार पत्र चलाने की थी।यह दावा किया गया था कि एक समाचार पत्र को छापने और प्रकाशित करने और प्रसारित करने का मात्र कार्य शिक्षा के धर्मार्थ उद्देश्य को पूरा करने के समान था।कर छूट का दावा करने से, ट्रस्ट फंड पिछले कुछ वर्षों में लगभग रु।4,000 / - लगभग रु।2 एक लाख।विचाराधीन मूल्यांकन वर्ष के दौरान, न्यास की कुल प्राप्तियां रु।22 एक लाख।यह पूरी तरह से एक व्यावसायिक गतिविधि थी और छात्रवृत्ति प्रदान करने या शिक्षा के साधन प्रदान करने आदि के माध्यम से शिक्षा के उद्देश्य पर आय का कोई भी हिस्सा खर्च करने की झलक भी नहीं थी।

ई.

च

न्यायालय ने निर्धारित किया कि यदि धर्मार्थ न्यास का उद्देश्य है

सामान्य सार्वजनिक उपयोगिता के किसी भी उद्देश्य की प्रगति, लाभ के लिए किसी भी गतिविधि से उसके द्वारा अर्जित कोई भी आय, एस के तहत उदाहरण का हकदार नहीं होगा।11 अधिनियम के, "लाभ के लिए किसी भी गतिविधि को जारी रखने से संबंधित नहीं" शब्दों को ध्यान में रखते हुए, 'धर्मार्थ उद्देश्य' शब्द की परिभाषा में प्रस्तुत किया गया है जैसा कि एस में निहित है। 2 (15) .न्यायाधीश खन्ना ने न्यायालय की ओर से बोलते हुए कहा कि इसके परिणामस्वरूप एस में परिभाषा के अंत में "लाभ के लिए किसी भी गतिविधि को जारी रखना शामिल नहीं" शब्दों को जोड़ा गया है।

[1980] 2 एस सी आर।

2 (15) सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट

128

एक अधिनियम, भले ही न्यास का उद्देश्य "सामान्य सार्वजनिक उपयोगिता के किसी अन्य उद्देश्य की प्रगति" हो, इसे तब तक "धर्मार्थ उद्देश्य" नहीं माना जाएगा जब तक कि यह नहीं दिखाया जाता है कि ऐसे उद्देश्य की प्रगति में लाभ के लिए किसी भी गतिविधि को जारी रखना शामिल नहीं है, जिसमें कहा गया हैः

" इस दृष्टिकोण को स्वीकार करना भी मुश्किल है कि नए जोड़े गए शब्द "लाभ के लिए किसी भी गतिविधि को जारी रखना शामिल नहीं करते हैं" केवल योग्य हैं और पुष्टि करते हैं कि 1922 के अधिनियम में दी गई परिभाषा के तहत क्या स्थिति प्राप्त हुई थी।यदि विधायिका का इरादा था कि धर्मार्थ उद्देश्य की अवधारणा 1961 के अधिनियम के तहत वही होनी चाहिए, जैसा कि 1922 के अधिनियम में थी, तो परिभाषा में नए शब्दों को जोड़ने की कोई आवश्यकता नहीं थी।पहले की परिभाषा में कोई अस्पष्टता शामिल नहीं थी और ट्रिब्यून के मामलों में न्यायिक समिति के फैसले के बाद कानून की स्थिति स्पष्ट थी और इसमें कोई संदेह नहीं था।

एस.

और ऑल इंडिया स्पिनर्स एसोसिएशन।यदि इस तथ्य के बावजूद विधायिका ने चरित ब्ले उद्देश्य की परिभाषा में नए शब्द जोड़े, तो नए जोड़े गए शब्दों के प्रभाव को नजरअंदाज करना और परिभाषा का इस तरह से अर्थ लगाना निर्माण के सभी नियमों के विपरीत होगा जैसे कि नए जोड़े गए शब्द या तो नहीं थे या ओटियोज और रिडुन दांत होने का इरादा था।

डी.

ई.

जे. बेग, जिन्होंने एस के दायरे पर चर्चा करते हुए एक अलग लेकिन सहमत निर्णय दिया।2 (15) , यह देखा गयाः

" एक नियम के रूप में, यदि न्यास की शर्तें इसके संचालन की अनुमति देती हैं

' लाभ के लिए, वे, प्रथम दृष्टया, दान से बाहर आने वाले उद्देश्य का प्रमाण बन गए।वे वस्तु को इंगित करेंगे

च

लाभ अर्जित करना जब तक कि यह नहीं दिखाया जाता है कि न्यास की शर्तें न्यासी को व्यवसाय के लाभ का उपयोग दान के लिए भी करने के लिए मजबूर करती हैं।इसका मतलब है कि संशोधन द्वारा पेश किया गया परीक्षण हैःक्या न्यास का उद्देश्य किसी लाभदायक गतिविधि की आय को विशेष रूप से या मुख्य रूप से खर्च करने से रोकता है?

कानून में "दान" क्या है?यदि लाभ अनिवार्य रूप से न्यास की शर्तों के तहत एक धर्मार्थ उद्देश्य को पूरा करता है, तो केवल यह तथ्य कि न्यास की गतिविधियों से लाभ प्राप्त होता है, न्यास के धर्मार्थ चरित्र को नहीं बदलेगा।अब परीक्षा, अधिक स्पष्ट रूप से अतीत की तुलना में, उस उद्देश्य की वास्तविकता है जो पैसे को अनिवार्य रूप से या अनिवार्य रूप से 'दान' पर खर्च करने के लिए बनाए गए दायित्व द्वारा परीक्षित है।यदि वह दायित्व है,

जी.

एच.

आय छूट की हकदार हो जाती है।यह हमारी राय में सबसे विश्वसनीय परीक्षण है। आय आयोग-टैक्स वी. सूरट आर्ट सिल्क 129

´ (सेन, जे.)

जे. बेग की ये टिप्पणियां एक आज्ञाकारी उक्ति, ए की प्रकृति में थीं, क्योंकि तथ्यों पर उन्होंने उस मामले में विश्वास को वास्तव में लाभ के लिए गतिविधि में संलग्न माना था।हालाँकि, मैं बाद में टिप्पणियों पर चर्चा करूँगा क्योंकि वे कुछ कठिनाई पैदा करते हैं।

भारतीय वाणिज्य मंडल (ऊपर) में न्यायालय द्वारा इस मामले को विवाद के दायरे से बाहर रखा गया था।निर्धारिती एक चाम बी थाःवाणिज्य के लिए।इसका उद्देश्य "सामान्य सार्वजनिक उपयोगिता के किसी भी अन्य उद्देश्य की उन्नति" अभिव्यक्ति के भीतर आने वाले व्यापार और अन्य संबद्ध सेवा संचालन को बढ़ावा देना और उनकी रक्षा करना था।चैंबर ने (i) उसके द्वारा लगाए गए मध्यस्थता शुल्क, (ii) मूल प्रमाण पत्र जारी करने के लिए एकत्र किए गए शुल्क, और (iii) तौल और माप के प्रमाण पत्र जारी करके किए गए लाभ में हिस्सेदारी से आय प्राप्त की।सी सवाल यह था कि क्या चैंबर की गतिविधियाँ लाभ के लिए चलती हैं, इसके ज्ञापन और संघ के लेखों में इस तरह के लाभ के खिलाफ कोई प्रतिबंध नहीं है।

उन गतिविधियों से चैंबर की आय आय-कर के लिए उत्तरदायी थी या एस के तहत आय-कर से मुक्त थी।11 के साथ पढ़ें

एस.2 (15) .

डी.

कृष्ण अय्यर, जे., अपनी ओर से बोलते हुए, गुप्ता और फजल अली जे. जे.।, विधायी इतिहास को संदर्भित करते हुए, बुराई की मृत्यु हो गई, और वित्त मंत्री का भाषण, जिसने "सच" दिया।

उपचार का कारण ", ने कहाः

" पुरानी और नई परिभाषाओं के बीच स्पष्ट परिवर्तन अंतिम में पेश किया गया बहिष्करण प्रावधान है।

ई.

थोड़े शब्द।इतिहास जिसने इस परिभाषा को मजबूर किया

संशोधन वह दुरुपयोग था जिसके लिए व्यवसायियों का शोषण करके धर्मार्थ उद्देश्यों के लिए क़ानून के धर्मार्थ स्वभाव के अधीन किया गया था।आप एक दान का निर्माण करते हैं, कर प्रावधान से छूट अर्जित करते हैं और बड़े उद्योगों को चलाते हैं जो वस्तुतः दान के एक प्रतीत होने वाले लिबास के साथ लाभ का आनंद ले रहे हैं, एक ऐसी स्थिति जिसने संसद को उत्तेजित कर दिया और इसे छूट से वंचित करने वाले खंड को शामिल करने के लिए विवश कर दिया यदि संस्था धर्मार्थ उद्देश्यों को पूरा करने के लिए लाभ के लिए गतिविधियों को करती है और इस प्रकार कानून को धोखा देने का प्रयास करती है।सदन में वित्त मंत्री का भाषण प्रतिबंधात्मक स्थिति का कारण बताता है।(जोर दिया गया)

च

जी.

उन्होंने धर्मार्थ की परिभाषा में विधायी अस्पष्टता पर अफसोस जताया

एस में उद्देश्य।2 (15) लेकिन यह मत व्यक्त किया कि न्यायालय को एक ऐसे निर्माण को अपनाना चाहिए जो विधायी इरादे को आगे बढ़ाता है, जिसमें कहा गया हैः

" जिस बुराई को समाप्त करने की मांग की गई थी, वह इस प्रकार स्पष्ट है।द इंटर

एच.

प्रावधान का ढोंग स्वाभाविक रूप से उद्देश्य की प्रगति के अनुरूप होना चाहिए। सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट

[1980] 2 एस सी आर।

130

ए में 'धर्मार्थ उद्देश्य' की परिभाषा के अंत में "लाभ के लिए किसी भी गतिविधि को जारी रखना शामिल नहीं" शब्दों को जोड़ने का पूरा उद्देश्य है।2 (15) , जे. कृष्ण अय्यर के शब्दों में, "यह अभिव्यक्ति, धारा 2 (15) में परिभाषित, कला का एक शब्द है और सामान्य सार्वजनिक उपयोगिता की वस्तुओं को शामिल करता है।लेकिन, धर्मार्थ उद्देश्यों की आड़ में, छद्म संगठन की एक फसल

▼

बोलियाँ उठीं।मुखौटा परोपकारी था, लेकिन दिल कर-मुक्त लाभ के लिए भूख था।जब संसद ने धर्मार्थ केमल्सन की इस संदिग्ध वृद्धि को पाया, तो धारा 2 (15) में परिभाषा को "सामान्य सार्वजनिक उपयोगिता" के व्यापक उद्देश्य को अर्हता प्राप्त करके शरारत को दबाने के लिए बदल दिया गया था।

योगात्मक "लाभ के लिए किसी भी गतिविधि को जारी रखना शामिल नहीं है।हमारे सामने विवाद का मूल यह है कि क्या "कट बैक" खंड का यह जानबूझकर जोड़ा जाना त्रिमूर्ति के संबंध में कर छूट क्षेत्र से चैंबर को निष्कासित करता है।

ग

लाभ कमाने वाले उप-उद्यम जो व्यापारिक समुदाय के लिए सेवा या सुविधा के माध्यम से किए जाते हैं।

डी उनके अनुसार, तर्क की एक यथार्थवादी रेखा 'धर्मार्थ उद्देश्य' की व्याख्या इस तरह से करना है कि हम किसी भी शब्द ',' किसी भी अभिव्यक्ति को अनावश्यक नहीं मानते हैं 'या' अनिवार्य वाक्यांश के उच्चारण से चूक जाते हैं '।उन्होंने 's' में उपयोग किए जाने वाले 'उन्नति' से 'वस्तु' पर जोर देकर अस्पष्टता 'और' दोहरे अर्थ 'की संभावना के बारे में चेतावनी दी।2 (15) .जोर सार्वजनिक उपयोगिता के उद्देश्य और लाभ के लिए संबंधित गतिविधि को जारी रखने पर नहीं है।दूसरी ओर, यदि इन उद्देश्यों की प्रगति में, न्यास लाभ के लिए गतिविधियों को जारी रखने का सहारा लेता है, तो आवश्यक रूप से एस।2 (15) सुरक्षा प्रदान नहीं कर सकते।धर्मार्थ उद्देश्यों की उन्नति में लाभ कमाने की गतिविधियाँ शामिल नहीं होनी चाहिए।उनके अनुसार, यह नए कानून का अधिदेश है।इस निष्कर्ष पर पहुँचते हुए उन्होंने कहाः

" हमारे विचार में, कर से मुक्ति अर्जित करने के लिए आवश्यक तत्व परिभाषा से स्पष्ट हैं, यदि अंतर्दृष्टिपूर्ण रूप से, वास्तव में बुराई की परेशान करने वाली उपस्थिति के खिलाफ पढ़ा जाता है जिसे दबाया जाना है और लाभकारी उद्देश्य को पूरा किया जाना है।कानून की नीति धर्मार्थ उद्देश्य के लिए कर राहत देने की है, लेकिन धर्मार्थ उद्देश्य के दायरे से बाहर क्या है?संस्थान को स्वयं को उन गतिविधियों के संचालन तक सीमित रखना चाहिए जो लाभ के लिए नहीं हैं।यह पर्याप्त नहीं है अगर वस्तु सामान्य सार्वजनिक उपयोगिता में से एक हो।उस उद्देश्य की प्राप्ति में लाभ के लिए गतिविधियाँ शामिल नहीं होंगी।

4

जी.

एच अंत में, वह विधायी इरादे का सारांश देते हुए कहते हैं: "संक्षेप में, धारा 2 (15) लाभ के लिए गतिविधियों को चलाने से छूट से बाहर करती है, भले ही वे आय आयोग-कर V. सूरट आर्ट सिल्क 131 से जुड़े हों।

(सेन, जे.)

सामान्य सार्वजनिक उपयोगिता के उद्देश्य, क्योंकि कानून

क.

कर राहत के उद्देश्य से, लाभ के लिए गतिविधियों को आगे बढ़ाने में शामिल होकर ऐसे उद्देश्यों को आगे बढ़ाने का निर्देश देता है।

"शामिल" शब्द का शब्दकोश अर्थ है "घेरना, उलझाना, शामिल करना, शामिल करना, इंगित करना":लघु ऑक्सफोर्ड शब्दकोश, तीसरा संस्करण।, पी।1042."शामिल" शब्द इस प्रकार लाभ के लिए एक गतिविधि को जारी रखते हुए सामान्य सार्वजनिक उपयोगिता के उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए विचार करता है।यह निष्कर्ष दोनों निर्णयों के उचित विश्लेषण पर अपरिहार्य है।लोक शिक्षा न्यास में न्यास का उद्देश्य समाचार पत्रों के प्रकाशन के व्यवसाय को जारी रखे बिना हासिल नहीं किया जा सकता था। इंडियन चैंबर ऑफ कॉम मर्से में, मध्यस्थता से शुल्क या भार और माप के प्रमाण पत्र जारी करने के लिए शुल्क से आय की कल्पना व्यापार और वाणिज्य की सहायता के अपने उद्देश्यों के हिस्से के रूप में की गई होगी।यदि लाभ कमाने की गतिविधि इस प्रकार सामान्य सार्वजनिक उपयोगिता के धर्मार्थ उद्देश्य को प्राप्त करने का नियुक्त साधन है, तो लाभ कर योग्य होगा।पी.803 रिपोर्ट के अनुसार, न्यायमूर्ति कृष्ण अय्यर ने पीठ की ओर से बोलते हुए कहा कि "नई परिभाषा के अनुसार, कुल आय से बहिष्करण का लाभ छीन लिया जाता है, जबकि संस्था एक धर्मार्थ उद्देश्य को पूरा करती है।लाभ के लिए गतिविधियों में खुद को संलग्न किया।एस का एक पठन।2 (15) और एस।11 एक साथ यह दर्शाता है कि जिसे अस्वीकार किया जाता है वह एक द्वारा लाभ के लिए एक गतिविधि है

च

ग

डी.

बी

दान की स्थापना अपने उद्देश्यों को पूरा करने के क्रम में सामान्य सार्वजनिक उपयोगिता के उद्देश्य की उन्नति के लिए की गई है।

ये वे सिद्धांत हैं जिन पर एस के तहत सामान्य सार्वजनिक उपयोगिता के उद्देश्य से ट्रस्ट के तहत आयोजित संपत्ति से प्राप्त आय की छूट है।11 (1) एस के साथ पढ़ें।2 (15) यह दावा किया जा सकता है कि उनके साथ यह स्पष्ट रूप से असंगत है कि यदि प्रमुख, या प्राथमिक उद्देश्य 'दान' था, तो सामान्य सार्वजनिक उपयोगिता के ऐसे उद्देश्य के लिए व्यापार या वाणिज्यिक गतिविधि में संलग्न होकर अपनी आय बढ़ाने की अनुमति थी।यह स्पष्ट रूप से अधिनियम की पूरी योजना के खिलाफ होगा।मुझे शायद ही यह कहने की आवश्यकता है कि, यदि 'धर्मार्थ उद्देश्य' की परिवर्तित परिभाषा में

च

एस।2 (15) जी. आर. निर्माण के प्रसिद्ध सिद्धांतों के अनुसार, इस तरह के किसी भी बिंदु पर एक पल के लिए भी बहस नहीं की जा सकती।इसमें कोई संदेह नहीं हो सकता है कि संसद छद्म दान में व्यावसायिक लाभ का उपयोग करके कर से बचने को रोकने के लिए कानून में बदलाव लाना चाहती थी।निश्चित रूप से, यह नहीं कहा जा सकता है कि संसद का मतलब यह नहीं था कि वह क्या हासिल करना चाहती थी, प्रतिबंधात्मक शब्दों को पेश करके जिसमें "लाभ के लिए किसी भी गतिविधि को जारी रखना शामिल नहीं है"।इसका स्पष्ट रूप से मतलब था कि एच कर मुक्त मुनाफे को व्यापार में वापस जुताई जाने से रोकता है। लेकिन यह कहा जाता है कि कानून अलग है; और जिस बिंदु पर मामला सर्वोच्च न्यायालय रिपोर्ट करता है

लोक शिक्षा ट्रस्ट में अपने फैसले में जे. बेग द्वारा जो स्पष्ट रूप से कहा गया था, उससे अधिक स्पष्ट रूप से एक मोड़ नहीं लिया जा सकता है।

जे. बेग की टिप्पणियों ने एक विवाद को जन्म दिया है कि

यह शर्त कि उद्देश्य में लाभ के लिए कोई गतिविधि करना शामिल नहीं होना चाहिए, संतुष्ट होगी यदि लाभ अर्जित करना वास्तविक बी उद्देश्य नहीं है और यदि न्यास की शर्तें लाभ के लिए व्यावसायिक गतिविधि को जारी रखने की अनुमति देती हैं तो यह प्रथम दृष्टया लाभ अर्जित करने के उद्देश्य को इंगित करेगी जब तक कि वे शर्तें न्यासियों को दान के लिए व्यावसायिक लाभ का उपयोग करने के लिए मजबूर करके वास्तविक उद्देश्य को धर्मार्थ होने का संकेत नहीं देती हैं।यह खन्ना और गुप्ता जे. जे. के विपरीत है। बताया गया है।जबकि उन्होंने कहा कि यदि न्यास की शर्तें लाभ कमाने पर प्रतिबंध नहीं लगाती हैं, तो न्यायालय यह मान लेना उचित होगा।इसके विपरीत कुछ संकेत के अभाव में, कि न्यास के उद्देश्य में लाभ के लिए एक गतिविधि को जारी रखना शामिल है।पुनः उद्धृत करने के लिए, जे. बेग ने कहाः "यदि लाभ अनिवार्य रूप से न्यास की शर्तों के तहत एक धर्मार्थ उद्देश्य को पूरा करता है, तो केवल यह तथ्य कि न्यास की गतिविधियों से लाभ प्राप्त होता है, न्यास के धर्मार्थ चरित्र को नहीं बदलेगा।जे. बेग की टिप्पणियों के डी के आधार पर यह दावा किया जाता है कि परीक्षण अब, पहले की तुलना में अधिक स्पष्ट रूप से, धन को विशेष रूप से या अनिवार्य रूप से 'दान' पर खर्च करने के लिए बनाए गए दायित्व द्वारा परीक्षण किए गए उद्देश्य की वास्तविकता है।यह कहा गया है कि "नहीं" शब्दों को जोड़ने के बावजूद

लाभ के लिए किसी भी गतिविधि को जारी रखना।2 (15) कला के अनुसार, (ए) न्यास के तहत आयोजित किए जा रहे व्यवसाय के बीच अंतर है।

ई.

जहाँ लाभ किसी दान का पोषण करते हैं, उस स्थिति में ऐसे न्यास की आय को पूरी तरह से छूट दी जाएगी, और (ख) उस उद्देश्य को पूरा करने के लिए व्यवसाय करना जिसे धर्मार्थ उद्देश्य माना जाता है, उस स्थिति में आय कर योग्य हो सकती है।ऐसा कहा जाता है कि भेद ठीक है, लेकिन इसे ध्यान में रखा जाना चाहिए।तथाकथित भेद, मेरी राय में, बिना किसी आधार के है।यह विधान के उद्देश्य और उद्देश्य के विपरीत है।

मौजूदा प्रावधानों के तहत, यदि किसी न्यास का उद्देश्य या उद्देश्य गरीबों की राहत, शिक्षा या चिकित्सा राहत है, तो न्यास लाभ के लिए कोई गतिविधि कर सकता है बशर्ते वह न्यास के जी प्राथमिक उद्देश्य को पूरा करने के क्रम में हो।तथापि, यदि न्यास का उद्देश्य सामान्य सार्वजनिक उपयोगिता के किसी उद्देश्य को आगे बढ़ाना है और यह लाभ के लिए कोई गतिविधि करता है, तो इसे धाराओं में परिभाषित धर्मार्थ उद्देश्य के दायरे से बाहर रखा जाता है।2 (15) .एस में निहित प्रावधान से अंतर स्पष्ट रूप से सामने आया है।13 (1) (ख) कर कानून (संशोधन) अधिनियम द्वारा अंतःस्थापित।1975 , जो यह प्रावधान करता है कि गरीबों की राहत के लिए एक धर्मार्थ न्यास या एच संस्थान, जो कोई व्यवसाय करता है, शिक्षा या चिकित्सा राहत के मामले में, ऐसे व्यवसाय से प्राप्त कोई भी आय, जब तक कि व्यवसाय किसी आय आयोग के वास्तविक संचालन के दौरान नहीं किया जाता है-कर V. निश्चित कला सिल्क 133

(सेन, जे.)

न्यास या संस्था के प्राथमिक उद्देश्य को पिछले वर्ष की कुल आय ए से बाहर नहीं रखा जाएगा।

ऐसा प्रतीत होता है कि लोक शिक्षा ट्रस्ट (उपरोक्त) में जे. बेग का ध्यान इस तथ्य की ओर नहीं खींचा गया था कि वे इसके अंतर्गत आने वाले मामले से निपट रहे थे।

अल।

दान का चौथा प्रमुख "सामान्य के किसी अन्य उद्देश्य की उन्नति"

सार्वजनिक उपयोगिता ", जिसका दायरा योग्यता द्वारा प्रतिबंधित था

खंड "लाभ के लिए किसी भी गतिविधि को जारी रखना शामिल नहीं है", और इसलिए, उसके लिए यह देखने का कोई अवसर नहीं था, "यदि लाभ अनिवार्य रूप से न्यास की शर्तों के तहत एक धर्मार्थ उद्देश्य को पूरा करना चाहिए, तो केवल यह तथ्य कि न्यास की गतिविधियों से लाभ प्राप्त होता है, न्यास के धर्मार्थ चरित्र को नहीं बदलेगा"।ये विचार केवल दान के पहले तीन प्रमुखों के तहत उत्पन्न हो सकते हैं।, ' गरीबों को राहत ',' शिक्षा 'और' चिकित्सा राहत '।

सी. आई. टी. केरल बनामधर्मोदयम कं., (1) धर्मपोषणम कं.

वी.सी. आई. टी., केरल (3) और धर्मदीप्ती बनाम।सी. आई. टी., केरल (3) न्यायालय के पास 'धर्मार्थ उद्देश्य' की परिभाषा पर विचार करने का अवसर था।2 (15) .धर्मोदयम में, केरल उच्च न्यायालय का निष्कर्ष डी था कि कुरी व्यवसाय स्वयं धार्मिक या धर्मार्थ के लिए ट्रस्ट के तहत आयोजित किया गया था।

सक्षम उद्देश्य, और इसलिए, न्यायालय ने कहाः

" यह इस निष्कर्ष का एक आवश्यक निहितार्थ है कि प्रतिवादी द्वारा सामान्य सार्वजनिक उपयोगिता के किसी भी उद्देश्य को आगे बढ़ाने के लिए व्यस्त गतिविधि नहीं की गई थी।इसलिए यह पूछताछ करने की आवश्यकता नहीं पड़ी कि क्या

कुरी व्यवसाय में किसी भी गतिविधि को जारी रखना शामिल है

लाभ, निर्धारिती द्वारा कुरियों से प्राप्त आय के रूप में एस के तहत कर से मुक्त था।11 (1) (ए)।"

धर्मपोषणम में, यह अभिनिर्धारित किया गया था कि कुरी और धन उधार देने के व्यवसाय से होने वाली आय सामान्य सार्वजनिक उपयोगिता के किसी भी अन्य उद्देश्य के अवशिष्ट सामान्य एफ शीर्ष के अंतर्गत आती है और लाभ के लिए किए जाने को एस के तहत धर्मार्थ उद्देश्य के रूप में नहीं माना जा सकता है।2 (15) .धर्मदिप्ती में, न्यायालय एक विपरीत निष्कर्ष पर पहुंचा क्योंकि कुरी व्यवसाय से आय धर्मार्थ उद्देश्यों के लिए न्यास के तहत आयोजित व्यवसाय से प्राप्त होती थी।इन सभी मामलों में एक या दूसरी शर्त पूरी नहीं की गई थी, यानी या तो व्यवसाय ट्रस्ट के तहत नहीं किया गया था या सामान्य सार्वजनिक उपयोगिता का उद्देश्य होने के नाते इसमें लगा हुआ था।

लाभ के लिए एक गतिविधि।

सम्मान के साथ, मैं यह कहने का साहस करता हूं कि यदि कोई सामान्य उद्देश्य है

सार्वजनिक उपयोगिता लाभ के लिए एक गतिविधि में लगी हुई है, यह बंद हो जाती है

एच.

(1) [1977] 107 आई. टी. आर 527

(2) [1978] 3 एस. सी. सी. 414

(3) [1978] 3 एस. सी. सी. 499

[1980] 2 एस सी आर।

सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट

134

एक धर्मार्थ उद्देश्य होने के लिए और इसलिए, आय को एस के तहत छूट नहीं है।11 (i) (a)।दान के पहले तीन प्रमुखों में से किसी के अंतर्गत आने वाले न्यास के मामले में, अर्थात।, ' गरीबों को राहत ',' शिक्षा 'और' चिकित्सा राहत 'यह लाभ के लिए किसी भी गतिविधि में संलग्न हो सकता है, और लाभ कर योग्य नहीं होगा यदि उनका उपयोग न्यास के प्राथमिक उद्देश्य के लिए किया जाता है।दूसरे शब्दों में, उनके द्वारा किया जाने वाला व्यवसाय बी प्राथमिक उद्देश्य के लिए आनुषंगिक या सहायक है।, गरीबों को राहत, शिक्षा और चिकित्सा राहत।उदाहरण के लिए, ट्रस्ट पर भवन रखने वाला एक धर्मार्थ अस्पताल एक नर्सिंग होम चला सकता है।न्यास द्वारा स्वामित्व और संचालित नर्सिंग होम का लाभ होगा

एस के तहत छूट।11 (4) , क्योंकि व्यवसाय ट्रस्ट द्वारा प्राथमिक उद्देश्य के वास्तविक निष्पादन के क्रम में किया जाता है।

ग

ट्रस्ट से।इसलिए, 'दान का पोषण करने के लिए लाभ' की अवधारणा केवल दान के पहले तीन प्रमुखों पर लागू होती है, न कि दान के पहले तीन प्रमुखों पर।

चौथा।यह अतार्किक होगा और वास्तव में, उन संस्थानों पर समान विचार लागू करना मुश्किल होगा जो सामान्य सार्वजनिक उपयोगिता के किसी भी उद्देश्य के चारी टेबल उद्देश्यों के लिए स्थापित किए गए हैं।सामान्य सार्वजनिक उपयोगिता के उद्देश्य से जुड़ी कोई भी लाभ डी बनाने वाली गतिविधि कर योग्य होगी।इसलिए न्यास के प्रमुख या प्राथमिक उद्देश्य के सिद्धांत को दान के चौथे प्रमुख के रूप में प्रस्तुत नहीं किया जा सकता है।, ' सामान्य सार्वजनिक उपयोगिता के किसी अन्य उद्देश्य की उन्नति, ताकि किसी व्यावसायिक गतिविधि को केवल सहायक या मुख्य उद्देश्य के लिए सहायक बनाया जा सके।

ई.

वास्तव में, यदि कोई अन्य दृष्टिकोण प्रबल होता है, तो यह राजस्व के लिए हानिकारक परिणाम पैदा करेगा।एस में 'धर्मार्थ उद्देश्य' की सख्त परिभाषा में 'लाभ के लिए किसी भी गतिविधि को जारी रखना शामिल नहीं' प्रतिबंधात्मक शब्दों को डालने का पूरा उद्देश्य।2 (15) पसंदीदा गतिविधि की सीमा को पहले की तुलना में कम लचीला बनाने के लिए, यानी बड़े व्यापारिक घरानों को दान के नाम पर अपनी आय के एक बड़े हिस्से की हेराफेरी से रोकने के लिए, पराजित किया जाएगा।व्यावसायिक लाभ के डायवर्जन की अनुमति देने का खतरा, जिसे संसद द्वारा रोकने की कोशिश की गई थी, लेकिन स्पष्ट है।मेरी राय में, 'धर्मार्थ उद्देश्य' की परिभाषा में प्रतिबंधात्मक शब्द 'लाभ के लिए किसी भी गतिविधि को जारी रखना शामिल नहीं' हैं।2 (15) आय-कर अधिनियम, 1961 को उनका उचित महत्व दिया जाना चाहिए।अन्यथा, इसका प्रभाव चौथे अनिश्चित वर्ग को छूट के लाभों को स्वीकार करने पर पड़ेगा।, लाभ के लिए गतिविधि में लगे सामान्य सार्वजनिक उपयोगिता के उद्देश्य एस के सादे शब्दों के अनुरूप हैं।2 (15) .

****

आधुनिक कानून री-कास्टिंग की दिशा में पैटर्न में बदल गया है।

एच.

1

बहुत व्यापक भाषा के साथ कर और प्रावधान, जबकि एक ही समय में कानून के कुछ सिद्धांतों के साथ बहुत अधिक विस्तार से काम करते हैं।

न्यायाधीश, आय आयोग-टैक्स वी. सूरत आर्ट सिल्क 135

(सेन, जे.)

आंशिक रूप से, कानून के सामान्य रुझानों का जवाब देने के साथ-साथ आधुनिक कर कानून के फार्म ए पर भी प्रतिक्रिया देने के लिए तैयार रहना चाहिए।

लाए गए परिवर्तन के संदर्भ और उद्देश्यों का लेखा।(1) अधिकांश न्यायाधीशों ने कर कानून से निपटने में शामिल होने से इनकार कर दिया है।

:

मेगारी जे. ने क़ानून के व्यापक शब्दों में कटौती करने के लिए "सट्टा न्यायिक कानून का एक दौर" कहाःअंतर्देशीय राजस्व मिशनर बनाम।ब्राउन।(2) हैरिसन वी।नायरन विलियमसन (3) गोल्ड बी

"

आई. एन. जे. ने कहाः

" जिस तरह से मुझे इस शुद्ध प्रश्न तक पहुंचना है

मौखिक व्याख्या, मुझे लगता है, संसद द्वारा उपयोग किए जाने वाले शब्दों को अंग्रेजी भाषा में उनका सामान्य अर्थ देना है।

और अगर, सामान्य अर्थ के साथ लगातार, वहाँ एक है

एस.

दो वैकल्पिक व्याख्याओं के बीच चयन, फिर

उस निर्माण को प्राथमिकता दें जो उचित और उचित बनाए रखे।

विरूपित किए बिना कराधान की सुसंगत योजना

भाषा "।

न्यायाधीश के निष्कर्ष और उनके तर्क दोनों को अपील न्यायालय में स्पष्ट रूप से अपनाया गया था, जहां न्यायालय का प्रयोग इस तथ्य से किया गया था कि प्रश्न में धारा की करदाता की व्याख्या से कर चोरी का सबसे स्पष्ट तरीका सामने आ सकता है।इस दृष्टिकोण को जे. मेगारी ने निम्नलिखित टिप्पणी में प्रतिबिंबित किया थाःयह कहने के लिए उच्च अधिकार है कि यह शायद ही करदाता के मुंह में है जो जली हुई उंगलियों की शिकायत करने के लिए आग से खेलता है 'रीव्स बनाम।इवांस बॉयस और नॉर्थकोट सिंडिकेट (4) एफ. एस. प्रतिभूति बनाम में लॉर्ड जस्टिस सेलर्स।आई. आर. सी. (5) ने यह भी पाया कि "समुदाय की सेवा के बिना और कराधान के बिना संवर्धन को स्वीकार करना मुश्किल है"।लॉर्ड रीड, ग्रीबर्ग बनाम।आई. आर. सी. () ने कर कानूनों के प्रति प्रचलित दृष्टिकोण के बारे में एक ही चिंता व्यक्त करते हुए कहाः

डी.

>

ई.

च

" संसद इस तरह की कर चोरी को रोकने के लिए बहुत उचित रूप से दृढ़ है, और यदि अदालतों को सामान्य वाक्यांशों को बहुत व्यापक अर्थ देना असंभव लगता है तो संसद के लिए केवल एक ही विकल्प हो सकता है जैसा कि कुछ अन्य देशों ने किया है और अधिक व्यापक चरित्र का कानून पेश किया है।

जी.

(1) डेविड डब्ल्यू. विलियम्स; "कराधान क़ानून क़ानूनों पर कर लगा रहे हैंःद इंटर प्रेटैशन ऑफ रेवेन्यू लेजिस्लेशन ", मॉडर्न लॉ रिव्यूःखण्ड.41 ,

पीपी।464-72 .

(2) [1971] 2 सभी ई. आर. 33 पी.46

(3) [1976] 3 सभी ई. आर. 367।

(4) [1971] 48 टी. सी. 495 पी.513 .

}

(5) [1963] 41 टी. सी. 666 पी.680 .

(6) [1972] ए. सी. 109

[1980] 2 एस सी आर।

सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट

136

4

प्रचलित कानून की स्थिति को देखना वैध है जिसके कारण

क.

विधान ताकि यह देखा जा सके कि वह कौन सी शरारत थी जिस पर अधिनियम निर्देशित किया गया था।इस न्यायालय ने कई मौकों पर संसदीय समितियों की रिपोर्टों और ऐसे अन्य तथ्यों जैसे मामलों का न्यायिक संज्ञान लिया है, जिन्हें विधानमंडल के विचार के भीतर माना जाना चाहिए जब विचाराधीन अधिनियमों को लागू किया गया था।

बी पास हो गया।सी. आई. टी., एम. पी. और भोपाल बनामसोड्रे देवी (1) न्यायालय के समक्ष प्रश्न एस के निर्माण के बारे में था। 16 (3) आय-कर अधिनियम, 1922।यह पता लगाने के बाद कि उपरोक्त उप-खंड में आने वाला 'व्यक्ति' शब्द अस्पष्ट था, न्यायमूर्ति भगवती ने कहाःइसलिए इस अस्पष्टता को दूर करने के लिए हमें आवश्यक रूप से सी प्रावधानों के अधिनियमन से पहले कानून की स्थिति का सहारा लेना होगा, शरारत और दोष जिसके लिए कानून ने किया था।

उपबंध नहीं करता; वह उपाय जिसे विधायिका ने दोष को ठीक करने के लिए हल किया और नियुक्त किया; और, उपचार का वास्तविक कारण।

आय की छूट से संबंधित तत्कालीन प्रचलित कानून

धर्मार्थ न्यासों में कई खामियां थीं।विधि आयोग ने अपनी बारहवीं रिपोर्ट में कर परिहार को समाप्त करने की आवश्यकता महसूस की

एस में 'धर्मार्थ उद्देश्य' की परिभाषा में निर्मित उपकरण।4 (3) 1922 के अधिनियम के प्रभाव के लिए एक स्पष्टीकरण को सम्मिलित करकेः

" व्याख्याःइस उप-धारा में 'संपत्ति' नहीं है

टी

'व्यवसाय' को शामिल करें।

ई.

प्रत्यक्ष कर प्रशासन जांच समिति ने अपनी रिपोर्ट (1958-59) में निम्नलिखित टिप्पणी कीः

" छूट से संबंधित मौजूदा प्रावधान

आय-कर अधिनियम की धारा 4 (3) (i) के तहत धर्मार्थ न्यासों की आय में कुछ खामियां हैं जो सहायता करती हैं

च

छद्म धर्मार्थ न्यासों का गठन "।

" एक और व्यापक खामी की व्याख्या में निहित है

'सम्पत्ति' शब्द, जिसके तहत एक न्यास ऐसा व्यवसाय कर सकता था जिसका न्यास के प्राथमिक उद्देश्य से कोई लेना-देना नहीं था और फिर भी न्यास के संबंध में छूट

जी.

इस व्यवसाय से आय।अदालतों ने माना है कि व्यवसाय संपत्ति भी हो सकता है, जो ट्रस्ट के तहत आयोजित किया जाता है। आय-कर अधिनियम की धारा 4 (3) (i) में कुछ संशोधन भारतीय आय-कर (संशोधन) अधिनियम, 1953 के माध्यम से किए गए थे ताकि यह सुनिश्चित करने का प्रयास किया जा सके कि 'धर्मार्थ' व्यवसाय की आय को केवल तभी छूट मिले जब व्यवसाय की ओर से किया गया था

एच.

1

एक धार्मिक और धर्मार्थ संस्थान और (1) [1958] एस. सी. आर. 1 में चलाया गया था।

आय आयोग-टैक्स वी. सूरट आर्ट सिल्क 137

(सेन, जे.)

क.

संस्थान के प्राथमिक उद्देश्य या व्यवसाय के कार्य को लागू करने का क्रम मुख्य रूप से संस्थान के लाभार्थियों द्वारा किया जाता था।यह भारतीय आयकर अधिनियम की धारा 4 (3) (i) में परंतुक (बी) जोड़कर किया गया था।वह परंतुक कहता है कि प्रो से प्राप्त आय

1

धार्मिक या धर्मार्थ के लिए न्यास के तहत रखी गई संपत्ति को छूट नहीं दी जाएगी और इसके परिणामस्वरूप कुल आय में शामिल किया जाएगा।

:

" हालाँकि, अदालतों का विचार है कि छूट प्राप्त करने के लिए उपरोक्त दो शर्तें (परंतुक में) केवल वहाँ लागू होती हैं जहाँ किसी धार्मिक व्यक्ति की ओर से व्यवसाय किया जाता है।

ग

या धर्मार्थ संस्था और न कि जहां व्यवसाय स्वयं न्यास पर आयोजित किया जाता है, और कि इस तरह के व्यवसाय की आय अभी भी धारा 4 (3) (i) के उप-अस्थायी भाग के तहत छूट का हकदार होगी, इसके बावजूद कि

परंतुक में निर्धारित शर्तें "।

डी.

प्रवर समिति की सिफारिश को स्वीकार करते हुए, संसद ने 'धर्मार्थ उद्देश्य' अभिव्यक्ति की परिभाषा में "लाभ के लिए किसी भी गतिविधि को जारी रखना शामिल नहीं" शब्द जोड़े।

एस.2 (15) अधिनियम से।

3

लोक लेखा समिति की रिपोर्ट में समस्या का व्यापक अध्ययन किया गया और धर्मार्थ न्यासों के गठन के माध्यम से कर से बचने के परिमाण का संकेत दिया गया और विचार किया गया कि क्या इन शब्दों में 'लाभ के लिए किसी भी गतिविधि को जारी रखना शामिल नहीं है'।

इसे हटा दिया जाना चाहिए, लेकिन इसे हटाने के खिलाफ अनुशंसित किया जाना चाहिए।

एच.

प्रत्यक्ष कर जांच समिति (अन्यथा वांचू समिति के रूप में जानी जाती है) ने इस सवाल पर विचार किया कि क्या लाभ के लिए गतिविधियों में शामिल होने के मामले में न्यासों के प्रतिबंध को हटा दिया जाना चाहिए और निम्नलिखित सिफारिशें कीं:

" इसी पृष्ठभूमि में हम इस सवाल पर खुद को संबोधित करते हैं कि क्या कर छूट प्राप्त करने वाले धार्मिक या धर्मार्थ न्यासों को लाभ के लिए कोई भी गतिविधि करने की अनुमति दी जानी चाहिए।निसन्देह, ऐसे न्यासों द्वारा लाभ के लिए गतिविधि में संलग्नता कर से बचने के लिए हेरफेर की गुंजाइश प्रदान करती है।हालाँकि, हम मानते हैं कि गरीबों की राहत, शिक्षा या चिकित्सा राहत के उद्देश्य से बनाए गए न्यास के प्राथमिक उद्देश्य की खोज में उत्पन्न होने वाली लाभ के लिए किसी गतिविधि पर प्रतिबंध लगाना वांछनीय नहीं होगा।उदाहरण के लिए, 10-868 SCI/79

जी.

[1980] 2 एस सी आर।

एच सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट

138

व्यावसायिक प्रशिक्षण के लिए एक न्यास के मामले में, यह होगा

क.

न्यास के लिए अपने व्यवसाय को जारी रखने के लिए आवश्यक है।हम, सबसे पहले, यह अनुशंसा करते हैं कि कानून में उपयुक्त संशोधन किया जाना चाहिए ताकि यह प्रावधान किया जा सके कि जहां गरीबों के धर्म, शिक्षा या चिकित्सा राहत के लिए किसी न्यास को लाभ के लिए किसी भी गतिविधि से आय प्राप्त होती है, उसकी आय को आयकर से तभी छूट दी जाएगी जब लाभ के लिए उक्त गतिविधि संस्था के प्राथमिक उद्देश्य के वास्तविक निष्पादन के दौरान की जाती है।हम यह बहुत स्पष्ट करना चाहते हैं कि यदि न्यास को ऐसे व्यवसाय से होने वाली आय के संबंध में कर छूट का लाभ उठाना है, तो न्यास को इस शर्त को पूरा करना चाहिए।जहाँ तक जीन की किसी अन्य वस्तु के लिए विश्वास है

3

ग

सार्वजनिक उपयोगिता का संबंध है, लाभ के लिए किसी भी गतिविधि की खोज जारी रखनी चाहिए जिससे वे कर छूट के लिए अयोग्य हो जाएं।

धर्मार्थ न्यासों पर अध्याय 2 (अंतरिम रिपोर्ट, दिसंबर 1977) में प्रत्यक्ष कर कानून समिति ने इस प्रश्न पर विचार किया।

क्या परिभाषा में उपरोक्त अभिव्यक्ति को हटा दिया जाना चाहिए और उपरोक्त अभिव्यक्ति को हटाने की सिफारिश की जानी चाहिए जिसमें कहा गया हैः

' ;

" जहाँ तक चौथी श्रेणी के उद्देश्यों वाले न्यासों का संबंध है, लाभ के लिए गतिविधियों पर पूर्ण प्रतिबंध के परिणामस्वरूप हुई कठिनाइयों पर हमें बड़ी संख्या में अभ्यावेदन प्राप्त हुए हैं।यह बताया गया है कि लाभ के लिए गतिविधियाँ अनिवार्य रूप से धन जुटाने की प्रकृति हैं, जिनके बिना दान का अस्तित्व नहीं हो सकता है।हम इन अभ्यावेदनों में काफी सार पाते हैं।हम जानते हैं कि कुछ न्यासों ने उन प्रावधानों का दुरुपयोग किया है जो उन्हें व्यवसाय करने में सक्षम बनाते हैं और कभी-कभी, व्यवसाय का विस्तार या समेकन अपने आप में, दान को आगे बढ़ाने के रूप में उचित माना जाता है।इस तरह के दुरुपयोग विशेष रूप से तब उत्पन्न होते हैं जब कोई व्यवसाय केवल एक धर्मार्थ न्यास द्वारा दान के उद्देश्यों से असंबद्ध संपत्ति के रूप में आयोजित किया जाता है।हमारी राय में, उपाय धर्मार्थ उद्देश्यों के लिए न्यास निधि के आवेदन से संबंधित प्रावधानों के उचित प्रवर्तन की दिशा में निहित है न कि लाभ के लिए सभी गतिविधियों पर पूरी तरह से प्रतिबंध लगाने की।इसके अलावा, यह देखा गया है कि धर्मार्थ न्यासों के उद्देश्य आम तौर पर सभी चार श्रेणियों के अंतर्गत आते हैं।अक्सर, एक न्यास चौथी श्रेणी के तहत एक ही वस्तु के कारण कठिनाइयों में आ जाता है, भले ही सभी महत्वपूर्ण वस्तुएं पहली तीन श्रेणियों के अंतर्गत आती हैं।इसलिए हम,

Â

च

जी.

एच 7

आई।

(सेन, जे.)

शब्दों को हटाने की सिफारिश करें "जिसमें ले जाना शामिल नहीं है"

}

"धारा 2 (15) में होने वाली" लाभ के लिए किसी गतिविधि पर।लेकिन सरकार ने इस सिफारिश को स्वीकार नहीं किया है।मैं यह समझने में विफल हूं कि जब सरकार द्वारा उपयुक्त कानून द्वारा सिफारिश पर कार्रवाई नहीं की गई है, तो यह न्यायालय न्यायिक निर्माण की प्रक्रिया द्वारा समान परिणाम कैसे प्राप्त कर सकता है।बी ने बार में आशंका व्यक्त की कि इस कठोर उपाय द्वारा अधिनियमित किया गया।संसद ने कई वास्तविक दानों को कमजोर और समाप्त कर दिया है, इस बात को ध्यान में नहीं रखा है कि उसे तब कदम उठाना पड़ा जब धर्मार्थ और धार्मिक न्यासों को उपलब्ध कर छूट का कर से बचने के अयोग्य उद्देश्यों के लिए दुरुपयोग किया जाने लगा।दान के रूप में कर लगाने से एलर्जी को रोकने के लिए कानून को इस तरह से पुनर्गठित किया गया है। इस बात पर कोई विवाद नहीं हो सकता कि कई व्यापारिक घरानों ने कर से छूट से संबंधित प्रावधान का दुरुपयोग करते हुए व्यवसाय के विस्तार और समेकन के साधन के रूप में उपयुक्त गतिविधियों को चलाया है, जिसे दान को आगे बढ़ाने के रूप में उचित ठहराया गया था, यानी दान एक बड़ा व्यवसाय बन गया।अब, कानून को दान के नाम पर कर छूट के इस दुरुपयोग को रोकने के लिए बनाया गया है।शब्दों को तनावपूर्ण और अप्राकृतिक अर्थ देना किसी अदालत का काम नहीं है।ऐसा हो सकता है कि सामान्य सार्वजनिक उपयोगिता की वस्तुओं को बढ़ावा देने वाले कई वास्तविक धर्मार्थ न्यास गंभीर रूप से प्रभावित होते हैं और दोनों चरम सीमाओं के बीच फंस जाते हैं।लेकिन यह कानून में बदलाव की मांग करता है।मैं हूँ।

ग

डी.

ई.

केवल कर अधिनियमों के संबंध में बार-बार कही गई बातों को दोहराते हुए।केप ब्रांडी सिंडिकेट बनाम।अंतर्देशीय राजस्व मिशनरी (1) इस सिद्धांत को जे. रवलत ने अपनी संक्षिप्त भाषा में तैयार किया और कहाः

" एक कर अधिनियम में केवल यह देखना होता है कि क्या है

च

स्पष्ट रूप से कहा।किसी भी इरादे के लिए कोई जगह नहीं है।कर के बारे में कोई इक्विटी नहीं है।कर के बारे में कोई अनुमान नहीं है।कुछ भी पढ़ने के लिए नहीं है, कुछ भी निहित नहीं है।कोई भी व्यक्ति केवल उपयोग की गई भाषा को निष्पक्ष रूप से देख सकता है।

अंतर्देशीय राजस्व आयुक्त बनाम।रास और कुल्टर (1) लॉर्ड

जी.

थैंकट्रो ने 'कर लगाने वाले प्रावधान के कठोर परिणामों' का वर्णन करते हुए कहाः

" .....यदि प्रावधान का अर्थ यथोचित रूप से स्पष्ट है, तो अदालतों के पास इस तरह की कठोरता को कम करने का कोई अधिकार क्षेत्र नहीं है

नेस "।

एच.

(1) [1921] 1 के. बी. 64 पी.71 .

(2) [1945] 1 सभी ई. आर. 616 पी.625 .

[1980] 2 एससीआर।

न्यायिक दृष्टिकोण को कानूनी प्रक्रियाओं से अलग करके नहीं बनाया जा सकता है, विशेष रूप से कर से बचने के दृष्टिकोण के संबंध में।

तदनुसार, मैं राजस्व के पक्ष में और निर्धारिती के खिलाफ संदर्भों का जवाब दूंगा।आयुक्त अपने खर्चों का हकदार होगा।

पीबीआर.